Financial Support :- Sri Narendra Kumar Jain
Vienna, U.S.A
Proccess & Digitized by:- ZEN INFORMATICS
Devashram, Mahadeva Road,
Arrah, Bihar (India)
Mob:- +91 9431419369
Email: zeninfo13@gmail.com

Only for study & research not for commercial use

G-24

Manuscripts

Dharm Pariksha

All rights including Copyright © Reserved

Email ID: dkjori13@gmail.com

Duplicate

ग धर्म परीक्षा (४८६)

कर्ता - मनोहर दास

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain
Oriental Library, Ar

भाषा - हिन्दी

प० सं० १७४

धर्म -



(ज) 28

All Rights Reserved © Shri Jain Siddhanta Bhavan, Arrah



ध०प० १

ॐनमःसिद्धेभ्यः॥श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथायनमः॥अथधर्मपरिक्षालिष्यते॥सोरठा॥प्रण
मुअरिहंतदेव॥गुरुनिरग्रंथदयाधर्म॥भवदधितारणएव॥अवरसकलमिथ्यातमणि॥१॥
अरिहंतदेवस्वरूप॥जोनरजानैमनधरइ॥सोनरमुक्तिअनूप॥वरैवेगपंडितकहै॥२॥
गुरुनिरग्रंथमहंत॥जोनरपदपंकजनमै॥सोनरकरमदहंत॥मनवचक्रमसंसैनहि
॥३॥जीवदयाधरमसार॥औरधरमदुर्गतिधरण॥इहविनकरणीछार॥विविधिविवि।
धिपरिसोकरै॥४॥दोहा॥देवसुगुरुधर्मवंदिकरि॥जिनउपदेशकहंति॥पढतसुनतउ
पजैसुबुधि॥अनुक्रमिमोक्षलहंति॥५॥होनहारकारणमिल्यो॥हीरामणिउपदेश॥का
रणविनानभव्यजन॥काजनहोइत्ववत्तेश॥६॥पंचसकलपेरकभए॥जानहुमनवचका

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain Oriental Research Institute, Arrah

य॥सत्यपुरुषआग्याभई॥श्रीजिनराजसहाय॥७॥सत्रहसइपंचोत्तरइ॥पौसदसमिगुरुवा
र॥शुभवेलाशुभग्रहलगन॥कियौमुहूरतसार॥८॥सवईयाइकतीसा॥कविताभनो
हरषंउरवात्तसोनीजातमूलसंगीमूलजाकौसांगानेरवासहै॥कर्मकेउदैतेधरमपुर
मेनवासभयोसवस्यौंमित्तापकुनिसज्जनकोदासहै॥व्याकरणछंदअलंकारकछुप
ढ्यौनाहिभाषामेनिपुनतुछबुद्धिकोप्रकाशहै॥वांईदाहिनीकछुसमुझैनसंतोषत्रि
एजिनदोहाईजाकैएकजिनहीकीआसहै॥९॥दोहा॥धर्मपरिक्षाकहतहुं॥भाषाबुद्धि
समान॥भव्यश्रावकसोभलो॥मनवचकरिदेकान॥१०॥सवईमाईकतीसा॥श्रीमान
पवनतीनपुकारविराजमानजगतस्वरूपीघरबैठिरह्योतिनस्यो॥त्रैसेघरमांहिजिन

बोधदीपव्यापिरह्योतिनकोप्रतापहैअनंतगुणेदिनस्यों॥अनंतचतुष्टयगुणपूर्णविरा
जेतामेअरिहंतसिद्धरागदोषगयोजिनस्यों॥धर्मपरिस्तभाषावालबकसुबुद्धिहेतुबुद्धिस
रुकहंतातेवीनतीहेइनस्यो॥११॥चौपई॥भोगभावतेभयेउदास॥फुनितिनकिएकर।
मगणानास॥केवलपाइमोक्षकोंगए॥अैसेसिद्धअनंतेभए॥१२॥एकरूपहैतिनकीसुग।
ति॥तेसिद्धमुऊनेदेयोमुक्ति॥करमदूरिकरिशिवपुरगये॥अतीतअनागतयोहीभयें॥
१३॥दोहा॥वचनअंभुकरिभव्यमन॥कवलविकासनकीन॥सूरजसमजेसूरिहै॥दूरि
करैमतिहीन॥१४॥चौपाई॥भक्तिवंतजेशिष्यप्रधान॥तिनहिदेतुहैविद्यादान॥उ
त्तमउपाध्यायजेधीर।तेमुऊदूरिकरोदुखवीर॥१५॥क्रोधमानमायाअरुलोभ॥तिनस

वज्रगतकियो है क्षोभ ॥ नृपसमखड्गविदारैतेह ॥ ऐसे साधुमोहि सुखदेहि ॥१६॥
जेविनीतपाठीबुधिसार ॥ विद्यासागरनतरेपार ॥ कामदधासमकहियेएह ॥ सोमु॰
झबुद्धिसरस्वतीदेहु ॥१७॥ दोहा ॥ विघनभजैजिनभजनतै ॥ यामैमिथ्यानाहि ॥ जैसे
पवनप्रचंडतै ॥ धूत्रीपुंजनडिजाहि ॥१८॥ चौपई ॥ सज्जनलोककरईज्ञानंद ॥
दूरजनकोपकरैमतिमंद ॥ ज्योंससिसोभानिशिमूषितकरै ॥ राहुतासुगिलवोअ
सैरै ॥१९॥ सवईयाईकतीसा ॥ सज्जनकोदेषिदुर्जनकरतकोपब्रह्मचारिदेषिका
मिकोपकरैमनमै ॥ निशिकेजगइयाकोदेषिकोपकरैचोरधर्मवंतदेषिपापीज॰
लनटैतनमै ॥ सूरवीरदेषिकरिकातरकरतकोपकवितकोदेषिमूढहासीकरैज

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

नमै॥धनकेधनीकों देषिनिर्दनकरतकोपविनाहीनिमीत्तषाकडारैतिकूंपण
मै॥२०॥चौपई॥राशिअंवुदसज्जनगोक्षीर॥एकैदल्लकेकीनवीर॥विनानिमित्त
परकाजकरांहि॥कहैमनोहरमिथ्यानांहि॥२१॥दूरजनअहिजमएकस्वभाव॥वि
नकाजदुष्टघातैघाव॥तातैइनतैरहियेदूर॥कानमूंदिमूखदीजैधूरि॥२२॥सज्जन
दुष्टकीसेवाकरै॥तोभीकोपअधिकमनधरै॥अग्निदूष्टकोपकैराहु॥सेवतकरै
अवसितनदाहु॥२३॥दोहा॥दूर्जनकोपइसज्जनपरि॥तोवहशुभचिंतत॥राहुगि
लेज्योंचंदकों॥चंदसुधापोषंत॥२४॥चौपई॥दिनपतितापजगतकोकरै॥नि।
शापतिशीतलताईधरै॥ज्योंदूर्जनसवकोदूषदेइ॥सज्जनसुजसजगतमैलेई॥२५

सोरठा॥ सज्जनजन कीरीती॥ जैसे चंदनवावनो॥ दधदेधसैसुप्रीति॥ वासैतो।
नीएहगुण॥२६॥ चौपई॥ गणधरईसधरमजोकह्यो॥ ताको मरमनकाहूलह्यो
॥कुमूरखश्रतिश्रपटश्रज्ञान॥ नामैदेख्योतर्कपुराण॥२७॥ सोकुंकहिकैसैकरिके
कुं॥धर्मश्रर्थकछुमेदनलह्यो॥ देखिवस्तुगुनयोश्रधीर॥सोरासिसेक्यों मंजैवी
र॥२८॥पुथममुनीश्वरधर्मजुकह्यो॥सोईपेडामैमीलह्यो॥ वज्रकणीमुक्तावेधियो
॥सिथलसूतनमीगमेकियो॥२९॥ जंवूद्वीपकरैपरकाश॥ बहूतदीपसोमैचंपा
स॥ताकीसोभाकहीकोकहै॥ चक्रवर्त्तिकीसोभालहै॥३०॥ भरथक्षेत्रतहांसुववसै
॥षंडछहौकरिश्रद्भुतलसै॥ विजयार्द्धपर्वतशोभंत॥ देषतसुरनरमनमोहंत॥३१

विद्याधरदुइसेणीवणी॥उत्तरदक्षिणजिनेश्वरभणी॥गजकपोलमदचालीधा
र॥मधुकरवृंदकरैझंकार॥३२॥साठनगरीभुमउत्तरदिसै॥नगरीपचासदक्षिणदि
शिवसै॥कोडिकोडिएकनगरीत्याग॥बहुतविनोदनठैतहांराग॥३३॥विद्याधरति
नमांहिवसांहि॥भूमिगोचरीकोगमनांही॥अकृत्रिमजिनचैत्यालयजहां॥रतनम
ईप्रतिमाहैतहां॥३४॥सुरविद्याधरपूजाकरै॥पापपुंजइकछिनमेहरै॥चारणमुनी
आवैतिहठाई॥जिनवानीव्याख्यानकराई॥३५॥भव्यलोकमुनिजिनवरधर्म॥भावशु
द्धिकरिकाटैकर्म॥मनइछाहरूपोल्लीत्याकरै॥धर्मध्याननिजमनमेधरै॥३६॥दोहा
सर्वसत्तविधिनाकियो॥महाभोगकीषांन॥वैजयंतनगरीवसै॥देवपुरीसमजान॥३७॥

॥चौपाई॥ लोगवसैसुखलीलाकरै॥रागदोषनविमनमेधरै॥देवपूजवहुविधिदेदान
॥छहदर्शनकोराषैमान॥३८॥सुखस्योंकालगमइहिभाइ॥कहैमनोहरमनवचका
इ॥सनहुवानविद्याधरतणी॥रूपनीतछविताकीघणी॥३९॥दोहा॥सर्वसत्वेविधि
नाकियो॥धर्मकाजकोराजा॥नगरमांरत्नेथापियो॥परिजादेषनकाज॥४०॥सवइयाइक
तीसा॥३१॥विद्याधरकरिकैजुदेवकेसमूहजीतषगेंद्रकीछविभ्राजैछिप्योसचीपतिहै
॥परसादकीछविदेषिमलिनविमानभयोसुरपुरीसेतीवैजयंतीछविभ्रतिहै॥कामिनी॥
केआगैदेवकामिनीकुछित्तत्यागैजासैमुहवोलिवेकीइछाकरैरतिहै॥कहैमनोहर
जुवुद्धसारूशोभाकहीअैसीपुरीवर्णविकुंकहोकाकीमतिहै॥४१॥चौपई॥जितशत्रूनग

श्रीभूपाल॥दुर्जनदुष्टतणोशिरसाल्य॥इकछित्रभुजैराजनरेंद्र॥इंद्रपुरीजिमराजैइंद्र
॥४२॥षट्पदछंद॥परस्त्रियदेषणअंधवित्तपरिदेषिहीनकरि॥रागसुनकोबधिर
विपतिदुषदेषिधीरधरि॥पापकरणविनसकतिसकतिवुधधरमकरनकों॥दोष।
कहुनकोमूकभ्रमरजिनकवलचरणाकों॥एकत्वमंत्रसोभैसुनटचारिकथानविन
श्चरै॥मनहरमनोहरइमकहैनपतिराजइहिविधिकरै॥४३॥ग्रंथरहितगुरुभजैदे
वभ्रमरिहतनित्तवंदइ॥सकलजीवपरिप्रीतिध्यानपसरतिमनकंदइ॥अन्यतणुणिप।
रिहरैवित्तपरिमूलनढीवे॥संकल्पविकल्पढंडिज्ञानअमृतरसपीवे॥संसारभोगतन
तेविरतपापकरतमनमेंडरै॥मनरहसिमनोहरइमकहैनपतिराजइहिविधिकरै॥४४

वैरसिंघगजराजकरहिंकरसिंघकलेततत्ति॥इंदहमुनिनाथवासवहुविधिचोरै
ग्रत्ति॥तापकरैदिनपतीमारहयगयपट्सारी॥वोधैवंदरमालफूलकंचूककसना
री॥भविभुभदुखसुनिकेमुनिथकीथरहराइमनुमैडरै॥लोभपुणिजसकीर्त्तिकोन्ट
पतिराजइविकरै॥७५॥दोहा॥ग्रासिकलंकदिनपतितपै॥जरपयोधसहितोष॥मेरु
कठिनरिपुगोत्रको॥इंदुनिरपतिनिरदोष॥७६॥चौपई॥राजापावनज्ञानीधीर॥कला
निधिगुणगहरगंभीर॥सत्यवचनवोलैवडिभाग॥धर्मविषैग्रतिहीग्रनुराग॥वायु
वेगात्रियराजातनी॥वपुसोभासामुद्रिकवनी॥रूपशीलगुणविद्यासार॥कामतिहो
स्त्रीयोग्रवतार॥७८॥दोहा॥करपल्लवलोचनसुमन॥स्तनफलरूपवषानि॥तरुनिवे

स्वितननरणिको॥ म्वंगतरणिगोजान॥५०॥ चौपई॥ हरगौरीहरिलक्ष्मीजान॥चंद्र
कलादिनपतिसंगमान॥ दीपशीषाशोभैरतिकाम॥ द्यासाथसंगिज्योंश्रमिराम॥
५१॥ अइसीविधिनपरणीरहै॥ तासप्रशंसाकोकविकहै॥ अंतररहितभोगदोऊकरई
॥ इंद्रसचीजिमसोभाधरइ॥५२॥ भोगकरतकेईदिनगया॥ गर्भमहारणिकुंभया॥ च
लेवसेवजेभाईबाइ॥ पीतदेहमनकछुनसुहाई॥५३॥ त्रिबलीतीनोमिटिकरिगई॥ गर्भ
भारगतिविहवलभई॥ षाटामींगेवहुतसुहाइ॥ जिनवरचामहिअहिनिशिजाई॥५४
देवपूज्यकरिभोजनकरई॥ च्यारोदानअधिकविस्तरइ॥ इहप्रकारपूरानवमास॥ पुत्रज
नमकोभयोप्रकाश॥ ५५॥ शुभदिनशुभबेलायेथयो॥ मानोजदैनीतिकोभयो॥ जनमम

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain
Shri Digambar Jain Mandir Kamla

होछवराजाकरै॥ मंगतजनकोदारिद्रहरै॥५६॥वहुतदानवंदीजनदीयो॥याचकलोगअ
याचीकीयो॥फुनिनीजध्यानमहोछोकस्यो॥मनोवेगनामतिसधस्यो।५७। रूपमनोहर
सुंदरकांति॥मानोकोटिमदनकीपांति॥दैजइंदुजिमवढैकुमार॥भांतिभांतिकेलखलसा
र।५८॥कवहुंपावअटपटेधरइ॥कवहुंदौरिपहुमिपरिपरइ॥कवहुकरोवइकवहुकहु
सइ॥कवहुंकदेहदिगंवरलसइ।५९। कवहुंकपैलैधूलिमझारी॥कवहुकरैदिमनसैरारी॥
इहविधिवालकलीलाकरइ॥छिनछिनमाततातमनहरइ।६०। क्रमक्रमवरषसातकोभ
यो॥पंडितआगैपढनादयो॥ॐकारप्रथमपढिलयो॥गुरुकोविनोअधिकतिनकीयो।६१।
शास्त्रपढ्योव्याकणकुमार॥तरकअमरपढिहूवोसार॥जोतिकवैदकपढ्योसुजान॥सामु

द्रिककोकरैवषान।६२।रणआयुधशीष्योवरवीर॥परवलभंजनसाहसधीर॥मतखंडन
कीविद्यापढी॥तातैवुद्धिअधिकतिहवढी।६३।कामिनीचरितभेदसवलह्यो॥औरक।
हापढिवेमेरह्यो॥विद्याधरविद्याभंडार॥जाणैसुरगुरुनोअवतार॥६४॥दोहा॥विद्या
धरविद्यापढिं॥कोकविकरैवषान॥नरचित्तहरतैनीअधिक॥जाणहुमनवचकाय।६५
चोपई॥मुनिपदांवुजसेवाभृंग॥जिनवचअमृतपुष्टभयोअंग॥वालयणैवृद्धिको।
वृद्धियो॥धरममित्रवुद्धिसागरभयो।६६॥क्षायकसमकितकोप्रतिपाल॥सुखनिध
नअतिदीनदयाल॥धरमध्यानमैनितप्रतिरहै॥जिनवरभक्तिमनोहरकहै।६७।यह
तोकथाइहांहीरही॥सुनोकथाजोदूजीभई॥प्रियापुरीइकनगरीवसै।दूजीइंद्रपुरीजि॥७॥

मत्तसै।६८॥दोहा॥तिहिनगरकोभूपती॥सूरवीरअभिराम॥पवनवेगताकैभयो॥
शक्तिकरिजीत्योकाम॥६९॥चौपई॥पवनवेगवनक्रीडागयो॥मनोवेगस्योमेलोभयो॥
कुशलक्षेमपूछीसुखसार॥जैसोसज्जनकोविवहार॥७०॥दून्योंप्रीतिबढीअसमाने।को
कविताकोकरैबखान॥दोऊमित्रएकवारहे॥देहढांहकीसोभालहे॥७१॥जहांदिवसजहां
सूरजकांति॥दोऊमित्ररहेइहभांति॥दोनोप्रीतिनछाडैरती॥इकमिथ्यातीइकसमकिती
॥७२॥दोहा॥पवनवेगमिथ्यातसों॥वासितरहैसदीव॥मनोवेगतिसदेषिकरि॥अतित।
रसावेजीव॥७३॥चौपई।मनोवेगमनचिंताकरै॥क्षुधादिवसनविनिद्रापरै॥हामुऊमि।
त्रमिथ्यातीभयो॥मनुष्यजन्मतिसअहितोगयो॥७४॥जोहोमित्रकरेउपगार॥तोमे।

रे जीवन जग सार ॥ जो नहि करै मित्र सुख काज ॥ धिग जननी तिस आवहि लाज ॥७५॥
पुत्री वे चित्त हि जो दाम ॥ निज त्रिय तजि से वै परिवाम ॥ तो भी गुरु की सेवा करै ॥ ता को वे
ग पुन्नि परिहरै ॥७६॥ करै विस्वास घात जे कोई ॥ क्रिया कृत कुं विसरै सोई ॥ आपद पडै
मित्र परिहरै ता स भार धरती थर हरै ॥७७॥ ताते अवहं सोई करों ॥ पडतो भुम्त्र मि
त्र न ढरो ॥ अस सोचिं ता नित प्रति रहे ॥ मन जाणै न विकाहू कहै ॥७८॥ एक दिवस इक
कारज भयो ॥ पवन वेग अपने घर गयो ॥ कारज कछु न पज्यो ति सगेह ॥ ते ति स की यो
आपनी देह ॥७९॥ सोरठा ॥ घरि वहु त्यागी आवार ॥ पवन वेग आयो न ही ॥ मनो वेग न
आहार ॥ करै जिने सुर दरस विन ॥८०॥ चौपई ॥ मनो वेग मन चिंता थई ॥ जिन पूजा की

वेरना भई॥ कारतनसंघ करौजे आदि॥ तो मेरो जीवन सववादि॥ ८१॥ ताते अवजिन पूजा क
रौ॥ नरक मोह वसका हे परौ॥ कारण विना नसीऊै काज॥ तातै कारण ही सिरताज॥ ८२॥
द्वीप अढाई महजिन थान॥ कृतम अकृतम जे परिमान॥ सो उठ वंदन चल्ये कुमार॥ म
नो वेग गुण रतन भंडार॥ ८३॥ दोहा॥ सत्य पुरष पुन काज को॥ आलस करै न धीर॥ अन
र्थ आलस मूल हे॥ पुन्य काज को वीर॥ ८४॥ चौपई॥ एक दिवस करम के भाई॥ रुक्यो विमान
न गमन कराइ॥ शत्रु मित्र के मुनिवर कोई॥ के जिननाथ परतिमा होई॥ ८५॥ अइसी मन म
इसो चइ वीर॥ चहुं दिस देष ई साहस धीर॥ नगर गाम वन गण वेषियो॥ मालव नाम देश दे
षियो॥ ८६॥ दोहा॥ ता मधि उज्जयनी पुरी॥ सकल वसत भर पूर॥ रतन जटित प्राकार शुभ

॥९॥ घ्रतिकरस्रोप्योसूर॥८७॥ चौपई॥ सात्रकांगुरेशोभेमस्तै॥मानोगगनमित्रनकोंचलै
वहुदिशिघाईगहरगंभीर॥वारजठाईनिरमलनीर॥८८॥दुःप्रवेशमधिकाखिगरहै॥
नगरनाइकाशोभात्रहै॥वनेसवैसतघनेत्रावास॥घसिघसिचालैवादरतास॥८९॥
तिहिमध्यशोभैजिनवरथान॥मानोदूजोस्वर्गविमान॥त्रगिनितत्रंडेरतनैजडै॥मा
नोंविधातात्रापहिघडै॥९०॥ध्वजाहस्तइहविधिलोलंति॥कलिप्रवेशकोमनैकरं
ति॥जपमाकहतनत्रावैपार॥नगरीत्रलकापुरीत्रवतार॥९१॥दोहा॥ चतुरशीलगुणा
रूपजुत॥त्रैसीशोभितनारि॥सुरगमातिनजपरइ॥कोटिकदीजवारि॥९२॥चौपई ॥९॥
नहांलक्ष्मीत्रइसीभई॥देषिकुवेरमूहत्रंगुरीदई॥तिहुवनवारीसोभैवहू॥छहूरुतु

केफल चाषैसइ॥९३॥ नंदनवन की छवि जीतंति॥ पंथी देषि तृषा पलाई॥ शीतल नीर मिष्ट फल षाई॥९४॥ फटिकशिला इक तरु तलि भली। ता हि देषि मुनपूजैरली॥ ऐसी मुनी कैलागै पाई॥ सुरनर सेवकरै पुनिताइ॥९५॥ दोहा॥ देवमनुज अहिव्योमचर॥ इंदनमैतसुपाइ॥ घातिकरमइंधन अगनि। बैठे केवलराइ॥९६॥ चौपई॥ मुनी समूहबैठे चहुंपासि॥ मानो पुन्यमधि जसकी राशि॥ जैसे कोकी देषी पयोद॥ निरधन करैदेषि धनमोद॥९७॥ मित्रमित्रविरवासी देषि॥ मनोवेग हरष्यो तन सुदेषि॥ छाडि विमान चल्यो वरवीर॥ मुकुटरतन मैगुण गंभीर॥९८॥ अतिउछाहमुनि देषतपाइ॥ नयो हरष अतिअंगनमाइ॥ आयो जहांतहांमुनिराय॥ वंदनकरैजिनेश्व॰

॥१०॥ रणाइ।एम्।मनुजदेवयतिवर्गवर॥सेवतश्रीजिनपाय॥हस्तकवत्तसिरधारिकरि॥जै
जै शब्दकराई॥९००॥चौपई॥दीनीतीनप्रदक्षणा॥गुणग्रामभाषेजिनतणा॥जयजय
यस्वामीत्रिभुवनसार॥मोसंसारउतारेपार॥१०१॥तुमठोसरणाईसाधार॥तुमठौमु
क्तितणादातार॥तुमतोतीनलोकके नाथ॥तुमसमदूजोअवरणकोय॥१०२॥दोहा॥
इहिप्रकारवहुस्तुतिकरी॥हस्तयुगत्तशिरधार॥अतिउछाहसंतुष्टहुइ॥वैठोसभामझा
रि।१०३॥इतिश्रीधर्मपरिक्षाभाषामनोहरदासमांगानेरीषंडेलवालकृतप्रथमअ
धिकारः॥१॥ चौपई॥कोईकभविजनसभामझारि॥पूछैपुण्यकरमस्तकधारि॥मो
भगवानसंसारमझार॥दुखसुखव्योरोकहोविचारि।४।वोलेभगवनजगआधारि ॥१०॥

सुनोभविकसुखदुखव्योहार॥इकदिष्टांतवताऊंत्योइ॥विनदिष्टांतप्रतीतिनहोइ॥५॥
करमयोगिपंथीवनमांहि॥भूल्योभ्रमगपावैनांहि॥चहुंदिशिफिरैपथिकधावंत॥
आवतदेख्योगजमयमंत॥६॥अतिउतंगआठोमदझरै॥दृक्षउपारशंकनहिकरै॥ता
देखतपंथीमनडस्यो॥धावतअंधकूपमेपस्यो॥७॥पठतेएकअचंभोभयो॥चुंवएक
सिरकरिपकरयो॥सोईपंथीगहिकरिरह्यो॥जिम्योउदरआयोसोसह्यो॥८॥उपरिगढो
मत्तगयंद॥चहुंदिशिनिवसैकूरफणिंद॥तलैरह्योअजगरमुहफाडि॥मानोसयत्नका
त्रकीबाडि॥९॥सेतकृष्णदोईऊंदरजिहां॥चुंबपेडकोकाटइतिहां॥मूरखभेदनजाणै
कोइ॥जोजाणैसोपंडितसोइ १०॥दोहा॥कुवाकीढिगवृक्षइक॥अतिउतंगविस्तार॥ति

॥११॥ हिलागोमधुकोछत्ता॥ताकोवडोविथार॥११॥वहहस्तीवहुरोषकरि॥पकरिहत्तावैडा
र॥नडीमक्षिकाअतिसघन॥ताकोवारणपार॥१२॥ चौपाई॥पुनिमाषीत्यागीतिसका
य॥ताकीवेदनकहीनजाय॥करमयोगसगत्योदुखसह्यो॥जिसोउपायोतैसोलह्यो॥
१३॥हाइहाइमुखउचोकरइ॥मधुकोविदुहोठपरिपरइ॥तिहिचाटतसुखअ॥
द्भुतभयो॥मूरषसवदुखवीसरिगयो॥१४॥विटएकजोअइसोपरइ॥तोमेरोकारजभु
लसरइ॥पथिकसोईचुंप्राणीजानि॥धर्मराजगजराजवषानि॥१५॥अंधकूपभवजाणो
वीर॥वनउधानअज्ञानगहीर॥सरपच्यारिच्यारेंगतिजानि॥कुंदरसेतकृस्णपक्ष
मानि॥१६॥आवसरकनातुंवसमान॥माषीव्याधिजिनेश्वरआनि॥मेइतनेकोपायो

नेद॥सुनतसवैदुखपावैखेद॥१७॥दोहा॥ अजगिरिसोईनरकमणि ताकोनहीविस्वा
स॥दुखएतोसुखसहितसम कहैमनोहरदास॥१८॥चौपई॥मेरुसमानदुखसंसार॥सुख
सरसोसमदेखिविचार॥यहप्रस्तमनमाहैधरै॥भविप्रागनकोनद्दिमकरो॥१९॥सुख
कारणसठभोगकरइ॥वज्रअगनिसोसीतनसाइ॥नलदीचालयहैजगमांहि॥तोवन
मूरषसमुझैनांही॥२०॥दोहा॥ अमरतअहिमुखथलकमल॥अगनिमोहिहिम होइ॥रं
चनसुखसंसारमैं॥मनवचजानोलोइ॥२१॥विषययोगसोंसुखकहै॥नेदनजानैकोई॥
दीपगकोमंदोकहै॥दोनोमूरषलोई॥२२॥विषयासुखकहै॥ताहिनदूसनकोइ॥सवहीको
दीसैकनक॥षाइधतुरोसोई॥२३॥सचसुखउपजैधरमतैं॥ताकोविसरैलोई॥जानपूछकै॥

कोसुख

नव्यजन॥क्यौनकृतघ्नीहोइ।२३।सवदुखनपजैपापतै॥ताहिनछारैलोई॥अगिनिसे
वतादहै॥नामधिपइसेकोइ।२५॥सुंदरसुभगकुलीनदेषि॥शीलवंतजसषानि॥स
मदिष्टिवाणिमधुर॥पुन्ननदैतेजानि॥२६॥भ्रष्टकुशीलीदालिद्री॥महाकुजसकीषां
नि॥दोषीचुगलचवारसठ॥पापनदैतेजानि।२७॥चौपई॥पुन्यवंतगजचढिचालंत।
पापवंतआगेधावंत॥पुन्यवंतसुखसेन्याचरै॥पापीपुहुमषरोरीपरै॥२८॥पुनिवंत
नितदानकराई॥पापीहाथपसारैआई॥पुनीसोवैमहलमझारि॥पापीचहुंदिशिचौ
कीदारि॥२९॥पुनीषटरसभोजनकरै॥पापीनदरआठसोभरै॥पुन्यवंतिकीकीरति
सार॥पापीगावैवारंवार।३०॥दोहा॥धरमीदक्षिणदेशका॥धारैवसनअनेक॥पा

पीशिरकुटनफिरै॥ लहैनकछोटीएक।३१॥ चौपई॥ चक्रवर्तिनीर्थंकरदेव॥ केशवअरु
प्रतिकेशवएव॥ एतीपद्वीपुनस्योथाय॥ कहैमनोहरमनवचकाय।३२।कामअर्थशि
वकोंदेधर्म॥ इनकोनाशकजाणअधर्म॥ सर्वलोगअरुसैहीकहै॥ पंडितपुरुषपरिख
परिगहै।३३।असेजानिपापपरिहरो॥ धर्मजिनेसुरभाषितकरो॥ नीचएकभवसुख
केकाजि॥ बांधैपापकर्मनपराजि।३४।तिहिसेतीभववहुलाफिरै॥ कहुकैसैभवसा
यरतिरै॥ जाकैनांहिजैनपरतीति॥ तिनसमकितकी छांडिरीत।३५॥दोहा॥ सुखकारी
सहगामिनी॥ पुत्तअनुसरसार॥ एवसतैसंसारमै॥ पावैनहीखुवार।३६।यसैतरुणप
नजरानसों॥ जीवनयसैधर्मराजि॥ संपतिकेढिगविपतिहै॥ कहांजानेगभाजि।३७

माता पिता भाई सज्जन ॥ इष्ट मित्र सुत जोइ । एते सब यम राज पै ॥ राखि न सक्कै कोइ ॥३८॥

॥ सवैया इकतीसा ॥ बालक जुवान वृद्धि निर्द्धन दरब वंत छ होमति पाठी भावै होहि ।
मूढ मती जू ॥ सूर वीर कातर नरेंद भावै चाकर हो कुटंब को धनी भावै होइ थिर कती जू ॥
दान को दिवइया भावै हाथ को जुट इया होइ पाप मे मगन भावै होहि क्यों न सती जू ॥ इ
नेत्रादि को ऊन ऊन वै जगत मांहि मोती की त्रिनी जब चलै प्रजलती जू ॥३९॥ सवै
या तेईसा ॥ ऊषधि षाइ वैद को पूछति ता तो नीरक्षि ण हिक्षि ण घुटति ॥ वंधक न कत
न थ रिद्ध वत्त र्जटसि सो डि पलंग महि लुटति ॥ तंत मंत ग्रह दान पुण्य पुण्य निरमति व्या
धि क हो कि म चुटति ॥ अरे आया न अंत की घडीया इंद फणींद नरेंद किं मिटति ॥४०॥ सवइ

याइकतीसा॥ चाकरअनेकराषोहाथनकिवारकरोपौलिकेकपाटघाइसोवोसातषनमै
॥नटधिमेंछियोभावैमेरकाशिषररहोसहरमेवसौतथाजाइवसौवनमे॥पैठिकैपतात्र
धरणींदकीसरणाजाहुवांचहुंनहीटैरहोसुरनकेगणमें॥कोनठौरहूंनछुटैजमकीज
मातिआगेवादिकोंपुकारेनरसोचिदेषोमनमै।६१॥कवित्तछंद॥हयगयरथपाय
कमुवपतिभणिठाढैरहैलियेकरिदंड इंद्रनरेंद्रषगिंद्र चक्रधरिरिष्याकरैसकत्रब्र
मांड॥वसैपतात्रचढैगिरिवरपरिभ्रमतफिरैमुगधछहषंड॥भावैजहांजाइकरिनि
वसोचर्वणकरैकात्रपरिचंड॥६२॥दोहा॥चिदशपुरंदरहनेनतै॥नैकनचत्रैपुस्वेद॥
म्रतिमानुषकोंमारतै॥होइकहाकहिषेद॥६३॥म्रजिनित्रगेपरवतजत्रै।होइमहाज

तपात॥सोपाकतिणपुंजक्यों॥कहिक्योंढोडैभ्रात।४४॥हुवोनपायनहोइसी॥अरिहं
तजीकीआणि॥जिहिकरिमोतिनिवारिये॥चर्वणाकरतांप्राण।४५॥अरिहंतभाषितध
र्मविन॥अवरनपायनकोइ॥समवरतीवसकरणकौं॥मनवचजानोलोइ।४६॥फिरे
अकेलोजीवयह॥अवरनपायनकोइ॥सुरगमनुषिपातात्तमै॥करमकरैसोहोई
४७॥षटरसभोजनयोषियो॥सोवपुसाथनजाई॥वहरभूतसवकुटंवहै॥कहुकै।
सेसंगथाइ।४८॥चौपई॥मेतनमेधनमेरेभ्रात॥मेकुटंवभाईसुतमात॥मतवास्त्रा।
ज्योमोहितरहे॥एकपलकनविथिरतागहै।४९॥तातेसकलकाजकोसार॥श्रीजिन
सुमिरणहीहियधार॥मातपितासुतकामिनीकाज॥बांधेमोहपापनपरज।५०॥

नरकवेदना आपन सहै॥ सोसब कुटंबनिरत्योरहै। यातैधर्म आपकरिलेहु। सोतो
नुचलैसाथनुहगेहु।५१॥ गीताछंद॥ मेरेमेरेकीयोघनेरेको नुसाथनचाल्यो॥
च्यारिआदमीलेकांधेकरि॥जाइमसानहिडार्यो॥५२॥ पांचहाथकपडोतिसघात्यो॥
सोफुनिठीननरलीयो॥पित्रापुत्रसबकुटंबदेषतां॥बालरकुंचोटीयो।५३। यहकर।
तूतलोगसबजानै॥गर्वनकीज्योकोई॥सकतिसहितदाननहिकरिहै॥फिरपछतावै
सोई।५४। अरहंतदेवनिग्रंथसुगुरुधर्मजीवदयासतिजानो॥सोनरआवैआनादिमुक
तिसुख॥सदाशास्वतोमानो।५५॥ दोहा॥ यहदुद्धरसंसारमैं। आतमसुखनत्यागर॥
रंमाथंनविलोकतेकछुननिकसैसार।५६॥ चौपई॥ जाकारणिसउआरंभकरइ॥

सो संगि साथ पावन विधर इक है मनोहर सुनहु सुजान ॥ तिहि सम मूरष कहु को आण
५७ ॥ दोहा ॥ विषया सुख नै दुख वढै मन मे देषो जोइ ॥ ज्यों ज्यों भीजे कांबरी ॥ त्यों त्यों
भारी होय ॥ ५८ ॥ दुर्जन की अरु विष इकी करो प्रतीत न कोइ ॥ ज्यों ज्यों सेवा कीजिये ॥ त्यों
त्यों वैरी होई ५९ ॥ सब को स्वारथ के सगे ॥ स्वारथ विना न कोई ॥ बछा त्यागै छिनक मैं
दूध विना गो होइ ६० ॥ झूठे सुख को सुख कहै ॥ मानत है मन मोद ॥ जगत चवीना का
ल का ॥ कुछ सुख मे कुछ गोद ६१ ॥ पाप पुन्य जाने नही ॥ अैसे मूरख लोइ ॥ दुख दाता को
सुख कहै ॥ सब जग देष्यो टोई ६२ ॥ चौपई ॥ इंद्री का सुख दुख दातार ॥ इंद्री वस पावै भव
पार ॥ ताते गो सुख पंडित तनो ॥ सुख कारण तप पावन भनो ६४ ॥ दोहरा ॥ अैसे दुष्ट संसा

रको॥ मति को करौ विसास॥ जो सुख चाहो मुक्ति को॥ करे मनोहरदास॥ ६५॥ चौपई॥ आ
तम काज मूढ वीसरई॥ देह काज जे नित प्रति करइ॥ ते नर किंकर रूप वषान॥ तास मम्
रष आवरण जाण॥ ६६॥ सुख संसार दुःख की राशि॥ कहै मनोहर मनवच भास॥ एक
आतमा धर्म तारण हार॥ और सकल मिथ्यात पसार॥ ६७॥ सोनु मसुनो भविकदेकान
थोरा ही मे कहूं वषान॥ जीवदया सब ही मे वडी॥ छहदर्शन मारग चित चढी॥ दोहा॥ प्रथ
म दया व्रत पालिये॥ या सम और न कोई॥ दान करे वहु ते मही॥ तो न दया सम होई॥ ६८॥
मनवचकाया शुद्ध करि जिनवच हिरदै धारि॥ दया व्रत पालन चहै॥ तो ए ती वात निवा
रि॥ ६९॥ चौपई॥ हालीपी छे तिल मंडसाल॥ अनंत जीवो पराखै काल॥ जहां लूण की टेरी॥

रहै॥ एकहाथकेप्राणीदहै॥७०॥ कंदमूल वेचेअरुवेइ॥ सोनरपुण्यकोंघालीदेइ॥ यहतो
वातजिनेश्वरकही॥ इनमेंजीवघातहैसही॥७१॥ दोहा॥ सोरागंधकदेणकों॥ जोनरवे
चैलेइ॥ आपसहितसारेकुवंब॥ नरककुंडमेंदेई॥७२॥ चौपई॥ तोदफटकडीहरडाधा
इ॥ माईधौहरतदेइविसाई॥ वहुतनाजकोसंग्रहकरै॥ ताकोपुण्यवेगपरिहरै॥७३॥ धो
वीतेलीऔरकुंभार॥ नीचगाडरियाचोरचमार॥ वाजीगरवगनीगरजाण॥ हलवाईक
लालवधान॥७४॥ इनसोवनजनआवगकरै॥ करैसुनरकमांतवेपरै॥ जोमाटीकोला
रीकरइ॥ पापविसाहिसकलघरिभरै॥७५॥ वहिलैदेईईटकोदाम॥ सोनरकरैअजुग
तोकाम॥ सूवकटाइआवारतिकरै॥ ताघरमांहिभूतसंचरै॥७६॥ वस्तुमिलाइवेचैकरि

षरी॥ ताकीवारसीकनहिधरी॥ नठोदेकरिवधतीत्रेइ॥ सोनरनिश्चैनरकपरेइ॥
७७॥ नीलगरजीवरडात्रैजात्र॥ दयाहीनअरुकरमचंडात्र॥ इनकोदामजधारेदेइ
॥नरकजाइवहुदुखसहेइ॥७८॥ मजूत्रूकचात्रूजोनरषाइ॥ आदोसूरणवहुतसुहा
इ॥मूलीविनचित्रणनाहीरहे॥ सोनरजाइनरककोत्रहै॥७९॥ जोश्रावकआचारक
रेइ॥आपणषाइओरकोंदेइ॥ वातकहतजोपकरेगत्रो॥ वासोजानिचूहडोभत्रो॥८०
जोअभछिकोंभछनकरे॥ जीवघातसेनाहीडरै॥ तेअभछिकोंअवसुनहुंसुजान॥ सु
नितजिपावइसोनिर्वाण॥८१॥ सवइयातेईसा॥ नत्रारोरवरानिसभोजनवहुवी॥
जावैगणसंधान॥ वेरपीपत्रपित्रषणकुंवरपाकरफत्रहोईअया न॥॥॥ कंदमूल॥

माटी विषआमिषमधुमाषणआरुमदिरापान॥फलअतितुछउसारचलतरसजि
नमतएवाईसअषाए८२॥षटपदछंद॥धूमसहैतनदहैअगनिनितरहैभूमिप
रि॥मातजातफलषातनिरंतररहतध्यानधरि॥मौनगहैनविकहैवातननभस्म
चढावै॥रहैअधोमुखझूलमाननखजटावधावै॥इहभांतिवहुतसंकटसहैघणी
वातकोकहैअव॥मनएहसिमनोहरइमकहै॥एकदयाविननिफलसब८३दूत
कारसुनारिमासभक्षीमदपानी॥वेश्यारतितलवारजारत्यापरसवमानी॥दयाही
नशुभक्षीनक्रियाकुलहीनहीनजस॥हठीचाडठगचोरकृतघ्नीताहिनाहिजुजी
भरस॥अवावेकीआदररहितपंचविरोधीदुर्जनिहुव॥जैचाहैसुखवंछितसकल

तोए नापर हर मित्र नुव ॥ ८४ ॥ चौपई ॥ होइ वज्ञान जु धवा वइटूक ॥ करम वंध सो कर
हिअचूक ॥ वसन रंगावै मानै नही ॥ यह तो हिंसा कारण सही ॥ ८५ ॥ त्राष त्राष सहु
ऊठी षाइ ॥ जिन मत मांहि कह्यो यो नाहि ॥ जिन मत की आज्ञा सो तजै ॥ कहा होत जो
जिन मत भजै ॥ ८६ ॥ वाजीगर ज्यों आसन करइ ॥ सो वज्ञान जनी चीगति वरई ॥ फुनि सो
लागता ऊठी षाई ॥ वस्त्र विरा गी दे इफिराई ॥ ८७ ॥ जाण पिछाण ते इ अधिकार सोव
ज्ञान जनही का सीदार ॥ जो वज्ञान जनै सा ची कही ॥ दुष्ट लोग को मानै नही ॥ ८८ ॥ तातै सो
चर है मन मांहि ॥ और वणिज कुछ सूझै नाहीं ॥ तौ भी ऊठ कहै वहु को न ॥ ऊठ अैसे आ
टै मो त्यो न ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ झूट कपट को मति करहु ॥ कर्म छाहडी साथ ॥ मन दौडावो आ

पनो॥ कछून आवै हाथ॥ ए॥ जे हने जे तो विधि लिष्यो॥ धन जोवन विष सान॥ तिह
नै ते तो संपजइ॥ भावै जइ हो त हो जान॥ ए१॥ त्रहै भाग समकछु करै॥ यामै मिथ्या नो
हि॥ भजै नुदर समकुपहै॥ आए चा सागर मो हि॥ ए२॥ त्राषसया नप को टि वुद्धि। प्री
तमसवै आकथ॥ जे आक्षर विधि ना लिष्यो॥ मेटन को समरथ॥ ए३॥ चौपई॥ दोषआ
ठारहरहित सोदेव॥ गुरु निरग्रंथसुजानोएव॥ धर्मदया पात्वै आन कूत्व॥ एतीनो
समकित को मूत्व॥ ए४॥ सोरठा॥ वरं महुरतिदोइ॥ जीवन भुद्धसमकितसहित।
जीवन धिगतिसत्तो ई॥ को टिवरष समकितविना॥ ए५॥ षट्पद॥ सर्वदेव नितन
वहि॥ सवमेषक गुरुमानही॥ सर्वशास्त्रनितपढहि॥ धर्मनै धर्मन जाणहि॥ सर्वत्र

तनितकरहि॥सर्वतीर्थफिरिआवै॥परमवृक्षकोछोडिआनिमारगकोंधावई॥इहि
प्रकारजेनरहै॥इसीभातिसोभात्वहै॥अचिरजसुपुत्रबेश्याननो॥कहोवापका।
सोकहै॥९८॥चौपई॥तातेदेवधर्मगुरुठीक॥समकितकीएतीनोलीक॥हिरदैधरै
भव्यजोकोइ॥ताकोकबहुनआवागमणनहोई॥९७॥आवणजाणरहितसोदेव॥
तिहिकीनितप्रतिकीजैसेव॥अनरदेवछाडोमनमांहि॥मिथ्यातीसोंकारजनां
हिं॥९८॥दोहा॥अरिहंतदेवजुआनिके॥सेवोमूरतिआन॥सकलपापकरिवैवटे॥
जिनवाणीपरवान॥९९॥त्रोभीगुरुकोसेईकरि॥मानतहैमनमोद॥सोनरसंक
लदृढजड्यो॥चढैपापकीजोद॥२००॥त्रोभीगुरुकोसेइकरि॥मनवाछेसुषसार॥तेन

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

रत्नमतसर्पमुख॥ चाहैमूढगवार॥२०१॥त्योभीगुरुकोसेइकरी। करैधर्मकीत्रास॥
व्योमविषैतेवापडा॥ चाहैफूलसुवास।२०२।त्योभीगुरुनेसेइकरि॥करैधर्मकीचींति
॥सोधर्मशीघरीविनसजे॥वालूकीसीभीति।३।सोरठा॥ जानरकेघरवार॥त्योभी
गुरुकेपगपडै॥गयोजमारोहार॥वेनरभाईवापडे।४।त्योभीगुरुत्रसचोर॥एदूनो
समजानिज्यो॥करैपरायोमोर॥ज्ञानध्यानधरिलूटके॥५॥सीषसुनोतुमएह॥घणी
घणीकहनीकहा॥तिनकेमस्तकषेह॥नेहकरैत्योभीगुरा।६।त्योभीगुरुत्रसराहु॥
एदूनोसमजानिज्यो॥करैकरैजोदाहे॥सतपुरुषशशिनिर्मत्रो॥७॥दोहा॥एकवा
तचुमसेकहुजानोमनवचकाई॥त्योभीगुरुनेसेवता॥ज्ञानगांठिकोजाइ।८॥स

वैयानेईसा॥ गिरस्योंगिरिएपरिएजलजोरमैसर्पमुखैआगुरीदीजै॥ पैसिआगन्निमै दाहिएदेहकोंघोरिकैहालाहलपीजै॥ डोलियेभूतपरेतनकेसंगतोनविजीवमैदुरवध रीजै॥ ग्रंथसहितदिगंवरजेनरताहिसोमूत्तिमिलापनकीजै।९॥सवैइयानेईसा॥ कोह तज्योनविमोहतज्योनविलोहतज्योममतानविदारी॥ गेहतज्योनविनेहतज्योनभज्यो भगवंतमहासुखकारी॥ कामतज्योनविरामभज्योनविदामतज्योत्रसानिवारी॥ पेट केकाजकिएवहुसाजपैमुंडमुडायकहाजखमारी॥९०॥ जापजपैनवितापतपैनविन्रा तमध्याननहीचितदीना॥ दाहहस्योनविमोहमस्योनविकामजस्योनहीवुद्धिहतीना छांडिकैधाममहैवहुदाममलैजुमलैजुमलैजुकरीना॥ तेरीवूझिपरीमोहिमूरखमूंडि

मूढाइकहातपकीना॥११॥दोहा रतनत्रयभूषणमहा॥वाहिरमलिनसरीर॥तेमुनि
वरचिरजीवना॥ध्यानविषैअतिधीर॥१२॥सवइयाइकतीसा॥सोनेतिणासमजाणै।
कोधमनमैनआणैजिनवाणीजाणैजगमैतत्वकोविचारजू॥गिरिवरवासीकर्मजूथ
कैविनासीचौवीसोंग्रंथसौनदासीपासीनवपारजू॥अप्रमादीतीनोकालजीवजा
तरषपालरागदोषमोहमानजाणैनलगारजू॥धर्मकैकथनहारतजैमनकेविका
र॥ऐसेमुनिजितमारसेवोनितसारजू॥१३॥दोहा॥देवभजैअरिहंतविन॥गुरुसे
वैसग्रंथ॥धर्मविनाकरुणाकरै॥योदुर्गतिकोपंथ॥१४॥चौपई॥जैनरजिनदर्शन
विनषोंहि॥मरिकरिनरकतीसरैजोंहि॥आठैचौदशसेवैकाम॥वाहिनरकगतिमि

थानोहि॥१५॥धर्मसोईप्राणीप्रतिपाल्य॥औरसकलहैमिथ्याजाल्य॥सातैजीवदया
हैवडी॥छहदरशनमारगमथिकढी॥१५॥षिमाषडगलैकोपनिवार॥कोमलताकरि
मानविदार॥मायासरलाईकरितज्यो॥लोभछाडिसंतोषहिभज्यो॥१६॥मनवचपालै
सीलप्रधान॥परत्रियजानोमातसमान॥जिनवरपूजापात्रदेहुदान॥सज्जनजनको
राषोमान॥१७॥मनवचपाचौपरवीकरो॥निसदिननिजकामनिपरिहरो॥षटप्राणी
कीरछ्याकरो॥चोरीकरिपरदरवनहरो॥१८॥करुहुसकलपरिग्रहपरवान॥यहग्र
हधर्मजिनजीकीआन॥च्यारोसंघकोवाछिलकरो॥हुइविनीतशुभमगपगधरो॥
१९॥यहजिनभाषितधरमकरेहु॥सोनरच्यारोंगतिजलदेहु॥इहविधिधर्मकलोजि

॥२१॥ नराय॥ भयोहरषअतिअंगनमाय।२१।दोहा॥ सकलसाआनंदहुव॥वाणीसुनिमुनि
राज॥मानौमासदुकालमें॥घरमेआयोनाज॥२२॥चौपई॥इतनोकहिकरिजिनवर
रह्यो॥मनोवेगतवअवसरलह्यो॥सोचविचारकहिमुनिराज॥मेरेमनसंसोहैआज
२३॥दोहा॥ शत्रुमित्रसाहवनजर॥देषैसवकीरीति॥जवजैसीविनतीकरै॥यहचतुर
कीरीति।२४॥चौपई॥मनोवेगइममस्तकनाइ॥प्रश्नएकपूछीमनराइ॥मेरोमित्र
मिथ्यातीभयो॥कवहीनधर्मरागमनठयो।२५॥दोहा॥ स्वामीमेरोमित्रहै॥महामिथ्या
तीजान॥जिनवरधर्मपरानमुख॥महाकुमतिकीषोनि।२६॥चौपई॥सोभव्यहैकिअभा
व्यहमकहो॥मेरेमनकोसंसैदहो॥वज्रअगनिसममोतनदहै॥पलकएकचितथिरन

हिरहै॥२७॥हामुऊजनमअकारथगयो॥मेरेमित्रमिथ्यातीभयो॥जोयहसमऊजिन।
वरवाणि॥तौमुऊजनमसफलजिनआनि॥२८॥अडिल्लछंद॥मिथ्यातसमानअंधे
रोहोइनलोईरे॥समकितसुखसमानविवेकनकोइरे॥दुखसंसारसमानसवइसुखर।
हितहै॥पुनिहांसुखसवमुक्तिसमानमनोहरकहतहै॥२९॥चौपई॥वोतेगणधरमधु
रीवाणि॥तेरेमित्रभव्यतेजाणि॥सांचीबातकहीतुमपोहि॥यामेधोषोरंचकनांहि॥३०॥
दोहा॥भव्यहित्वागतशुभवचन॥अभव्योंनसुहाय॥कोरडमृगनसीजही॥गाडेसहस
चलाय॥३१॥सोरठा॥यामेमिथ्यानाहि॥पटणमाहेसमऊसी॥सोचनकरिमनमांहि
॥विद्याधरकेमुकुटमणि॥३२॥चौपई॥जवलगजिनवाणीनहीफुरै॥तवलगआनिव

चनविस्तरै ॥ यावतदिनपतितेजनहुंति ॥ तावत ग्रहगणतेजफुरंत ३३ ॥ दोहा ॥ जिणा
वाणीसुणिकेसकल ॥ समुझैमिथ्यानोही ॥ एकभव्यनसमुझही ॥ कोटिवर्षजोजोंहि
३४ ॥ तेसेदिनपतिउदयमे ॥ सकलकरैनिजकाज ॥ घूघूतिमरचवगुणलहै ॥ ताको
कोंनइलाज ३५ ॥ मुनीवांणीसुनिखगपति ॥ मनआनंदोजोइ ॥ सोआनंदजानैवहै ॥
अवरनजानैकोइ ३६ ॥ चौपई ॥ करीवंदनावारंवार ॥ मनोवेगगुणविद्यासार ॥ वैठिवि
मानचल्योगुणमाल ॥ मिथ्यामतिनुतीषणशाल ३७ ॥ इतनेएकभचंभोभयो ॥ पव
नवेगसनमुखमिलिगयो ॥ पवनवेगवोल्योमुनिवीर ॥ कहागएतुमसाहसधीर ३८
तुमविनदिवसवरससमगयो ॥ भागनदोतुममेलोभयो ॥ सूरजविनदिनतिष्टेकहुं

तैसेतुमविनकैसेरहु॥३९॥दोहा॥क्रीडासरवरवापिका॥देवथानवाजारि॥राजसभा
सारोनगर॥देषैसवैनिहारि॥४०॥पितापितामहपूछियो॥पूछेसकलषवास॥कहुंन॥
तुमसुधिपाईयो॥तवतैचिंतनदास॥४१॥करमभलैमलोथयो॥कहाकहोअवतो
हि॥प्रीतनअैसीचाहिये॥जोपूछतहोमोहि॥४२॥जहांसंतोषसंयमतहां॥यामेझ
ठनहोय॥अैसीप्रीतिसराहिये॥मनवचजानहुलोय॥४३॥अगनितेजहुइपवनै
से॥पवनविनामुरझाय॥अैसीप्रीतिसराहिये॥जानोमनवचकाय॥४४॥देहआ॥
त्माजन्मलग॥मृतिपर्जंतकीप्रीति॥एकपलकनहीवीठरै॥यहवडैकीरीति॥४५॥
पिमप्रीतिशशिसूरकी॥मिलैमासविधआइ॥चंदप्रतापमिटाइकै॥आपप्रतापे

करा३॥ ४६॥ मित्रकलित्रजुकीजिये॥ अरिहंतजीकीआन॥ परा धीनकवरुन है॥ मन
वचजानसुजान॥ ४७॥ प्रीतिसही रुशिसमुद्रकी॥ जानोमनवचकाय॥ मित्रवहै आपुन
वहै॥ मित्रघटैघटिजाय॥ ४८॥ तेरोमुझस्यामननही॥ मेरोचुझकोप्यार॥ झटवत्तद।
कोजोतनो॥ क्योंकरिवनिसीयार॥ ४९॥ सोरठा॥ प्रीतमरसकीरीति॥ देषोपूछोईषयै
रसहीमेविपरीति॥ जहांगांठितहांरसनही॥ ५०॥ दोहा॥ सज्जनएहाचाहिए। सोसम
रससवठोर॥ ईषदंडदुरजननजना॥ गांठिगांठियरओर॥ ५१॥ छपयकवित्त॥ उत्तम।
प्रीतिजलमीननीरविनदेतप्राणवर। मध्यमप्रीतिपयतोयकरतनउपगारपरस्पर॥
अधमप्रीतिनित्यतेलकहुआएतजिडारत॥ तेलअधमस्यों अधमिसूरकविनकज

जारत॥ इहिप्रकारसहिजगतमेमित्रपरीक्षाजानचुव॥एकवीसकुनिसहसमणिकुनि
अनेकमरिरहियभुव।५२॥दोहा॥इनहिआदिविजषिजकही॥पवनवेगवहुवात॥
मनोवेगसगलीसही॥जैनधर्मअवदात॥५३॥चौपई॥पवनवेगकेवचनसुनेइ॥मनो
वेगकुनिउत्तरदेइ।बंदनगयोहोश्रीजिनराय॥विनाकाजहोंफिरेंनभाय।५४सुरन
रइंदननमस्कृतिमाय॥अैसोसोभितश्रीजिनराय॥भावभगतिजुतपूजाकरी॥नर
कपसूगतिदौनोहरी॥५५॥तोविनएकपत्रकनहिरहों॥कारणपायमिथ्यातनकहूं॥न
रक्षत्रसारोममकियो॥पुरपाडलीनगरदेखियो॥५६॥कूपसरोवरवापीबाग॥करहि
कोकिलापेचमरग॥झरणाझरैवहुतअतिभले॥गैरठौरमारगकोचले।५७॥दोहा॥यत्त

थूम आका सत्व गि॥ पूरि रह्यो इम भांति॥ चंचरीक कुल वौम को॥ मन हुं अत्त क की यां
ति॥५८॥ चौपई॥ जहांतहां होत वेद धुणकारा॥ वंभण पढत वहुत विस्तारा॥ वधरी करीते
वहुदिशि सारा॥ नेक न सुनिये वचन अपारा॥५९॥ दोहा॥ वशिष्ठ व्यास वाल्मीक मनु॥ ब्र
ह्मा कहीवधान॥ सुमित जहांसुणिये सुभग॥ प्रीतम मन वच जाण॥६०॥ विदुषफिरेबी॥
थीविधे॥ पुस्तक धरैरसाल॥ अति सुंदर वाणी मधुर॥ मानो सरस्वती वाल॥६१॥ चौपा
ई॥ परस्पर सपरकरैविवाद॥ आतम कोरस नाही साद॥ नानै धर्म गहै जुअनेक॥ ढांडै
नहीधर्म की टेक॥६२॥ मरमछेद नावहु विधि करै॥ मानो शस्त्र योध सोंलरै॥ नेक न
लाजधरहि मन मोहि॥ चलहु मित्र तहांदेषन जोहि॥६३॥ दोहा॥ गामगामपंडित

सुभग शिष वैठे चहुओर॥ मानो अत्रि गणमध्य शुभ॥ पदम विराजत भोर॥ ६४॥ करपा
तग मस्तक मदर॥ मृगकी त्वचा विछाई॥ ब्रह्मचारी गंगा निकट॥ वैठ ध्यान धराई॥ ६
५॥ वादी आवै हरष करि॥ हारि विलषहो हि जांहि॥ जैसे दुनिया ज्ञान को॥ फिरत वहुत
पछिताई॥ ६६॥ अगनि होम घरि घरि तिसहोइ॥ दस पुरिणा ब्राह्मण है सोई॥ निवसइ
तहां वहु तविधि मत्रै॥ नज्ञल वरण जनेऊ गत्रै॥ ६७॥ दोहा॥ मीमांसक मीमांसमति
थापही वारंवार॥ सरस्वति वपु देखियो॥ तामै करणा सार॥ ६८॥ अष्टादश पुराण के॥
पाठी सहस पचास॥ वहुविधि थापही धर्म को॥ दुषइंधन इहु भास॥ ६९॥ तरक काव्य
पदपद विवै॥ ज्योतिष षटकपढंति॥ वाग्देवी मंदिर जिसो॥ असो पुरसो भंति॥ ७०॥ चौ

॥ चौपई॥ केई गंगा करै स्नान॥ दान सहित कर तुलसी पान॥ केई वहु विधि चुभकी षाहि॥ हरि हरि हरि हरि ज्ञा उचरा ई॥७१॥ केई कषाई धोवती करै॥ केई शुभ अंगोछा धरै॥ केइक रुद्राक्ष माल कर लिये॥ केई कंठि तिलक द्वादश शिर किये॥७२ केइक छापा तिलक वनाई॥ तिन समझा मानै वहु भाई॥ केइक पूजै जगदानंद॥ केई कपूजइ वालगोविंद॥ ७३॥ केई कपूजै सालिगराम॥ केइक पूजै सीताराम॥ केई करै राधा पति सेव॥ मन वच काया तजि अहमेव॥७४॥ केई सेवै मदनगोपाल॥ वहु विधि भोजन करै रसाल॥ भगति भगति की दीढता काज॥ करै कियो ते छोडी लाज॥७५॥ दोहा॥ ऐसा धूरत वैसनव ऐसा कोऊ नाही॥ ठाकुर नेवै लाइ करि॥ आप गटा गट षांहि॥७६॥ चौपई॥ केई कशिव॥

कीसेवाकरै॥ अर्कफूलतैआमैधरै॥ फुनिदंडोतकरैवहुवहुभाई॥ विनोभगतिकरित्यागै
पाई॥७१॥ केइकदेवीसेवाकरै॥ गूगुलकाधूआविस्तरै॥ घतैवहुविधिमुंडयकेत्रि॥ नीची
गतिकीवोयोवेत्रि॥७८॥ रक्तचंदनकोटीकाकरै॥ मनमाहैवहुफूल्याफिरै॥ वहुतनारिकों
वेटादेहि॥ भगतजगतमैंकीरतिलेहि॥७९॥ देषतमोवेत्रावहुभई॥ अवरूसकलसुधि
वीसरीगई॥ मैअचिरजदेष्योवहुभाय॥ वचनअगोचरकह्योनजाय॥८०॥ सरस्वतिक
रिनसकेवषान॥ मनुष्यविचारेकहिक्यौंआन॥ कहीसकलमैंसांचीवात॥ षिमाकरौ
मुझकुपरिभ्रात॥८१॥ पवनवेगसवव्यौरोसुनो॥ क्रोधसवैछांड्योमनतनो॥ जोरतमा
सोदेष्योवीर॥ मोहिदिषावोसाहसधीर॥८२॥ दोहा॥ सज्जनविनकहाकीजिए॥ कल्पवृक्ष

कीछांहि॥ श्रीषभटाकसुहावनो॥ जोसज्जनगत्तिवांह।८३। प्रीतमसमज्योकीजिये॥कार
जसवैसमथमोवि नुतमदेष्योजुकछु सोसवमित्रश्रकथ॥८४॥ चौपई॥ मनोवेगवो
त्यासुनिवीर॥नैकस्थिरीकरिसाहसधीर॥दोनोवीरजाहिगेसही॥कोनुकछुमहिदिषा
जेतही॥८५॥ दोहा॥ मनवचकरिविनतीकरी॥पवनवेगसुनिवात॥जुतावलैनपाइसी
तहांगएकुशस्थात।८६। भोजनकरिकैचलहिगे॥आईमनमेदाइ॥भूषलगेजुवप्रीत
मा॥कोतिगजोहिपत्राइ।८७॥ चौपई॥ एकैभाइचलैदोजुवीर॥विद्यासागरगुणगंभीर॥
दोऊकेमनआनंदभए॥वैजयंतनगरीमेंगए॥८८॥ भोजनकरिनिज्ञिनिद्राकरी॥जिन
णीमुखथेउच्चरी॥प्रातभएजागियाकुमार॥जिनपूजाकरिलियोआहार।८९। रचियो।

महाविमानरसाल॥ घंटाघूघूरमोतीमाल॥ चढिविमानचालेगुणासार॥ मानोशोभि
तदेवकुमार॥९०॥ रतनजडितभूषणवने॥ दक्षिणदिशिकोचीर॥ क्षिणमेजाइपहुचि
या॥ पटनैमेहिदोऊवीर॥९१॥ तिनवनमोहिऊतरे॥ वंछितफलदातार॥ नंदनवनशोभा
हरै॥ शोभितवृक्षअपार॥९२॥ ठामिठामितरवेलिकरि॥ वेटिरहेइहभांति॥ कामदेवकेच
हुदिशा॥ मानहुतरुणीपांति॥९३॥ चौपई॥ मनोवेगवोलैगुणधार॥ कौतिगतोहिदिखा
ऊसार॥ जोतूमेरेवचनकराई॥ तोहूंबातकहूंसमझाई॥९४॥ मनोवेगकेवचनसुनेइ
पवनवेगतवउत्तरदेइ॥ जोजोमुऊकहिहोमित्त॥ सोसोकरिहुंहोहिनिचिंत॥९५॥ मनो
वेगसुनिकेश्रुतसाद॥ मनमाहेपायोअहलाद॥ सहीसमझिसीपटलोमांहि॥ वचनजिने

स्वरमिथ्यानोंहि॥९६॥वणिजकाजकछुलीजैवस्तु॥देषेसकलनगरकरमस्तु॥तिणवे
लकरीकोलेसिरभार॥पहिरेमणिमयभूषणसार॥९७॥रूपमनोहरगुणहमंडार॥पट
नैमध्यकियोपैसार॥नगरलोगदेषिचमकाई॥पेषिरहटगटगीलगाई॥९८॥तिनहिदे
षिकरिनगरके॥थकतरहेइहिभाय॥इएवस्तुकोदेषिने॥सबकोंअचिरजथाय॥९९॥
चहुदिशिठाडकोतिकी॥मधिसोहेइहिभाइ॥गुडमेलाकोमल्लिका॥त्यागिचहुंदिशि
धाइ॥३००॥कइयकनरयोकहे॥देषिवरस्परताहि॥सामूषणव्यापारयह॥वडोतमासोआ
हि॥१॥केईनरऐसेकहे॥इनसमठगनहिकोई॥एकअभूषणवेचिके॥सुखीनतीष्टोलोई
॥२॥चौपई॥केईपरस्परकरैविचार॥केखगेंदुकेदेवकुमार॥रतनजडितभूषणबहुधरै॥नो

तिभांतिकी क्रीडाकरै।३॥दोहा॥ केईभव्यऐसेकहही॥छाडहुझूठाऔर॥परचिंताआ।
शक्तता॥तासमपावनऔर।४।तिनहिदेखिपुरयोवितामूलीसकलसयान॥पगिप
गिगिरिगिरिपरेलगेमदनकेबांन।५।सखीसखीसोंयोंकहे॥हूपूछतहूंतोहि॥कामए।
ककैसोइहै॥वडेतमासोमोहि॥६।कोइकतियतिनदेखिकरि।लाजगईविसराई॥कहे।
सखिसोइनवलि॥लीजेवेगवुलाय।७॥फुनिइनसेतीयोकहो॥देखहुमेरेगेह॥त्रिणकाठ
कोमोलसब॥मनमानैसोलेहु॥८॥सोरठा॥इनकोंसषीविशाव॥ज्योंभावैत्योंलेहुगी॥इष्ट
वस्तुकोनाव॥मूरषहोईसोइकरै।९॥दोहा॥ इनहिआदिजिनकेवचन सुनतचलेदोनूवी
र॥वूझसालापहुंचेसुभग॥निर्भैसाहसधीर॥१०॥चौपई॥त्रिणकाष्टरात्यातिहिठौर॥व

हुरिमतातिनकीयोओर॥अतिपुचंडवहुदुंभीवजाइ॥कनकसिंघासनवैठोजाई॥१॥
सुनिमेरीद्विजआएगज॥सवतनिचलैवादकेकाज॥इकगहिलोफुनिलागेभूत॥वो
ननजातक्रोधसंजूत॥१२॥सोरठा॥दाझ्योसकलशरीर॥विद्याधरपहुचेसकल॥वोले
वचनगहीर॥कोवादीआयोइही॥१३॥दोहा॥एकब्राह्मणायोंकहे॥सुनहुसभासवलो
इ॥तरकवादमोसोंकरैं॥तासमओरनकोइ॥१४॥सोरठा॥मोसोरहेसमान॥विद्यावलजे
कोइनर॥नारायनकीआन॥सोवादीमुऊमुकुटमणि॥१५॥दोहा॥सोवादीवहुजीति
या॥एकपयंपयऐम॥जैहूंहारोंइनहिपै॥वादकरणकीनेम॥१६॥वहुतदिवसलगदे
षिया॥शास्त्रसमुद्रगंभीर॥जोमैहारोवृथासव॥सरमकियोसोवीर॥१७॥वादिवृत्तनै

सुजस सफल ॥ वचन दंड करि तास ॥ पाडौ तौ तुम पैव हुरि ॥ भाषे वचन प्रकाश ॥ १८ ॥ वि
द्याधर पहुता सकल ॥ भूजत अधिक शरीर ॥ षडै रोम फरकै अधर ॥ मनहु क्रोध के
बीज ॥ १९ ॥ चौपई ॥ इह विधि ब्राह्मण अधिक रिसाइ ॥ विद्या शास्त्र यंहु चे आइ ॥ मुकु
टरतन मय कंकण हार ॥ मनो वेग देष्या गुण सार ॥ २० ॥ थकतर है मुख पंकज जोइ ॥ अै
सो रूप मनुष न ही होइ ॥ अलप मक्ति वशि दीन दयाल ॥ निश्चै सही मदन गोपाल ॥ २१ ॥
मक्त मक्ति कों देष तफिरै ॥ मक्तिवंत के काज करै ॥ एक कहै सति कहो वषान ॥ निश्चै
सही सची पति जाण ॥ २२ ॥ दोहा ॥ तीजो नेत्र सं कोचि कै ॥ रूप मनूष को साजि ॥ कहै एक
शिव आइयो ॥ पिरथी देष न काज ॥ २३ ॥ चौपई ॥ कैय हु श्री विद्याधर होय ॥ कैय हु काम दे

वहि कोइ॥ ब्राह्मण एक सकल गुण खांनि॥ तिन मधि वोले मधुरी वाणि॥२४॥ वात हमारी हि
दैधरो॥ विना काज क्यों चिंता करौ॥ तुम पंडित जानौ वहु भेद॥ काहे करौ आपनै मनखे
द॥२५॥ दोहा॥ विद्यामान यहु पुरुष है॥ पूछो क्यों नहीं याहि॥ करकंकण दरपण मुगध।
लेकरि देख्यो ताहि॥२६॥ चौपई॥ वाद पुंज वादीरहै कोइ॥ वाद करण आयो है सोइ॥ या
सो प्रश्न कीजिये वीर॥ देखो विद्या गुण गंभीर॥२७॥ जोयह वाद करै परचंड॥ सोई बाद करै
शतखंड॥ सर्व शास्त्र को जाणै हीर॥ कौन धरै मुऊआगै धीर॥२८॥ दोहा॥ इहविचार वा
मण मनो॥ सत्य कहो तुम राज॥ कहां रहो आए को नहो॥ आए हो किस काज॥२९॥ जोइ
छा है वाद की॥ विद्या गुण गंभीर॥ जिस्यो वाद तुम थापिस्यो॥ सोई करि हो वीर॥३०

चौपई॥ एती सुनिवो त्योख गवात्त॥ सुनियो मेरे वचन रसात्त॥ निरधन मद हुमारै
तात॥ सीलवंत जग मधि विख्यात॥३१॥दोहा॥ ता मट को हूं पुत्र हुं॥ जान हु मन वच का
य॥ तिण त्या कडी वे च करि॥ उदर भरै दुष पाइ॥३२॥ वादन ना मजा णै नही॥ कला कहावै
वाद॥ जन मपाइ करि अवसुणे॥ तुम मुख सोंय हु साद॥३३॥चौपई॥ वादन जाणहिं गु
णगंभीर॥ को सिंघासन वैठो वीर॥ को निसा न वजा एगाज॥ वैठो सकल अभूषि।
ण साज॥३४॥दोहा॥ यह गुण सिंहासन चढै॥ मत सैदेष हु जोय॥ सेस नाग के घर विषै॥
मेंडुक पैठो कोइ॥३५॥ व्यापारी तिण काठके॥ भूषण वने अमोल॥ अेसे क वहु नवो त्रिये
॥ धूरत झूठै वोल॥३६॥ पगनोंगे कपडे पटे॥ वात न पूछै को इ॥ उदर भुस वूर सों॥ लक

रीवेचइसोइ॥३७॥मदनकांतिभूषणाश्रुभग॥वन्योसवहिसुखसाज॥हीनवातमु॥
खतैकहत॥मूढनआवैलाज॥३८॥सोरठा॥सौझूठैकैकाम॥सोएकैचुमतैसरै॥मन
वचकरिअभिराम॥अरेविदेसीझूठनिध॥३९॥चौपई॥असेवचनसुनेवरवीर॥वोत्यो
खेचरगुणगंभीर॥विनाकाजकोंकोपकराइ॥विनअपराधनागनविषाइ॥४०॥दोहा
रामायणभारतविषै॥सूरवीरअभिराम॥बडेबडेराजाभये॥करेअजुगतेकाम॥
४१॥भारथरामायणविषै॥तोसमानयतरुद्धि॥धूरतहमहिवताइये॥महाझूठकी
निधि॥४२॥वातकहतपणिडरोहों॥सत्यजाणिद्विजराज॥चुममधिकोनविवेककि
कीजै कौनइलाज॥४३॥सोरठा॥॥वोऽसमुदीन्यायकरै॥सांचतैझूठजैनि॥जाणहु

मनवचकाय॥ तातैडरप्यो भूमिसुर॥ ४४॥ मुठीघोउशन्याय॥ कोनठौरकोनैकरी॥ तेरे
पकरेपाइ॥ सोहमसों ब्योरेकहो॥ ४५॥ चौपई॥ देशमालवोसुवसवसै॥ मंगलपुरतहां
अद्भुतत्वसै॥ तिहांगृहपतिकिशनवषान॥ मधुकरपुत्रतासकोजान॥ ४६॥ एकैदिवस
पितासों लखों॥ सदनछारिवाहिरनीसखो॥ भ्रष्टभयोसोधरणीफिरै॥ कहाकहानक्रो
धतैकरै॥ ४७॥ अनिरदेशमेपहुंचोआय॥ मिरचरासिदेवीवहुमाय॥ तिहांदेखिकरि।
अचिरजभयो॥ अवरसकलदुखवीसरिगयो॥ ४८॥ तिहपुरकोभुनकरणप्रधान॥
पूछतताहिदेइकरिमान॥ कहातमासोदेख्योवीर॥ चकितभयोचितरहेनधीर॥ ४९॥
सुनिमधुकरउत्तरदेताहि॥ वडोतमासोदेख्योआइ॥ मिरचरासिदेवीमेइहां॥ यौंचना

रासिमो नगरीतिहां॥५०॥ कर्णसुनौ अैसो भाषियो॥ होइक्रोध युतनृत्तरदियो॥ अद्भुत
झूठ कह्यौतैधूत॥ मान्यौनोहिलग्योहैभूत॥५१॥ दोहरा॥ मिरचरासिसमचिणाकासाच
कहीहैलोड॥ नासमझूठोकोनही॥ जोढूढोवृत्तांड॥५२॥ करणिकह्यो वांधोइसे॥ नारायण
की आण॥ और ठौरमूरषइसो॥ झूठनकरैवषान॥५३॥ करणहुकमतैवांधियो॥ नानादु
खसहंति॥ असंभाव कैभाषतां॥ वंधनकोनलहंति॥५४॥ चौपई॥ केईद्यायूतव्यो॥
व्योऐह॥ जैसागुणहतिसोदेइदेइ॥ वहुतकहाकीजैतिसराडि॥ परदेसीकोदीजैछां
डि॥५५॥ सोरठा॥ देहुपठाईतास॥ अष्टमुष्टिवहुजोरसों॥ करैनफिरउपहांस॥ अैसीक
हुपुरषसों॥५६॥ अैसेसुनिकरिवान॥ दयावंतकेमुखथकी॥ देकरिमूठी आठ॥ ठोग्रोम

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

धकरवापडो॥५७॥वडोनकामयोएहु॥मूकीठटौआठही॥जीवनसौसंदेह॥मूरषमै
सतभाषियो॥५८॥चौपई॥फिरकरिमधकरआयोतहां॥मंगलनगरपिताहैजहां॥
देषीचिनारिकतमही॥पहिलीवातइहांतैकही॥५९॥वहैदंडपायोइहठांहि॥
मुरखकिछूविचारैनाही॥तातैसमुझिकीजियेकाम॥दरवजायनहीछीजैचाम॥६०॥
सोरठा॥षोडशमुद्रीन्याय॥हैप्रसिद्धतिहुलोकमै॥जानहुमनवचकाय॥सोसवमेरु
मसोकही॥६१॥सत्यवचनजोहोइ॥साषविनाझूठैसवै॥तातैसाषिकलीय॥वचन॥
भाषियोपंडिता॥६२॥दोहा॥असत्यवचनहैसाषिजुत॥तामानैसवभ्रात॥पहिली
साषीकीजीये॥तवकाढीजैवात॥६३॥सोरठा॥करैप्रतीतनुलोइ॥सत्यवचनअसत्य

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

हुइ॥मनमेदेषोजोइ॥वचनसोईमुखभाषियै।६५॥दोहा॥हुईमुनीदेषीप्रसिद्ध॥सो।
ईकहियेवात॥कहैमनोहरवातयह॥जेचाहैकुसलात।६५।तातेश्रविचारीविषे।वा
तकहोजोतोहि॥मषकरकैसीआपदा॥परैआयकैमोहि॥६५॥सोरठा॥पूरवश्रपरवि
चार॥जानैकोकुसतिपुरुष॥तासौवचनसुसार॥कहियेहिरदोषोत्तिके॥६७॥चौपई
खेटपुत्रकेवचनसुनेइ॥फुनिश्रवनीशउत्तरदेइ॥करिविचारमनषगगुणषानि
रहितविचारपभुसमजोनि॥६९॥करणसमानगिणेहमसोई॥हंससमानकागन
हिहोइ॥हमहंसवैन्यायगुणसार॥पूरवश्रपरविचारणहार॥७०॥योग्यवचनतुम।
भाषहुवीर॥हुइनिस्संकहुगुणगंभीर॥साचवचनमुखभाषैश्रेन॥तुमआयौवि।

धाकीसैन॥७१॥दोहा॥इसेवचनसुनिविप्रके॥वोल्योखेचरनंद॥श्रीजिनपदसेव
तनमरा॥दयाधरमशुभकंद॥७२॥रुक्षदुष्टमूरषहठी॥पीतरोगहोइतस्य॥आंवश्रगु
रुठेदीचंदन॥षीरतजोसठदस्य॥७३॥मूरषदसकीकथासुनि॥मुऊकुंउपज्योसो।
चि॥जोतुमसुणिमुऊकोंउठो॥मारणतोहोयोच॥७४॥चौपई॥इनसरीषोजोतुममै।
होइ॥वातकहतहोंडरयोंसोई॥भलोकहततुममानोबूरो॥कहुतुमेसवजोतुमकरो॥७
५॥दोहा॥धरमवंतपंडितकुत्री॥सोतरहितपषपात॥क्रोधलोभमायाविना॥पंचसेसु
निम्रात॥७६॥मुखआगइधर्मकी॥वातकहतदुखखोय॥पानकरीजेसर्पको॥दूधम
हाविषहोय॥७७॥परवतनपरिकमत्यजै॥पावकमधिहिमहोइ॥कालकूटअमृतरहै॥

सठसुवुद्धिनहीलोइ॥७८॥जेतेदशमुरखकहै वल्लपयंपैऐव॥तिनकीकथासुना
वहो॥ठाहिसकलअहमेव॥७९॥चोपई॥मनोवेगवोल्योगुणषांन॥कथासुनोद्विजध
रदेकांन॥रेवानदीतटदक्षिणादिशै॥सामंतपुरतहांअद्भुतवसै॥८०॥वहुधानिकति।
हिपुरवास॥सुंदरहरिणीद्वैतियतास॥मानोंसायरकांठीमथी॥शिवज्यों गौरीनागीरथी
८१॥पाइकुरंगणिनवतनदेह॥वृद्धतरुणिसोतज्योंसनेह॥मनमैंवहुतकरेसंताप॥
कछुनवसायरहीविलपाय॥८२॥सोरठा॥सरसविषेकोपाइ॥मुरखकोसेवैविरस॥ठा
डीमनवचकाय॥वृद्धाकामिनिसुंदरि॥८३॥दोहा॥पुत्रत्वेइकरिजुदीहुइ॥सुंदरिमो
वचमांनि॥कलोरमणिमैमाणियो॥महाशीलकीषांनि॥८४॥अहवयतदशधेनदिय

दैहा त्री दैदास॥ इतनो देइ जुदी करी॥ रही भुवन इकवास ।८४। नवतन यौवन हिरणि।
को॥ सोहै वहु विधि तास॥ करै मुगध हरणी सहित॥ नाना भोग विलास ।८६। चौपई। मत
वाला ज्यों मोहि तरहै॥ वचन कुरंगी के दृग सहै॥ फिरि नर दीनो नहि जाय॥ कामी वच
नन्यों परो लजाय॥८७। दोहरा। याइ कुरंगी यौवना॥ नवतन मनवचकाय॥ अपनो जी
वन इंदु तै॥ मानै सठ अधिकाय ८८॥ कवै नतरुणी वृद्ध संगि॥ समुझे षि मन मांहि॥
जरी किनारी कावली॥ जीरण शोभित नांहि॥८९॥ वृद्ध पुरुषी योषिता॥ छांडि नेवी सेवंति। व
हुती वीडावापडो॥ अहनिशि सोइ सहंति॥९०। सोरठा॥ वृद्ध पुरुष को काल॥ तरुणि तरुणी
कामिनी॥ करजो काम संभाल॥ वहु वूढो जो पुरुष हुइ॥९१॥ चौपई॥ जो वृद्ध तरुणी संगि रहै

तुछ दिवस मैयम पुरत्न है॥ जैसा नुत्ना भूपरि गिरइ॥ ता कौतन देषत सवधिरइ॥ए२॥ सोर
ठा२ द्व पुरुष के प्राण॥ नवतिय पै को तोरहे॥ वज्र अगन संगजान॥ कवत्न गीति है सूकत
स॥ए३॥ दोहा॥ वदन कुरंगी तामरस॥ सनेह सूरकरि जान॥ परपत्नति अहनिशि करै॥ प
रमेश्वर की आन॥ए४॥ चौपई॥ सुखस्यो कात्न जात सुखपाइ॥ कहै मनोहर मनवचका
य॥ एकदिवस करमके भाइ॥ वहुधानिक नृपत्तियो वुत्नाय॥ए५॥ एकभूमिये की यो जो
र॥ सकत्न देशमेंचात्यो सोर॥ त्नेहुकटक सामग्री सार॥ होन तयार नत्ना वो वार॥ए६
पाइत्ना गवि डोभ्रमत्तियो॥ करिडोत घरिकोग मुकियो॥ त्रिय अत्तिंगन टेवहु माय॥
मीठी वात कही समुझाय॥ए७॥ दोहा॥ तिष्टकुरंगिनिजेहनिज॥ संकन करिमन मांहि॥ सु

All Rights Reserved - Shri P.K. Jain
Siddhanti Library, Ajmer

खअर्थभूपतिवचन॥मनवचत्योप्योनांहि॥९८॥भूपकह्योमोहीवोलिकरि॥अरिवसि
करतुमजाइ॥मैनृपवचसिरपरधस्यौ॥एथिवीपतिकोराय॥९९॥इसेवचनसुनिर
मणिके॥हुईसचिंतमननारि॥मायाजुतगदगदवचन॥वोलीकरिमनुहार॥४००॥चौप
ई मोहूकोपुत्रीजैसाथ॥योंहीजीवनकोफलआथ॥तुमवियोगहूंकैसैरहू॥मनकीवा
त कौनसोंकहो॥१॥दोहा॥तुमदेषततनकोंदहौं॥अगनिप्रज्वलतीमांहि॥तुमवियोग।
पापीमदन॥मारैसोमत्योनाहि॥२॥चौपई॥एककिनीमदनमोजानि॥मारैअवसिपंचस
रतान॥सरणरहितहिरणीवनमांहि॥हनैसिंघकछुमिथ्यानांहि॥३॥दोहा॥सुखीहोईम
सोईकरै॥मतितरसावोजीव॥मेरोभीजीवनशुभग॥यमपुरजैहैपीव॥४॥जोगछहिंतोग।

छवीय ॥ वहुगुणवंतानाह ॥ साजीहाश्तखंडकरि ॥ सोयोकहोकिनाहि ५ । इसेवचनसु
निनारिके ॥ वोल्योमधरीवाणी ॥ स्थिरीहोइघरआपने ॥ रहोमहागुणखानि ६ । चौपई परि
लखनात्योलुपहैभूप ॥ तेरोनवतनदेषिस्वरूप ॥ लेकरिदेहधरिमहितोही ॥ अद्भुतनारि
होइदुखमोहि ७ । सोदुखहुंतवकासूकहुं ॥ तुमवियोगकैसेकरिरहुं ॥ हाथीहोइहरि
हाईकरै ॥ नृपतिअन्याईविषेसंचरै ॥ तिनहिनिवारइकोकामिनी ॥ हमकूंअइसी
आइकैवनी ॥ तोसमरूपओरनहीधरै ॥ देषतघरवारैनीसरै ९ ॥ दोहा ॥ कामिनी
इससंसारमै ॥ इसोनकोसमरथ ॥ एककनकइककुचनकों ॥ जोनयसारैहथ १० ॥
नीतिभांतिकीसीषदे ॥ यामैमिथ्यानाहि ॥ चंत्योकटकलेकामरति ॥ जीवकामिनीमां

हि॥११॥ चौपई। जैसैसुन हौसुनहीपाइ॥ तासोभोग करैअधिकाइ॥ तैसैकामीकामिनि।
पाइ॥ सुरपतिसमतिसआपकहाई॥१२॥ गोअस्तिज्योंकूकरिगहै॥ फाडमासतनतो
कूवहै॥ ताहिचाटिमानैसुखरत्ती॥ विगसैजेमकुसमकीकत्ती॥१३॥ वायसदाषछां।
डिवहुभाइ॥ विष्ठाऊपरवैठैजाइ॥ कामीतिस्योइसोजगकह्यो॥ तातैआपसमऊिक
रिरह्यो॥१४॥ दोहा॥ रूपकूरूपगिनैनहीं॥ कामीहोइजिकेइ॥ जोजिहिकेरंगराचियो
॥सोईसुंदरित्योई॥१५॥ सवइयाइकतीसा॥ वायसकेभावैंजैसैनीवकीनिवोत्तीदाष
॥स्वानकेनीयैंजैसेकरैंकचचोररगरातहै॥ हिंसकेभावैजैसेजीवहिंसासेतीरतजी
वनकोदेषिदेषिदौरिदौरिषातहै॥ सूकरभावैंजैसैपुरीषपकवानत्योटिकरित्योसैजै

सेगदहमदमातहै॥दुर्जनकेभावैज्योंपरायोवुरोषीरषांडविषैकेभावैत्योहिविषैसुख
सातहै॥१६॥दोहा॥ गयेमंत्रतारसुयापिनी॥मनमथवसलेजार॥तिनसेतीदुःकृति
करै॥गिनैनरयणिसवारि॥१७॥चौपई॥भोजनदरवबसनबहुभाय॥मोदिकवस्तुव
हुदेइकराई॥यारपुरुषमुहआगेधरै॥काममनोरथपूराकरै॥१८॥सोरठा॥जाकोंदीनि
जदेह॥षटरसपोषेसोपैतासकों॥जाकोंविसोसनेह॥जारपुरुषकोंधनदियो॥१९॥
॥चौपई॥दिननवदशमेषातीभई॥निशीजागनकीचिंतागई॥नृपभंडारषीनधनही
न॥मूसेफिरैविचारैदीन॥२०॥दोहा॥जहांतहांपेदीफिरै॥लगेचहुंदिशिकैल॥मद
नारतिगोकेपिछै॥मानोमातेबैल॥॥२१॥सोरठा॥आपआपमेंघेरि॥सबधन।

लीनो लूटिकरि। जैसे नृपथवेरी॥सवकोई झाड्रोचहै। २२॥दोहा॥ पियआगमसुनिस।
तीको॥वेषधस्योघरमांहि॥रहै लाजयतपापनी॥सहजमिटै त्रियनाहि। २३। हरिह।
रवूला चक्रवर्ति॥हुएवुद्धिकलहीन॥शक्र आदितियवसिपडे॥मनुषविचारैकौन॥
३४॥चौपई॥ नृपतिकाजसगतोसाधियो॥वहुधानकघरकोगमकियो॥आगैकिंकर।
पठयौनाम॥चुरतत्रियोआपनविश्राम॥२५॥किंकरजाईजनाईसार॥भोजनकरैन।
लावोवार॥नृपतरदीयोकरीमनुहार॥कामिनीचरितविचारैनारि। २६॥दोहा॥ पहुपव
तीभईआजुही॥देषहुकर्मविकार॥वहुतदिवसपियआइयो। जीवनप्राणआधार। २७। चौ
पई॥ करणरसोईकगतोनही॥सांचवातमैतोसोंकही॥मनमेदषोहियेविचार॥लोकवा

दमेटीयनिकार।२८।दोहा।आवतोमेरोकह्योकरि॥सुंदरिकेघरजाइ॥प्राणपतीकोंयोंक
हि॥भोजनवेगकराइ॥२९॥ताकीआज्ञालेइकरि॥गयोसुंदरिगेह॥प्राणपतीपियआइयो॥
भोजनवेगकरेह।३०॥चक्रितभईतेवचनसुनि॥वडोतमासोमोहि॥भूल्योघरकिधो।
सोचहै॥पूछतहोंसवतोहि।३१॥किंकरफिरिनुत्तरदियो॥कह्योकुरंगीमाइ॥गकुरको।
सुंदरिसदन॥भोजनवेगिकराइ।३२॥सोरठा॥प्राणपतीकेसाथ॥सज्जनजनवहुन्यो
तिया॥वहुतदिवसतेहाथ॥आयोमेरोप्राणपति।३३॥चौपई॥वहुधानकइतनेआइयो॥
सदनकुरंगीकेगमकियो॥निर्मलगगनसमदेख्योगेह॥मुगधकुरंगीसोधतनेह॥३४॥
॥दोहा॥देखिकुरंगीमुखकमल॥अतिसंतोषभयोताहि॥चक्रवर्तिघरतेअधिक॥देख्यो

मुरखजाय।३५। अंधरोगकुंप्रीतमा॥नानाऊषधिहोइ।रागअंधज्योंपुरषहै॥ताहिनऊ
षधीकोइ।३६। घूघूदिनदेषैनही॥कामनदेषैरातिं॥कामअंधदेषैनही॥क्यानिशाक्या
परभात।३७॥चौपई॥रागीधर्मअर्थशुभकाम॥हेयाहेयवस्तुअभिराम॥अर्थनाश
अरुदुकृतिकरै॥जानैनहीमोहवशिपरै।३८।रागअंधकोकैसीलाज॥मृगधपरिहरै
आतमकाज॥धर्मकाजकुछोडीअभाग॥पापविषेअतिहीअनुराग।३९।रागअंध
छिनमेविनसंति॥वनसीविचज्योंमीनमरंती॥पापउदैआवैतिसवार॥जिमजियका
हैवारनपार।४०॥दोहा॥यगतायगतनजानही॥त्यगैकामजववाण॥जैसैसारंगना
दवसि॥देइतत्तणप्राण।४१॥चौपई॥रकतदेषिसठहोइउदास॥दुर्जनदेषिकरैउ

CENTRAL JAINA ORIENTAL LIBRARY ARRAH
All rights Reserved © Shri D.K. Jain

पहास॥ ऐसो विटतो जाणसुजाण॥ रागनकी जैगुणहिनिधान॥४२॥ रागअंधअतिहु
रीसठआहि॥ इकटकमूढरहेमुखचाहि॥ षिनइकतिनत्रीयोविसराम॥ वचनपयंपै
फुनिअभिराम॥४३॥ वेगकुरंगीभोजनदेहु॥ कौनकाजतुमविलंबकरेहु॥ वहुतसनेह
हप्रीतिथीतोहि॥ ऊठहुकरहुभोजनअवमोहि॥४४॥ दोहा॥ सुनिवचवोलीपायनी
॥नकुटीनीमचढाय॥ मानोयमकेधनुषको॥ गुणत्यागेदुखदाइ॥४५॥ सोरठा॥ जा
निजमातागेह॥ भोजनजहांकराइयो॥ तिहस्योंवहुतसनेह॥ तिहतुमपास्योपुत्र॥
सम॥४६॥ चौपई॥ सुंदरिएवांतेसवसुणी॥ अतिदुखपाईभईअणमनी॥ पतिहित्यागवै
दोषहजार॥ जिहियोषितजीत्योभरतार॥४७॥ आपपापिनीदुःकृतकरे॥ दूषणदूषर

मणि शिर धरै ॥ वाहि दोष नहि मन वच काय ॥ काम णि मूत्र स्वभाव न जाई ॥ ४८ ॥ सोरठा ॥
सीष सुनो यह मूल ॥ जो आपनो चाहै भलो ॥ तिय शिर दे करि धूलि ॥ ज्ञानी निज कारज क
रो ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ एवाते सुंदरि कही ॥ अपने मन सो आप ॥ देषो प्राण पती विषे ॥ कौने आ
यो पाप ॥ ५० ॥ चौपई फुनि सो पापी वाही ठौर ॥ गडो मूर्ति गयो सब उर ॥ ज्यों ज्यों त्रिया न
वै जिभि काइ ॥ सब मादिक ज्यों मन मुख जाई ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ वाघ णि ज्यो तरसावई ॥ करती ।
मोहरसाइ ॥ सब तन कांपै वाग ज्यों ॥ अवर न कछु वसाहि ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ पापी मुख ।
तेवो तन मरै ॥ मीनी तें ज्यों मूसो डरै ॥ करि करि पापी मन मेरी स ॥ गिन गिन पन ही मारै
सीस ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ धन्य दिवस है आज को ॥ सत्य कहत हो तोही ॥ तेरे पग की पानही क

हांसीसमुखमोहि॥५४॥मेरेशिरकीकछुनही॥देषोंतेरोयान॥मतकोछाड्योपरोहुइ
॥महासगुणकीषांनि॥५५॥चौपई॥ हाहाकरिकरिपावनपरै॥दीनवचनवहुविन
तीकरै॥तुहीकोपकरैजोवात॥तोमेरोकहिकोरषपात॥५६॥दोहा॥ मोगरिवप
रिद्याकरि मनकोरोसनिवार॥कीडीऊपरकटकगुण॥करैनजत्नमनार॥५७॥
वज्रअगनिकेसहनको॥धीरवहुनहिंलोइ॥कामणीभ्रकुटीभात्रअति॥ताहिसहै
नहिकोइ॥५८॥दुःशीलामहिलामहिल॥सहीपुरुषकोंकाल॥तातेंकुटिलाकामि
नी॥छाडोसमझिदयात्र॥५९॥फुनिवोलीसोपापिनी॥छाडिहमारोनेह॥पाषंडीपाषं
डतजि जाहिसुंदरिगेह॥६०॥चौपई॥तियकोवचनसीसपरिलयो॥कांपतसुंदरिकै।

घरगयो॥ सुंदरि आवतदेषनाह॥ ऊचो आसनदीनोताह।५१। पगधोवनकों तातोनी
र॥ धोवटि कोंदीयो शुभचीर॥ गदीदई कथीपातनी॥ वंदनचौकी शोभाथनी।५२। टो
कनगरकी थालीदई॥ मानोविधिआपणिनिरमई॥ मेवा भांति भांतिकेदिए॥ तामै।
वहुतसात्वनेकिए॥६३॥ घेवरपंचधारीत्रापसी॥ तिमजिमतामनहुइअतिघुसी॥
मूगमंडोवरकीनीदालि॥ भातपरोस्योंसुगंधिशालि।५४॥ सुरभिघृतमहानिरदोष।जि
मतांहोइमहासंतोष॥ शिवरणदहीघोलिवहुषीर॥ क्रिपणदेषमनथरैनधीर।५५
दोहा॥ हितमतिमचीकणमधुर॥कोमलत्रादयाटारि॥ भोजनभुंजहुभविकजन
॥बोलोवचनविचारि।५६। मुनिचितसमनिर्मलशुभग॥ भोजनशोभितथालि॥हुइवहु

All Rights Reserved © Kirti Bhandar

विनयसनेहयुत॥ नमीठात्रतवात्री॥६७॥रुचिनहीतैमुगधकौं॥भोजनभाजनमांहि
ज्यौंजिनवचनअभव्यकों॥मूत्रसुहावैनांहि॥६८॥मुरख मुखमैंग्रासले॥चहुदिशिथि
तैवैएम॥मानोठगमूलीखई॥भूलिजाईसुधिजेम॥६९॥सोरठा॥भोजनभाजनमांहि॥ता
हिनदेषमूढमन॥यामोधोकोनाहि॥रागतिमरछायेनैन॥७०॥चंदमूर्तिआनंदकरि॥
ज्यौंपयोधकोनार॥ज्यौंतुमभोसुखवढिनी॥हियारदेषिविचार॥७१॥दोहा॥तोविनका
हुतरलीकी॥देषणकीहोइहोस॥मुझकोंमनवचसुंदरी॥तेरेपगकीसोंस॥७२॥चौपई
इहविधिसठमूकैर्जसास॥इकटकजोवैमुखमैगास॥अभिप्रायजाणोमनतनो॥पूछै
ताहिमानटेइघणो॥७३॥सांचवातहमकहीतूंसही॥भोजनकेतोहिभावैनही॥ऐसोव॥

चनकह्यौ तवनार॥ तवहंसिवोल्यो मुगध्धगवार॥७४॥ दोहा॥ मनप्यारेभोजननही॥ मे
ल्योकह्योकरेइ॥ त्रघुत्रियपैभोजनकछू॥ मोहिआनिकरिदेहु॥७५॥ चौपई॥ सुंदरिसु
निपियकेवचसार॥ सीत्रवंतनहीत्योयेकार॥ त्रघूत्रियसदनततक्षिणगई॥ होइवीनी
तवाणीश्रुनचई॥७६॥ सोरठा॥ देहिकुरंगीमोही॥ भोजनपियकोजोरुचै॥ हूपूछतहूंतोहि
भूंजाल्योपियकीप्रकृति॥७७॥ दोहा॥ सुनिवोलीसोपापनी॥ जनतरदीयेताहि॥ नानाविध॥
भोजनसबी॥ तेरेघरमहिआय॥७८॥ चौपई॥ विरधगोकागोवरल्याइ॥ याकेभाजनमेल्यो॥
आइ॥ जोवहुरुचिकरिगोवरगहे॥ तोमेरेसवत्रवगुणसहे॥७९॥ यहविचारगोवरलेनारि
दीयोपियकोकरिमनुहार॥ सुंदरिवहुतविनैकुनिकियो॥ गोवरभाजनमेमेलियो॥८०॥ ता॥

All Rights Reserved © Shri P.P. Jain Shwetambar Library, Amritsar

हिमषनलागेमठधाइ॥जैसेसूकरविष्ठाखाई॥देषेमदनकामकीरीति॥मलोछारिकैग।
हेअनीति॥८१॥दोहा॥यामैकछूअचिरजनही॥कामीगोवरषाई॥जोनिकामिनीस्वान
जिम॥चाटैमनवचकाय॥८२॥चौपई॥नासतितीनभवनमैलोई॥कामिनीवसहुइकरै
नसोइ॥अमिषअपावनत्रियवसिषाइ॥गोवरपावनजगमैजाइ॥८३॥हाहाकारकुटंबी
करै॥अंभुपातनेत्रनितैझरै॥मुरखगोवरसमलोषाई॥पौलीनीतरवैठोजाय॥८४॥
घरकोवांमणात्रियोबुलाय॥जायकुरंगीकुंसमजाय॥मोपरिकोपकरैकिहकाज॥व
रसवरावरदूवोआज॥८५॥जैमैवहुतकियोअविचारि॥सवअपराधिमोभुमनारि
॥हमपरिद्याकरोसुषसैन॥दर्शनदेमुखभाषोवैन॥८६॥दोहा॥सुनेवचनयजमान

के॥ वोल्यो करि मनुहारि॥ इसो दोस को नहीं॥ जो न विदी सैनारि॥ ८७॥ दोष फिरै थावा
पड़ा॥ हांडत घरि घरि वार॥ विधि ना इन पैदया करि॥ लेनि रमा पीनारि॥ ८८॥ चौपई॥ म
फरव चनवो लै हित जिमी॥ कोयप्रस्ती कुत्ती तिमी॥ वछा देषि करि घर मैडरै॥ पंचानन
सों कीडा करइ॥ ८९॥ मूसी देषि डरै कामिनी॥ सोवै शिर तल दे नागनी॥ सव अनर्थ मूल
की षांनि॥ विष संयुगत सर्पिली जानि॥ ९०॥ अकीर्ति हित ये नारी कही॥ विसवेली की नत
पति मही॥ षोटी नत पति की तिय षांनि॥ तमता पति ज्यों यामिनी जानि॥ ९१॥ शील रतन
की चोरन हार॥ संध्या जोरागिनी गवार॥ छाया जिम एग ही न जाइ॥ वह्नि ज्वाला ज्यों ना
पकराइ॥ ९२॥ अस परसनि सुनि ही जिम कही॥ कहैम नोहर मिथ्या नांहि॥ पापकरम कर

तीनहिसकै ॥ जोमनमानैसोमुषवकै ॥ ९३ ॥ अमृतसमनरताकों छारि ॥ नीचपुरुषविषसे
वनहार ॥ घोरवीरसाहसअनिधरै ॥ डरैनत्राजैदोऊकुलहरै ॥ ९४ ॥ षिणकसुभावदामि
नीजेम ॥ आमिषमद्यणनाहरीतेम ॥ सकरीसमएचंचलजानि ॥ सकलआपदाषानि
वषानि ॥ ९५ ॥ विसटकडीजिममषरीजाणि ॥ सेवनकरैप्राणकीहांनि ॥ आपणदो
षअनेकजुकरै ॥ नाहिरमणशिरदूषणधरै ॥ ९६ ॥ दरशनबुद्धिपासनवलजाइ ॥ भोग
करतसठप्राणगवांइ ॥ परतषएकामिनीरषसी ॥ मदनपुरुषकेगलेकीफसी ॥ ९७
महामसाणकाजलनीचही ॥ रागीपुरुषनरककीमही ॥ घणोघणोकोकथैजंजाल ॥
गोहकुरंगीनेरोकाल ॥ ९८ ॥ कोलोचरितकहयजमान ॥ गुडदिषाइकरिकाटैकान ॥ से

कलदरवतोहिजारनदियो॥ काममनोरथपूरेकियो।९९॥इसीदुष्टनहीकोजगमोंहि
प्राणहरतयाकोंसंकनाहि॥ जोइसकोंपतियावैकाइ॥ताकौवहुतजगतदुषहोइ।५००
सवईयाइकतीसा नीनहित्रिलोकवीचजेतीहैवनासपतीलेषिणीसवारिताकीकरिकैध।
रातनू॥तीनहूत्रिलोकवीचजेतेहैसमुद्रनहीपरवतकीस्याहीकरिआणिकैभरतनू॥
तीनहूंत्रीलोकवीचपरीहैजुजेतीभूमिताहीकेसवारआठेपत्रलेकरातनू॥ शारदासह
सकरिकरिकैलिषितसदाकामिनीचरितनौजुलिषैनपरतनू।१॥कवित॥ एकआपु
छवातवनिताकीझूठेपेमपियामुखलावै॥एकहीकहैतुहीमुझप्रीतम॥एकहिवेगसंके
तवुलावै॥एकओषिदैइकरिवाकीएकसुरतसमप्राणवधावै।कुटिलस्वभावकुटिलग

तिजा की॥ झूठो सो जति या पति यावै॥२॥ दोहा॥ नारी नागिन सारिखी। मति को करहु विसास॥ जियो चाहै को इक दिन॥ कहै मनोहरदास॥३॥ सिंहणि तसकर राषसी॥ घर मैं दुष्ट नारि॥ हरै तत्छिण प्राण कुं॥ मन मैं देषि विचार॥४॥ इसे वचन सुणि विप्र के। हित कारिसु खदानि॥ सकल नाय त्रिय सों कही॥ मूरख विकल अजाण॥५॥ सोरठा॥ वात कही सब ढुढ॥ जो बाभण पूरव कही॥ वो भण को घर मूढ। षोयो राष्यो भीषते॥६॥ दोहा॥ सुणि वो त्रीसा पापनी॥ दुराचार की षांनि॥ स्वामी द्रोही तदुष्ट है॥ मनवच क्रम करि जाण॥७॥ आप अन्याई जगत को॥ हम हित्वगावै हि दोष॥ जोंका ढोगे हते॥ तो मो हि तो हि संतोष॥८॥ चौ पई॥ यहसु नित्रिय को कह्यो करेइ॥ काज्रो विप्र मत हथा देइ॥ गुण करतां औगुण कोंगहै

सोनरजगतमांहिदुषमहै॥ए॥ दोहा॥ अविवेकीसोधर्मकी॥वातकहैमतिकोई॥दूध
पिवावैसांपकों॥हालाहलविषहोइ॥१०॥शुद्धउपदेशनदीजिये॥रक्तपुरषकोंआणि
॥चिडियाकपिकोकथनहै मिथ्यातनजगजानि॥११॥सवइयाइकतीसा॥क्रोधकरि
जुद्धतअरुणनैनहोइरहो कोकित्समानकंढषिमातेषिमाईहै॥पटकिरफनचलत
पवनजेमफुकारकीज्वालाकरिअवनितपाईहै॥असोअहिउसेताहिठोरठोरसेती।
वैदधर्मकेहेतआइप्राणीसुखदाईहै॥त्रियाकीदृष्टिसाथउस्योंहोइपुरुषताहिजुध
धिनवैदजिनराजकीदुहाईहै॥१२॥सोरठा॥रक्तपुरुषकीलोइ॥वातसवेतुमसोंकही॥वै
सोतुममैहोइ॥तातेंवातकहतोउरे॥१३॥इतिरक्तपुरुषकथासंमाप्तं॥दोहा॥दुष्टपुरु

षकी वातकहु सुणोंसवैचितलाय॥तासुणिकेसज्जनडरै॥दुर्जनजनविहसाय॥१४॥
चौपई॥ग्रामकूटइकनगरविशाल॥तहांचौधरीहैरषिपाल॥प्रथमसकंधदुतिवक्र
जाणि॥तिनमैवक्रमहादुहषांनि॥१५॥दुहूपरस्परअद्भुतषांति॥कदैनजीमैएकै
पांति॥सर्ववातहूंकहूंवषान॥दर्वदइरकोकारणजांणि॥१६॥कवित्त॥प्रथमचोरहठ
गहैराजलूटनठलविमहै॥सोपैदिनविचलहिधरोमहिरहितवेटिअहि॥भूपपर
स्परलरैंरवि करिनरकदुखदेषै॥भ्रातपुत्रनैहरैजनकसुतलरैविशेषै॥अनर्थष
लकसवदर्वकोताहिलोभवालावहैधिकारपरोतिनपुरुषकोंइसोदर्वजेसंग्रहै॥७॥
दोहा॥ जनमज्ञातहैनेवयर॥कोशिककागसमान॥वकृदुतिपषीडाकरै॥नारायणकी

आण।१८। एकसमैयाव क्रको॥चढीकालज्वरआइ॥सबकुटंबभाईसुनत। वोलेसीस
नवाइ॥१९॥पितापापवहुतुमकियो॥मनुषजन्मकोंपाई॥अबकछुतुमसुकृतिकरौ
दुहूजन्मसुखथाय।२०॥चौपई॥पुत्रकलत्रधनभाईबंध॥मैमैकरैमुगधनरअंध
तेपरलोकसाथनहीजाय॥एकधरमहीहोयसहाय।२१॥सवैइयाइकीसा॥धनगो
हमसानलगिपरिजनदेहदाहलगिएव॥पापपुन्यदोऊचलैसाथहितातैकरहुतात
पुनिसेव॥आगैअनंतकालदुषपायोतातकीकथाकहैजगदेव॥इसोजानिपरि हरोमु
वुद्धिकौतौसदगतिपावोस्वयमेव।२२॥चौपई॥जनममहावनभमतातात॥चलैन
संगसुतनरणीभ्रात॥असोजानिशुभकरौइलाज॥तातैहोइजीवनिजकाज।२२पु

ब्रह्मादिमोहसवनजो॥ वहुविधिदानविप्रको यज्ञो॥ तुमहितातसमझावै कोई॥ दा
नविनानहिसद्गति होइ॥२३॥ देहुदान करिकैशुभमती॥ हमहिदेहिगोगोकुलपती॥
इसोवचनसुनिसोवोलियो॥ पापिकपटीउत्तरदीयो॥२४॥ मेरोवचनकरोतततका
ल॥ जोसपूतहोमेरोवाल॥ पितावचनजोलोपैपूत॥ जन्मांतरसोजाइअजुत॥२५
सकंधनामसोवैरीतणो॥ सोपापैसुखपासीघणो॥ इसोनकारणाकोउलह्यो॥सो।
जीवतवहजीवतरह्यो॥२६॥ धांसोइसोलगाउतास॥ तातेहोईसकलकुलनास॥ मेरो
वचनकरेधृतिपाल॥ तोमेरोशुभस्योहोइकाल॥२७॥ जोयहशास्त्रहदाकोजाई॥तो
सुभगतिपाउवहुभाइ॥ मेरीसीषधरोमनमांहि॥ तुमहीअकलइतनीसुतनाहि॥२८

मेरे शिर परि सुख भोग ए॥ करम करम सुतस्यो तौ भए॥ अब तुम यह सब जाणहु भेव॥
तातै लोक करै तुम सेव॥२९॥ हिक मति तुम हि वता जूपूत॥ तातै रहै सकल घर सूत॥
मूवा पछै पुत्र मुख लेइ॥ लकडी दोइ नठी गण देइ॥३०॥ स्कंध षेत मेरा ष्यो जाय॥ गो
महिषी सब घो मुकुलाय॥ आपनि रा लै देष्यो करो॥ जासो दृष्टि न का हू परो॥३१॥ देषि॥
गो महिषी नु तपात॥ कोप पर राय ण करि सी घात॥ पूत चुले ति हा पुकारियो॥ पिता हु
मारो इन मारियो॥३२॥ घाटि घालि करि मतौ विचारि॥ आनि न तारो नृपद रबारि॥ राजा
लूटि सदन सब गेह॥ तब मेरो भाजै संदेह॥३३॥ वचन पिता कौ हिरदै धस्यौ॥ पिता कह्यो सो
सगल्यो कस्यो॥ पापस हाइ सगल्ये होई॥ पुन की वात न जाणै कोइ॥३४॥ मरि करि नरक सा

तमैगयो॥वाकोदरवत्तूटिकरित्तयो॥देषीदुष्टननीसववात॥सुनिकरिज्ञायसवैम
नघात३६॥ सोरठा॥इकमांषीअरुदुष्ट॥प्राणमवांचैआपण॥करैजोपरकोकष्ट॥इ
नतैडरताहीभला॥३७॥दुर्जनतजैनकालिमा॥यद्यपिराषैप्यार॥दूधणधोयाकोय॥
ला॥होइनउज्वलयार॥३८॥दुर्जननननसुधरैनही॥त्याषकरैजोकोइ॥जैसोपाणिप
थिककी॥कदैननिर्मलहोई॥३९॥दुर्जनगुणगणछारिकै॥अगुणपकरैधाइ॥
शूकरषटरसछांडिकै॥विष्टाभषैअघाइ॥४०॥दुर्जनवहुगुणमूकिकै॥पकरैअगुण
धाइ॥द्राष्यावाइसछांडिकै॥जाइनिवोत्तीषाइ॥४१॥यद्यपिमरगिरिसरगए॥दुष्ट
सिंहअरुसेस॥तौवनछारैदुष्टता॥मारतहैकंटकेस॥४२॥क्यारीकरैकपूरकी॥मग

मद वरहावंधि॥ तेरसुधाकरिसींचिये॥ तमननवारतमंध॥४३॥ जाहिडसैसोईमरै॥ नाग जिनेशरश्रोन॥ कानत्यगैदुष्टश्रौरके हरैजरकेप्राण॥४४॥ दुर्जनपरदुषदेषिके॥ मुखमलीनमनत्रास॥ ज्योंत्रियसापैजाईके॥ फूटैपीटतगात्र॥४५॥ सवइयाईकतीसा॥

कवित अंक्षाहै

॥ वारिधकेतरिवेकोंवोहिथविधाताकियोसस्तिानतरिवेकोंनवेकावनाईहै॥ तम केनसाइवेकोंदीपगसवारिधरोगकेनसाइवेकोंनुषधिवताईहै॥ धराधरधूसवे कोंमंदरश्रटारीगांवश्रभुमसोंरषिवेकीकीनीभुमथोंईहै॥ श्रैसीविधिदुर्जनकेचि तवत्तिहरिवेकोंनुद्यमभगनभयोजिनकीदुहाईहै॥४६॥ पुनः॥ कत्तव्यवासीइंदुश्रा दिसुरकेसमूहमिलीश्रापसमैवैठिकरिनानावुद्धिठानीहै॥ चंदसूरश्रादित्यैकैज्योतिषी

॥४७॥ सकलमित्रसुरगुरुआठौजामज्योतिगवषानीहै॥हरिहरब्रह्मा औषगाधीशनखर
कोटिकनपावकरौतौवनपिछानीहै॥षलकेचरितअहोषलही नलैजानैभुजंगकी॥
चालजैसैभुजंगहीपैजानीहै॥४७॥ दोहा॥ दुर्जनजननमंथानसम॥छिनपूवेशसौ
पाइ॥टुकटुककरिस्नेहके वहुविधिनृत्यकराय॥१८॥दुर्जनजननसिक्षासारिखा॥मन।
वचजाणहुएव॥आपनोचामनपारिकै॥परिवंधनाकरेव॥४९॥जौमनवैठतसोवते॥औ
रनचिंताकोइ॥करिहिवुरोदुर्जनजणा॥तवहीतिरपतिलोय॥५०॥सोरठा॥कहैमनोह
रदास॥दुर्जनजिसौनिहाणभणि॥करैजुपरकोनास॥आपनोसीसछिदाइकै॥५१॥स
वईयातेईसा॥ कागकपूरषवाईकैचंदनलेपकरी॥अतिशीतलताई॥देवतरंमीमै

वेठि नहावो पैस्वानतजै नरती नंडिहांई॥ मोदिकदेहुवराहकोंसुंदरि॥ मर्कटमूषणदेहुघ
डाई॥ त्यौंसठकोत्लषसीषदईपरमानंतएकनरामदुहाई॥५२॥ दोहा॥ दुर्जनपरसु
खदेषिकरि मनमैहोतअधीर॥ छेदनभेदननरककी॥ सहेवहुतदुखवीर॥५३॥ इसोदु
ष्टजोतुमविषै॥ विघ्नहोइजोकोइ॥ तोहबातकहतउहं॥ मनवचजानोलोय॥५४॥ इति
दुष्टपुरुषकथासमाप्तं॥ इतिपंचमीसंधिः॥ दोहा॥ दुष्टकथातुमसोंकही॥ सोतुमसु
नीसुजाण॥ मूढकथातीजीमत्तिन॥ थिरपाषातसमान॥५५॥ चौपई कोठोषभुमपुर
णमंति॥ देषतिसुरनरमनमोहंति॥ भूतमतितहांवास्त्राणरहे॥ द्विजगणमोहिप्रति
ष्ठात्वहे॥५६॥ वेदपुंजसोमिथ्यानांहि॥ दुतीयोचतुरानननुवमांहि॥ दुगुणपचीसवर्ष॥

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain
Oriental Library, Ara

पुत्रिगत्यो॥ कुमारवैराग्यब्रह्मचारीरत्यो॥५७॥ वेदाभ्यासनिजहिरदामांहि॥ भोगभेदकुछजा
नेनांहि॥ वंध्यवर्गमनमोहिविचारि॥ कन्याव्याहीकरिमनुहार॥५८॥ जग्यानांवरुयकीधा
नि॥ मानोहरिघरिलक्ष्मीजान॥ जपाध्यायपढतांकोंदियो॥ लोकपढावणाकोबुद्धियो
पणी॥ सवदुज्ञजाकेवंदेपाइ॥ यज्ञकरणकोंपंडितराइ॥ त्रियासहितनिजभुंजेभोग॥ पहि
लापुण्यपसतासंयोग॥५९॥ अतिपुत्रसिद्धधरणीपरिभयो॥ विधिनावेदपुंजनिरमयो॥ सु
खसोकालकिताएकगयो॥ विद्याअर्थीएकआवतभयो॥६१॥ नानवटुकतिसरूपअनंग
॥ लखनालोचनवारिजभंग॥ अतिविनीतपटुवचनरसाल॥ विद्याग्रहणकोसरस
तिबाल॥६२॥ पुरुतिसोमअतिहीरणभंति॥ रागीजनकोमनमोहंति॥ रतिदिवसनितसे

वाकरै॥ उपाध्यायके घरमहिपरै॥६३॥ यशालोचनविकसितकंज॥ ताहिदेषिकरिहवो षंज॥ चलैनअंततासमुखटारि॥ भगनवहलज्यौंसकैनहारि॥५४॥ स्नेहरहितअतिदृष्टि दुरितिकियो॥ संगतोइकरिकैसीचियो॥ परमपरमहितफलअपार॥ दान्यौवांछितफल दातार॥५५॥ दोहरा॥ गोष्ठादस्त्रिदीयुतसठसुहत॥ किंकरहोइप्रतिकूलत॥ विरधपुरु षनवतनत्रिया॥ जीवननाशनमूल॥५६॥ दोहा॥ तियसमअमृतविषलता॥ नहीजा गतमेकोइ॥ विरकतकोंविषवेलरी॥ रकताअमृतजोइ॥५७॥ चौपई॥ जेसठत्रियाविश्वा सकराइ॥ षेतवढावेअगिनीजलाइ॥ पोषेव्याधिसदादुखदेइ॥ वहुतलडाईजीवनलेइ॥ सवत्रिलोकके जोषणकस्यो॥ तातेनावजोषितावस्यो॥ रमेपापकुंथरमहिछारि॥

तातैरमणीकहिविचार॥६९॥मारैपृथ्वीदृष्टिनिहारि॥कहीकुमारीतातैनारि॥तैसाजु
गतकोधकीषांनि॥तातैनावभामिनीजानि॥७०॥वित्तैकरैचित्तहरषिप्रमाण॥तातैं
वित्तीयाकहीवषान॥दोषभ्रापनाछादैसही॥तातैस्त्रीवुधिजनकही॥७१॥सकलदोक
तिहभ्रवत्तीकस्यो॥भ्रवत्तानामतासतैधस्यो॥होतपुमादंदषतांताहि॥प्रमदानामतास
तैभ्राहि॥७२॥इनहिभ्रादिनारिजेनांव॥मनवचसकलमहादुखठांव॥षटुभ्रनर्थकरवेकों
नारि॥मनवचचंचलदेषिविचार॥७३॥कायकांमिनीछंडैभोग॥ताकोंवंदैउत्तमलो
ग॥मनकृतिकामिनजिहिवसकरी॥तिहिनविमुक्तिकामिनीवरी॥७४॥दोहरा॥नदीना
गनीनाहरी॥नारीदुष्टजोकोइ॥जोहितचाहोभ्रापणो॥करोविस्वासनकोई॥७५॥चौपई

विपुविपुलीभुंजै भोग॥ जुओश्रावकरिकर्मसंयोग॥ पुंडरीकमहायज्ञकाज॥ मथुरास्यों
वोल्योद्विजराज॥६॥ द्विजत्रियसोवाचनउचारी॥ घरकीरिष्यावहुविधिकरी॥ नूसोइयैघ
रिभीतरजाइ॥ पोत्रीनीतरवटुकसुवाइ॥७॥ चल्योसीघदेआनंदमई॥ इहांविधातासौरठ
ई॥ गयेब्राह्मणपतियापातमा॥ वटुसमभोगकरैसुरसमा॥८॥ तरुणपुरुषकोंतरुणीपा
इ॥ जनमसुफलकरिमान्योताइ॥ अतिहिहरषस्यांनिशदिनजाइ॥ कामीमनवंछितसुख
दाई॥९॥ सोरठा होणहारसंयोग॥ सुखसागरमैमगनयोग॥ शिवपारवतीभोग॥ ताको
मानैतिणसमै॥८०॥ चौपई॥ प्रीतिकरणकोदूतनकोइ॥ प्रीतदूतहैत्रोचनदोइ॥ पहि
लेलाइलेगेमनमांहि॥ पीछेजीवगहेफुनिताही॥८१॥ दोहा॥ नैनपदारथनैनधन॥ नै।

नानैनमिलंति॥ अणजाणपास्योंप्रीतडी॥पहलीनेयणाकरंता८२। मदनसहितशंकार
हित॥नवतनयोवनहोइ॥शीलरहतवेयगतोकरै॥ताको अचिरजकोइ॥८३॥कु
त्सितजनतियदरसतै॥ज्ञानध्यानविसराइ॥जैसेघृतघटअगनिसंग॥वहिकोलौंठ
हराइ८४॥ चौपई॥ रूपवंतभूमयोवनधरै॥नजरनिरषिवचनउच्चरै॥मोहिवां
छिकैत्यावेदोस॥वातइवोलैकरिकरिरोस८५॥महापुरुषअतिधीरजधरै॥ता
कैपापसवीसिरपरै॥नाघरघरणिनगठियोदाम॥क्योंकरिचलैविसनकोकाम८६
मुरखलोगनजाणैभेव॥सहजैवेटाशीलगगेव॥अैसापुरुषवहुतदेषिया॥प्रथमपु
रुषविरत्तापेषिया॥८७॥वेदमासमुखमेवीतिया॥पेमयासचितजुगवोधिया॥एकसमै

यस्तादेउहाथ॥ जोडिवचनवोल्लीसुनिनाथ॥ ८८ मैस्तोवदनकाहेतैतोहि॥ ताकोउत्तर
दीजइमोहि॥ मुनिवचंटुकनाणसुनिवात्त॥ सुखमैजातनजाणेपाकात्त॥ ८९ भोगभोगयें
सुखकीधांनि॥ तोप्रशादसुनिकत्तानिधान॥ मटआगमकोओसरभयो॥ इसोविधा
ताकारजठयो॥ ९० कहाकरोंश्रवकइवैजान॥ तोहिछारिकैकहारहांन॥ तासोवहुतभो।
गएभोग॥ छारतमोहिहमैसवत्तोग॥ ९१॥ दोहा॥ वडीआपदामोपरी॥ कासोकहोंकहा
उ॥ इततटिलीनतसिंधकहे॥ कीजैकोणउपाव॥ ९२ सुनिवोल्लीसापायनी॥ स्थिरभव।
शोवनिवार॥ प्राणपतीउरमनिकरो॥ मोवचहिरदेधार॥ ९३॥ लेइसकलधननाशिये॥ ज।
हानजानैकोइ॥ मनवंछितसुखभोगवै॥ करताकरैसुहोइ॥ ९४॥ चौपई॥ मनुषजन्मफुनिनन

वतनदेहु॥कामीजननसोंवहुतसनेहु॥गांठिदरवअंगनहिहीन॥एनमित्रैप्राणीकुनिषी
न॥९५॥पूरवसुकृतिकीधोघणो॥तातेवणीकदुहुकोवनो॥भोगविनाजेतेदिनजाइ॥
तेदिनदईनत्रेषैजाई॥९६॥चिंतभावतजिहोइनिचिंत॥मृतकदेइल्यावोलघुमिंत॥म
रणाकरणाकोजोडोजोग॥तातैलषैनकोउलोग॥९७॥वचनक्रियाकोशिरधरिलियो॥
अर्द्धरातिमरघटपगदियो॥जोकामिनीवसलोलुभाइ॥अकरदुकरणवहुतकराइ
॥९८॥शिवणकघरमांहेरणषियो॥दूजोपोलीमिनाषियो॥निकसैकलसेअगनिलगाय
ज्योंमृगपासिढेदिकरजाय॥९९॥सर्वगिहजलिभस्मीभयो॥अद्भुतचरितविधानाठ।
यो॥अैसैचरितकुनारीकरै॥तिसदेषिनरधैरमीडरै॥६००॥दोहरा॥सकलस्त्रीकैदेषि।

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

करि॥हाहाकारकराहि॥कर्मतणीअनेकगतियामेमिथ्यानोहि।१।कर्महतणीविचित्रता
॥ताहिनसमझैलोइ॥आरंभ्योयोहीरहे॥औरअचिंत्योकोइ।२॥लाषसयानेकोटिवु
द्धि॥एसवझूठैजोर॥कर्मवलीछिनएकमे॥करैओरकीओर॥३॥चौपई।होविधिनाअैसी
निरमई॥सतीशिरेमणिभस्मीभई॥नटपदांवुजसेवनहार॥सोबटुजलकरिदवोठार॥
४।अरेनिरदैअग्निकुमार॥उपजीतोहिनदयालगार॥वाहिरभीतरिफिरिदेषियो।के
वलिघरभसमीवषियो॥५।वहुविधिपठ्राततापकराइ॥निजनिजसदनपुहुतेताहि॥न
गरलोगसवकीनीदया॥वेगवुलावोवोभणभया।६।सोरठा।इसोपुंचनकोइ॥तीनलोक
मेप्रीतमा॥मनवचजानहुलोइ॥जोभामाजानैनही।७॥चौपई॥लोगलेषकरिपठ्योजाम

वाचरभटआयोनिजठाम॥देष्योसदनअगनिकरिदह्यो॥सवकछुजल्योरंचनहीरह्यो।८।
सोदुषितअतिहीविलखाइ॥होणहारथैंकछुनवसाइ॥सुमरिसुमरिपूरबगुणगांति।सो
चेमूरखनानांति॥९॥आज्ञाकारीपंडितराइ॥सुचीविनीतचतुरसुखदाइ॥शास्त्रसमुद्र
नयोतरिपारि॥जनमपारब्रह्मचारीसार॥१०॥अहोकृतांतकहातुमकहू॥ऐसोवटुकक।
हाअवलहु॥इनभविअनएविसरेमोहि॥श्रीभगवानदुहाईतोहि॥११॥कवित्त॥चंदकांति।
तिसवदननेत्रजीतीपंकजछविनासाकीरसमानकोकिलाकंठकहतकविअधरप्रवा
लीजेमरदनकुंदगुलराजहि॥कुचअतिकठिननतंगमेरुभुमअचलविराजहि॥कटि
केहरगतिगयंदकीचितचंचलतामीनमन॥सोमदृष्टिपतिवृताअतिमेलविधाताइसीध

न।१२॥सवइयाइकतीसा॥ अधरकपोलत्वालत्वशोभितमरालचालअतिहीरसालवाल।
बोलतसुहावनी॥ नितहीसुरंगीअरधंगीभावतेकोप्यारीत्रोचनकुरंगीनिजनाथमन
भावनी॥ दधिमथआनिकिधोइंदजूकीपटरणी॥रूपकीअघाणीसुसनेहकोवधावणी
॥अतिहीसुहाइमनभाइचतुराईलयेऐसीसुखदाईप्यारीपूरेपुण्यपावनी॥१३॥सवइ
यातेईसा॥ पुन्यतैनारिमहागुणासागरमानोसंख्यामधिचंदुकलीहे॥नूंगपयोधरकंजक
लीसमतातखिरजरहीनिवलीहे॥पियकेअनुसारचलैनितहीघरकाजसवैयेवातभ
लीहे॥औरवडाईकहालौंकरौनाकेरूपतैकामकीवामचलीहे।१४॥चौपई॥केशस्यामक
रिजीत्योअही॥षिमासंयुक्तदूसरीमही॥दर्शनपर्शननिरषणहास॥नेसंगिगयेअहो।

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain
Oriental Library, Agra

गुणरास॥१५॥पुरुषसिंगारसकलमुऊगयो॥आजसकलजगसुनोभयो॥धर्मराजमो॥
विनतीमानि॥एतीक्याजीवविचआनि॥१६॥जोहौधरमराजनुनांव॥हमकोपठयोवाके
गाम॥तोजसहमवहुतेरकरै॥नसनियविनमरिनरकहिपरै॥१७॥सोरठा॥जोढुढोसव
ठौर॥सुरपुरनरपुरनागपुर॥तौसमकोनऔर॥पानुनोहीसुंदरी॥१८॥दोहा॥षिनवि
योगसहिनासकैचकवोचकवीहीन॥सोवियोगचकईमुई॥क्योकरिसहीहेदीन॥१९॥चौ
पई एहिप्रकारसवरुदनकराइ॥सवपंडिताईगईविलाय॥कर्मयोगब्रह्मचारीएक॥आयोग्र
णनिधिषोनिविवेक॥२०॥काहेरुदनकरैसठवाद॥होइसंयोगवियोगअनादि॥यहकाया
किसकीथिररही॥मूढगवारजाणनूंसही॥२१॥दोहा॥कर्मयोगविछुरैमिलै॥तानमा

तसुत म्रात ॥ पवन जोग विछुरै मित्त ॥ जैसे बहु विधि पात ।२२॥ म्रस्थि पीव मंजा रुधिर ॥
नसा मास म्रर चाम ॥ इस काया दुर्गंध मै ॥ को कहिये म्रभिराम ।२३॥ नव दुवार नित प्रति
म्रवइ ॥ जिसो नीच को गेह ॥ मल मूत दुर्गंध सो ॥ तासों किसो सनेह ।२४॥ म्रव इ या तें ईसा
॥ म्राठ महा मद दुर्गति कारण तें सब पाई कहा गरवाणा ॥ रावण म्रादि म्रनीति करीति न
के म्रव लौं सुनिये न पषाना ॥ मानुष जन्म वि भोजि न धर्म त्यो पुनि योग मित्यो भुन।
ठाना ॥ चेत म्रचेत सुधार सप्या इ कैनी वचिरा जमराज सिवाना ।२५॥ सोचत सोचत सांझ
करै सठ सोवत सोवत रैन विहाना ॥ जो षट षंड की संपद म्रावत ॥ तौ न कहै कछु म्राज म्रघा
ना ॥ लोभ त्यो फुनि वृद्ध न पारत भाग विना नल है इक दाना ॥ चेत म्रचेत सुधार संभा।

रिकै जीव चिरायमरा जसि चाणा।२६॥ए हु कुटंब जैसे वटवृक्ष के रातव सैपरि भातनु डाना इंद्रियपंचतणो वसिहोइ कै तुं विषया ठग पासठगाना॥ मोहमहामदपियकै मूरख अज्ञात मज्ञानसवै विसराना॥ चेत अचेत सुधारस घूटि कै जीव चिरायमरा जैसि चाना।२७। मात पितासुत आदि कुटंब सोदीसत हैसव त्योग विराना॥ तूनितएक सदा तिहुंकाल मेकर्मवती तिनहाथ विकाना॥ काहेको पापचूरे धर्म छारिकै को नमनोहर होतसयाना॥ चेत अचेत अमीरस पाइकै जीव चिरायमरा सि चाना।२८॥ सवइया इकतीसा॥ अज्ञानी कहत कुच कुंकुम कनक छवि ज्ञानी मनमैं विचारै मांस ग्रंथ दूरही॥ अज्ञानी कहत मग अमृतरस कुंडज्ञानी योंविचारै मनश्रोणित की हैमही॥ अज्ञानी मुरवार विंददेखि देखि कहै चंदज्ञानी

कहैसलेषमारुधिरघटहैसही॥ अज्ञानीअज्ञानमतिविपरीतदेषैसवज्ञानीगुणकेनि
धानमोक्षपंथकेवही॥२९॥सोरठा॥ नवसमुदमैनारि वोरैरागीपुरुषको॥मनमेदेषि
विचार॥तियपथ्यरनवकासमी॥३०॥दोहा॥ नीचपुरुषकोंमोहिकरि॥डारैनरकमझार
॥शिववाछकबुद्धिज्ञइनसी॥क्योंकरिसेवैनारि॥३१॥अगनिकाष्टपरत्येकरै॥समझिदेषि
मनमोहि॥ज्योतियसद्गुणपुरुषको॥वोत्यैमिथ्यानाहि॥३२॥रामामोहितहितअहित
प्राणीजानतनांहि॥मद्यपानीजानैनज्यो॥नारिसुसाधरमांहि॥३३॥इसप्रकारसिक्षाद
ई॥ब्रह्मचारीहितगणि॥एकनमानीभूतमति महापापकीषांनि॥३४॥सीषनदीजैको॥ सोरठा
जाहूकाहूपुरुषको॥मनमेदेष्योजोइ॥जगतविटंव्योमोहिवसि॥३५॥चौपईएतीकही

मौनव्रतस्त्रियो॥ शिवभूतिहिंनतरुदियो॥ सकलगुणानकेजाणनहार॥ हरहरिब्रह्म
गुणभंडार॥३६॥ इंद्रनरेंद्रसुरासुरचंद॥ स्त्रियाभोगवैकरिआनंद॥ फुनितिनराषीकरिअर
धंग॥ नटामांहीराषीशिवगंग॥३७॥ निंदनारिजोहोतीएहु॥ तोएक्योंराषतेसनेहु॥सम
जिसमजिसठहिरदैमांहि॥ भोगभेदतुमजानतनांहि॥३८॥ स्त्रियोवरेवरिजान्योसही॥ नी
नस्त्रीकमाहैसुखनही॥ तातैउपज्योसकलजिहान॥ ब्रह्मादिकसनमहेश्वरमान॥३९॥
दोहा॥ कल्पवृक्षसुरवेदहिदेइ॥ स्त्रियसुखदेहिअपार॥ रूपनेकजानैनही॥ याथोनिछि
कीसार॥४०॥ सवईयतेइसनारिविनाघरमेनरभूतसोनारिसवैघरकीरषवारी॥ नारिचषा
वतहैषटभोजन॥ नारिदिषावतहैसुखभारी॥ नारिसवैरजनीसुखकारणपुत्रउपावनको

वरवारी॥ औरवडाईकहांलौकरौंसवलोकवडीमनरंजनहारी॥४१॥ दोहा॥ नारिविनाजग
ग्रंथहे॥ मानिहमारीबात॥ महापुरुषशिवसारथी॥ कौंकरिहोतेन्यात॥४२॥ सोरठा॥ ना
रिविनासंसार॥ सुखदाताकोजनही॥ मनमेंदेषिविचारि॥ अरेब्रह्मचारीमुगध॥४३॥ दोहा
इहिप्रकारस्तुतिबहुकरी॥ त्यागेवाणअनंग॥ वटुयज्ञाकेअस्तवे॥ चल्योवहावनगंगा॥४
४॥ चौपई॥ गहवीचइकपुरवरमांहि॥ मिल्योवटुकधर्मिथ्यानाहि॥ नैकंतितिसनायोसी
स॥ मोअपराधषिमोपुनुईस॥४५॥ वोल्योमुरषचुकोआई॥ मोकोबातकहोसमुझाय॥ हो
हवटुकपापिष्टकुटांग॥ चुमपादांवुजसेवनलग॥४६॥ दोहा॥ इसेवचनसुनितासके॥ वो
ल्योमुग्धरिसाई॥ अरेठगारेजगतके॥ ठगहिमुकुटमणिराय॥४७॥ चौपई॥ वटुकअस्थिमुज

थैत्रीमांहि॥मोहिठग नतोहिवूतो नांहि।दूपंडितपंडितशिरमौरि॥तोहिठगनकोथो।
रीजोर॥४८।जाहिजाहितजिझठाऔर॥मोसमपंडितनाहिओर॥उंठगविद्याविषैसुजाण
मैअठदशदेषियापुराण॥४९॥चलिचलिधूतनशिरधूत॥होपंडितसवविधिसंजूत
तान्निघाटिकरिआयोघणो॥सोसठपुणयज्ञादिठपणो।५०।मैकंपतिहुइपाइनप
री॥दीनवचनवहुविनतीकरी॥तुमधनआहिसकलगुणसार॥षरचोपायानहीत्व।
गार।५१॥दोहा॥अपनीतरफविचारिहो॥मेरीतरफनजोइ॥कदैनकोपैशुभमती
त्याषकरैजोकोइ।५२॥इमेवचनसुनियज्ञके॥वोत्योवचनहसंति॥अरेनारियान
गरमै॥सवजनधूतवसंति।५३॥चौपई॥तीसमानयानगरमझार॥मित्योऔरभीहो

इकानारि॥ होंपंडितपंडितशिरराइ॥ मोसोंठगकीकहावसाइ॥५४॥ जाहीरजाहिर धूरतरांड॥ नातरतोकोकरिहोभांड॥ मैजीतेषटमतिकेधनी॥ तापैक्यामतिहै पापिनी॥५५॥ एतीकहिकरिब्राह्मणगयो॥ यज्ञाकोसुखअद्भुतभयो॥ मनकोसंसो गयोविलाय॥ भोगकरणलागेसुखदाइ॥५६॥ दोहा॥ वातसुनीदेवीनयन॥ तोनक रिविश्वास॥ द्विजसममूरषकोनही॥ कहैमानाहरदास॥५७॥ भूतभविष्यतीवरतिहै जानैनहीविचार॥ सोपढियोमूरषसदृश्यामैफेरणसार॥५८॥ हृदयसुन्यकीतुमवि षै॥ कहीसकलमैवात॥ ऐसोतुममैहोइतौ॥ डरत्यागतहैभ्रात॥५९॥ इतिसठकथा समाप्तं॥ छठीसंधिसंपूर्ण॥ दो॥ दोहा॥ हठग्राहीकीवारता॥ कहूंसुनोचितलाय॥ ताहि

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

सुनतबुद्धि होइभ्रम ॥ जानतमनवचकाय ॥६०॥ चौपई॥ दुष्ट नाम भूपती एक ॥ रामनगर
कोगुणीविवेक ॥ करमकरमकरतासुतभयो ॥ विधिनैजनमअंधनिरमयो ॥६१॥ दोहा॥
रतनजटितकंचनमई ॥ भूषणनवनवलेइ ॥ नृपपहिरावैनासको ॥ सोजाचिकनितदे
इ॥६२॥ चौपई॥ मंत्रीदियोकुवरविवहार ॥ नृपपैजाइजणाईसार ॥ स्वामीकुवरमहाहठ
लियो ॥ सबभंडारतिनघात्रीकियो ॥६३॥ सुनिनृपउत्तरदीयोनाहि ॥ अहोपुत्रसोकहा
वसाइ ॥ सुनिकरिमंत्रीउतरुदेहि ॥ मेरोवचनमानिकरिलेहि ॥६४॥ दूजोदेतोकरुंउपाय
॥ कुवरखुसीहोइदरवनजाइ ॥ करोनउपावनत्रावोधीर ॥ मोहीकहापूछतहोवीर॥६५॥ मंत्री
नृपकीअज्ञालाई ॥ नानाबुद्धिउनमीतरठई ॥ करोनउपायसमझिमनमांहि ॥ ताहिसोध

कोऊत्तावैनांही॥६६॥दोहा॥तोहमईभूषणकरै॥कुमरयोग्यतेदेइ॥यथायोग्यपहिरा
इकै॥विनतीवहुरिकरेइ॥६७॥चौपई॥अहोकुवरतुमकुलआधार॥वज्रदंडकरिस्त्रं
गीकार॥भूषणदंडराखियोसंभाल॥परंपराइकुलआएचाल॥६८॥भूषणविधिसोंपूजकु
वात॥शत्रुसमुहविध्वंसनकात॥जोएभूषणपहिरैहै॥सोईराजपिताकोतहै॥६९॥
कोइकदुर्जनराजतुभाय॥भूषणकहैतोहमईआइ॥देखीजनकोवचनपत्याइ॥भूषण
छीनतेराजपत्याइ॥७०॥दंडप्रहारतासपरिकरौ॥देखीनमनमैशोकाधरै॥कुमरवचनसुनि
मंत्रीतणे॥मनमैहर्षजपनोघणे॥७१॥स्यावासस्यावासकुंवरतिसकरै॥वूवैहाथहिरैदप
रिधरै॥कुंवरपानमंत्रीकोंदीयो॥मंत्रीअैसैहीपूछियो॥७२॥मंत्रीवचनमानिकरित्तयो

विदा मांगि मंत्री घरि गयो॥ तापी छै जाणै सो करै॥ भलो वुरो जैसो मन धरै॥७३॥ दोहा॥
लोहमई भूषण कुवर॥ ऐसी वात करेइ॥ दयारहित अपदंडकी॥ ता के शिर मेटेइ॥७४॥ चौ
पई॥ हठग्राही हठ छोडै नही॥ प्राणजांहि कछु मिथ्या कही॥ ताकों सीष कहा दीजिये॥ झू
ठी वात कहा कीजिये॥७५॥ दोहरा॥ मूरष विसनी पातनी॥ लंपट हठी निलज्ज॥ इनसो सं
गति जे करै॥ तिनको विनसै काज॥७६॥ मुग्ध लोह पहरै रहै॥ मनमे भयो घुस्यात्र॥ सीष
सुनै जो पारकी॥ ताको यहै हवात्र॥७७॥ जामे अपनी वुद्धि नही॥ पर को करै विस्वास॥ तास
म मूरष को नही॥ कहै मनोहरदास॥७८॥ चौपई॥ रतन जडित भूषण सवगए॥ आयस भूष
ण शोभित भए॥ जो सठ पर को मानै कह्यो॥ आपनो किये आपन पेलियो॥७९॥ दोहा॥

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

हठग्राही हठनीत जै॥ त्याषकरैजोको इ॥ ज्यौंभुकनलिनीनातजै॥ मनवचजानोलोइ।
८०॥ हेयाहेयनजाणही॥ सुनीपराईसीष॥ मनवचक्रमकरिजाणिज्यो॥ सोनरमांगतभी
ष॥ ८१॥ सोरठा॥ हठीपुरुषसोंवात॥ पंडितजनकोमतिकहो॥ जोचाहोकुशलात॥ कहैम
नोहरआपनो॥ ८२॥ इतिहठीकथासमाप्तं॥ चौपई॥ पित्तज्वरदूषितकथावषान॥ सु
नोसूत्रकंठदेकान॥ कोइकनरपित्तज्वरगह्यो॥ मानोनहकृतांतैदह्यो॥ ८३॥ ताहिशर्क
रामिश्रितदुग्ध॥ तुष्टपुष्टकरपावहुवुधि॥ ताहिपीवतमूरषदुषभयो॥ हायनिंवकोरस
दो॰ मोहिदियो॥ ८४॥ मिथ्याज्ञानजुपित्तज्वर॥ आसाव्यापिततास॥ ताकोंधरमवचनअमृत
कटुकलगैकविवास॥ ८५॥ पापमलिनमेधर्मवच॥ त्यागैनहीअभंग॥ जैसेनीलेवस्त्रनपरि

All Rights Reserved © Shri S.K. Jain Bhandar, Delhi

चढै न कुंकुमरंग ॥ ८६ ॥ पित्तज्वर मिथ्यात कहि ॥ वासित चित्त तुम मांहि ॥ होइ विपुतो डर ॥
ति हौं ॥ या मैं मिथ्या नांहि ॥ ८७ ॥ इति पित्तज्वर कथा समाप्तं ॥ सोरठा ॥ कथा श्रावकीलो
इ ॥ कहो सुनी मैं प्रेम ज्यों ॥ ताहि सुनत बुध होइ ॥ ताते सुनीयो कान दे ॥ ८८ ॥ चौपई ॥ अंगदे
श इक अद्भुत वसै ॥ तामधि चंपापुर अति वसै ॥ अमरनगर सम सोभा धरै ॥ तासवडाई
को कवि करै ॥ ८९ ॥ बहुत नृपति सेवत सुपाइ ॥ नृपशेखर तहां राजक राइ ॥ रूपगंधरस
सुखदातार ॥ नरइंद्रिय आनंद अभसार ॥ ९० ॥ अति सुषकै करि परसत ताहि ॥ दिव्य जोष
जोवन सम आहि ॥ जरा महा गद दुष निधान ॥ दूरि करण कों अमृत समान ॥ ९१ ॥ ताकी न
पमा दीजे काहि ॥ रत्नत्रय सम दुर्लभि आहि ॥ ऐसी त्रिया राजा घरि रहै ॥ रति दिवस नित

क्रीडा लहै ॥ए२॥ दोहा ॥ इसो एक फल आंव को ॥ उपमा रहित वखान ॥ वागन्यपति तान्य पति को ॥ पठयो प्रीतम जान ॥ए३॥ ताहि देखि हरषित भयो ॥ आनंद उर न समाय ॥ वसन मनोहर देखतां ॥ काहि न सुख उपजाय ॥ए४॥ चौपई ॥ सोचै ताहि देखि करि राई ॥ एक आंव थै का जन थाइ ॥ मो गद गयां कहा होइ भाइ ॥ जो मोहि पर जा रोग न जाइ ॥ए५॥ संत पुरुष दुख शिर परि धरै ॥ पर जा ऊपरि रक्षा करै ॥ नीत मार्ग न्यप कहिए सोइ ॥ ता सम दूजो अवर न कोइ ॥ए६॥ दोहा ॥ तरुवर कबहुं न फल भषै ॥ नदी न पीवै नीर ॥ पर उपगार हिंकारणै ॥ साधन धर्यो शरीर ॥ए७॥ पर प्राण न तैसक तजन ॥ पोषत अपने प्राण ॥ निज प्राण नितै प्राण पर ॥ पोषै मेघ सुजान ॥ए८॥ चौपई ॥ दुख सुख पर जा करै न बाद ॥ ता न्यप को जीव

नसव वाद॥ तातैमनमैदेषोजोइ॥ भूरिश्रावकैसीविधिहोइ।ए ए सोचसोचमनमाहे
राइ वनमालिकोलियोवुलाय॥ तातैभूरिहोइफलवीर॥ करोवेगिमतल्यावोधीर॥१००
॥नृपतिवचनशिरऊपरलयो॥ वीजलेइवनमालीगयो॥ वोयोफलवहुजतनकराइ
॥अछहृदकारणमनराइ।१।करमिकरमितरुतरुणिथयो॥ पूर्वपुन्यउदैजवभयो।मा।
ली करैवहुतविधिसेव॥ हृदवढैअपनेसुखहेव।२॥षट्पदछंद॥ सिथलमूलदृढक
रहिफूलचूटैजलसिचै॥ ऊरधडारनमाइभूमिगतऊरधषंचै॥ जामालीनमुरझाइटेक
देतिसहिसमारै॥ कुडाकंटकगलितपत्तवाहिरिचुनिडारै॥ लघुदृढकरैमैदजुगलवा।
दिसवारैफलभषै॥ मालीसमानजोनृपचतुरसोविलसैसंपतिअषै।३॥ चौपई॥ अंवदृ

त्र अतिसुंदर भयो ॥ मानो पुन्य पुंज निरमियो ॥ नवतन पल्लव करत्रे कही ॥ रुति आये फलत लागैसही ॥ ४ ॥ शीतल छाया दिनदेत न ॥ नम्रहोइ कैसज्जन समान ॥ पुत्र फूल फल सोअति फलै ॥ पंछी बहुत आइ ति हारत्रै ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अंबडार त्रकैसेक है ॥ फल लाग तप रहेत ॥ एइ तनै पाहनहनै ॥ बहुत तैफल देत ॥ ६ ॥ गज्जि गज्जि तड तड किकरि ॥ मुखकी नोसमलिध ॥ रेजल हर चातिग भणो ॥ जलोजलो नुमवृध ॥ ७ ॥ चौपई ॥ फल संपूर्ण ज्यो नाधरै ॥ मधुपवास वसिरणा जूणा करै ॥ कोकिल कीरल वति अति मोर ॥ बहुरिसोत्र ॥ कपिबोल बोल ॥ ८ ॥ दोहा ॥ दईयोग फल तासपरि ॥ चीह्न मतक आहिलेइ ॥ डाल्यो पूरव पापतै ॥ होनहार नमिटेइ ॥ ९ ॥ सोपगरत्र ते आंबफल ॥ पाकगयो सबमांहि ॥ जैसैजीवन

All rights Reserved © Shri Dik. Jain

नरातै॥ पकैफूटकछुनांहि।१०। पाकपग्रौफलविषसहित। कहैमनोहरदास॥ जोअन्या
यथैजंचकुल॥ होइमूलथैनास।११। चौपई॥ मालीदेषिअतिहरषीयो॥ मनमेवहुत।
सोचतिनकीयो॥ करैंभेटराजाकीजाइ॥ मालीआवलेकैरीआइ।१२। दोहा॥ इत्ति
यामीतरमेलिकै॥ वहुतकफलहिमझार॥ नृपतिआगत्तिभेटिकरि॥ हस्तकवल
सिरधारि।१३। वोल्योमालीनृपतिसों॥ वहुविधिविनोकराइ॥ स्वामीवहुसहकारके
॥ प्रथमसुफलयहुआइ।१४। चौपई। देषिसुफलनृपहरषितथयो॥ वहुतदानमा
लीकोंदीयो॥ फुनिफलनृपमीतरलेगयो॥ पटरणीकैकरलेदयो॥१५॥ रणीजेठ
जकुंवरसहकार॥ लेहुपुत्रफलकरेआहार॥ दईयोग्पएकारणभयो॥ फलस्वाद

तप्राणनितेगयो॥१६॥राजासुदनकरैवहुभाई॥सोदुखकिणकरिवरणोजाइ॥हाथप।
टकिनृपकूटेसीस॥कालरूपफलविस्वावीस॥१७॥कोपपरायनवोल्योराय॥आंवक
टावोजडतेजाइ॥अैसीकहितासोएकथोक॥मनमूरषआयोवहुलोक।१८।दोहा
काटततसुवरवापडो॥वहुतहिसुदनकराई॥मोहिसरणकोभयनही॥पंषिव।
सेरोजाइ॥१९॥सासससासकुष्टीविरध॥उदरशूलयतत्वेइ॥भुनोवृक्षविषकोदुषि
त॥षाणचत्वेसवकोइ॥२०॥चौपई॥स्वादमात्रमनवचफलएम॥गईविथाआहि।
केचुकीजेम॥जिनखायोतिनकोदुखगयो॥राजामनहिआचेभोभयो।२१।दोहा॥
यहुआचिरजरोगीतणो॥सुनोनरपतिपेजाय॥मात्रीसवव्योरोकह्यो॥कोकविकरै

वढाई २२ चौपई नाहिवुत्राइदेषैनिजनृप॥ कामदेवसमदीसैरूप॥ परतत्रिदुःकृतआ
पणोराय॥ जाणिरशोचकरैवहुभाय॥२३॥दोहा॥ क्षितमंडनसहकारतरु॥ शीतलछाह
सुघट॥ विनाविचारैमुगधमे॥ काटिकियादहवट॥२४॥ विनापारिषकलपुत्रकौंक्यो क
रिदीनोजाइ॥ होनहारवसिराजवुद्धि॥ मनवचगईभुलाइ॥२५॥ विनाविचारैकरैजो॥ का
ममहादुषदाइ॥ जैसेरयणिठढंदरी॥ सेसपकरिपछताइ॥२६॥ इसप्रकारसोका अग्नि
सी॥ दाज्योसकलशरीर॥ राजाचिंतैकहकरै॥ होणहारवसिवीर॥२७॥षटपदछंद॥सी
यलंकपतिहरीरामलक्ष्मणदुखपायो॥ छपणकोटिनृपईसनृपतिवलजाचनिआ
यो॥ देषिनिलोतमरूपवूलतासोंरगिराच्यो॥ तत्रिजपरिदेहाथजोरि आगेहरिनाच्यो

यहजानिगरवकोमतिकरेघणीबातकोंकहैअब॥मनरहसिमनोहरइमकहै।होगा।
हारबसिरवत्तकसब।२८॥चौपई॥दिढकरिशिष्यामानोएक॥करेकाममतिविनाविवे
क॥विनविवेकजोकरसीकाम॥जासीजसअौरसुषपुनिदाम॥२९।दोहरा॥परिगहमै
धनमयअसन॥सबजीवनकोंहोइ॥ज्ञानसहितसोइमनुष॥ज्ञानविनापभुलोई
३०।सवइयाइकतीसा॥मायाकोजपावेयापसेतीएकमेकजू॥तपकोहरावेपंचइंद्रीकोनिरा
वेएक॥अदयाकरावेमुद्धमारगस्कंटेकजू॥सत्तकोडुलावेनीतिवेत्तिकोहत्यावेयापमा
रगचत्यावेजिनछास्त्रोहैविवेकजू।३१॥सोरठा॥विनाविचारेकाम॥जेनरकसीवापरा॥
तिहकोसुखअभिराम॥नपशेषरसमजाइसी॥३२॥दोहरा॥नपशेषरनपकीकथा॥सक

त्र कहीमे ऐहु ॥ वीरतनीजिमगुणधनर ॥ ताकीकथासुनेहु ।३३॥ इति श्रीव्रतकथासमाप्तं
॥ चौपई ॥ ठोहरणिविषयेविख्यात ॥ सागरनिकटनगरश्रवदात ॥ सागरदत्तवणिकतहं
रहै ॥ सवविधिपूरणशोभातहै ॥३४॥ ताकै प्रोहणकोव्योपार ॥ पुनिविधवरनतिहोइम्र
वार ॥ एकइसोहीकारणमित्यो ॥ चौत्तदीपकोवनिवरचल्यो ।३५। धेनऐकतिनस ।
णिकरित्तई ॥ कामधेनुविधिनानिरमयो ॥ खिरदूधवरषैज्योमेह ॥ पीवतहर्षवहुत
सनेह ।३६॥ दोहा ॥ ताकोदहीजमाईकरि ॥ वहुविधिवस्तुमिलाय ॥ चौत्तदीपकेनृप
तिको ॥ भेटकरीतिनजाय ।३७। तास्वादितनृपमत्तेछकी ॥ त्रिपतिभईसवदेह ॥ मा
नोग्रीषमकात्तमे ॥ भूपरिवरष्योमेह ।३८॥ चौपई दूजेदिनवणिवरवुद्धिकरी ॥ चाव ।

त्रमेलिषीरतिनश्वरी॥ तामैमिश्रीदईमिलाई॥ अमृतसमप्राणनिसुखदाय॥३९॥ता
स्वादनअतिसुखमयो॥ मानोराजइंद्रसुखलियो॥ ताकोवर्णकहालगिकरै॥सहस
सारदासुखनहरै॥४०॥दोहा॥ अलषअपूर्वमिष्टभन॥इंद्रियमनसुखदैन॥अैसो भो
जननजीमते॥काहिनउपजेचैन॥४१॥ताहिजीमनपवणिकसों॥भाषैकोमतबैन
यहभोजनकहापाइयो॥पंचेंद्रीसुखदैन॥४२॥इसेवचनसुनिनृपतिके॥धूरत
वणिकभणेइ॥यहभोजनकुलदेवता॥मेरीमुफकोंदेइ॥४३॥भूपतिबोलेवणिकसों॥
कुलदेव्यामोहिदेहु॥रतनअमोलककोसमै॥मनमानैसोलेहु॥४४॥इसेवचनसुनिनृ
पतिकेमेरीजीवनमूल॥कोदेव्यादेतबनै॥वातनकहिनृपभूल॥४५॥चौपई॥राजावो।

स्यो वणिवरसुणो॥ शुद्धचित्तराषो आपणो॥ एतोहमपरिकरोपसाव॥ सत्तिपुरुषको॥
उत्तिमभाउ॥ ४६॥ दहिदेवीमतिलावोवीर॥ नगरसेठ तुमराइसधीर॥ मनमेभावेनाना
करै॥ हषीदवणियोउच्चरै॥ ४७॥ सकतिभगतिनृपकोंगोट्टई॥ मनमानीलक्ष्मीतिनल
ई॥ मनकोचिंत्योकार्यभयो॥ प्रोहणस्वादिवणिकघरिगयो॥ ४८॥ प्रातभयेराजायहक॥
ही॥ वटलोहीजोआगेधरी॥ मोपरइतनीकृपाकरेहु॥ मनवंछितमोहिभोजनदेहु॥ ४
९॥ ऐतीकहिकरिचुपिहोईरह्यो॥ मानोसोपिशाचनेगह्यो॥ फुनिनृपतिसहिवचनउ
च्चरै॥ वणिवरकीचिंतानूंकरै॥ ५०॥ नूंकुलदेव्यासवकीमात॥ आजनदेहिदेहपरभात॥
तुझकोंरागदोषकछुनही॥ तुरवीमेरेघरसही॥ ५१॥ फूनिदूजोदिनसारेभयो॥ राजाकु

त्रदेव्या पै गयो॥ दीनवचन करवीनती करै॥ वासनत्रेतिसआगै धरै॥ ५१॥ दोहा॥ प्रथमदि
वसवातैकही॥ नृपतिगजुस्योसोई॥ सोइनृपवहुरोंकही॥ मनवचजाणोत्योइ॥ ५२॥ इ
सीभांतिनृपधेनस्यों॥ कहीदिनादशवात॥ मासिनिकासीदेशतै॥ टेइगुदीपरिलात॥ ५
३॥ चौपई॥ जाच्योदुग्धनकाहूदियो॥ त्रैसोमूढविचारनकियो॥ इशानशोचकस्योमन
मांहि॥ पयविधानकछुपूछ्यानांही॥ ५५ कैसीविधियहभोजनदेइ॥ किहिविधिभोज
ननतनकरेई॥ मैत्रैसीकुछजानीनांहि॥ नातेकाटिदईघरमांहि ५६॥ अडिल्लछंद॥ मूरख
समाननत्रंधेरोइरे॥ ज्ञानसमाननतेजसुन्योनजनहीकोइरे॥ जनमसमाननशत्रुदयाक
रिरहितहै॥ पुनिहांमोघसमाननवंधमनोहरकहतहै॥ ५७॥ चौपई॥ नसनमरीचनति

मरविनास॥ज्यिज्यिरमरीचनअगनप्रकाश॥विषममरीचनशीतलहोइ॥तौसटकुंवु
द्विनपजैलोइ॥५८॥सवईयाइकतीसा॥अलपरिकवलसरवमुखअमृतजलमैअग
निअमृतविषषांनिरे॥पंगुलपुरुषमेरुपरिचढैधाइधाइकोऊकरैसायरतिरैमुजप
तिरे॥अंधनैगहीवटेरबांऊहूलरावैपूत॥एतीबातजोपैमोसूंकहैकोऊआनिरे॥सो
तोसवमानोविचारसठकोनमानोएकवारकहैतेहजारवारजानिरे॥पर्ण॥दोहा॥वरंव
नत्रिणमच्छणभला॥मभियेवनवरसाथ॥देवगेहिनाहीभलो॥मूरखकेसंगिसाथ॥६०॥
सोरठा॥मैढुंढ्योसवठौर॥सुरपुरनरपुरनागपुर॥यातैदुषनहीऔर॥जाणकूरकैसंगि
रलौ॥६१॥गिरसोंगिरयेधाइ॥जायजलधिमैबूडिये॥मरियेमाहुरषाय॥मुररवमीतनकी

जीये ६२ ॥ दोहा ॥ वधिर गान नृत अंध तिय ॥ हीन काक जल तात हि ॥ भोजन सविस मुख सुमित ॥ इतै अविरथा जोहि ६३ ॥ मान न दै पूछै नही ॥ महा मुगध की राजि ॥ किहि विधि भोजन देते हे ॥ गौ सकल मो भासि ६४ ॥ पूछे मान न दै नही ॥ वहू का हूं को लोइ ॥ वृधि वै सधन के धनि ॥ ता तै मुख लो इ ६५ ॥ सोरठा ॥ ता ते भलो गरीव ॥ पर पूछै अपनी कहै ॥ वह पंडित सिर मौर ॥ कहै मनोहर जग तमै ६७ ॥ दोहा ॥ होइ विनीत द्व मानत जि ॥ जो नर पूछत कोइ ॥ सकल का ज सिद्ध होइगो ॥ भलो महा सुख होइ ६८ ॥ चौपई ॥ को हलो हमद मोह वधो नि ॥ राग दोष पुनि जडता जा नि ॥ काम अंध जो करै न विचार ॥ अैसे पाप सिर वैर अपार ६९ ॥ मान महा गढ वैठो रहे ॥ पर हि न पूछै आपुन कहै ॥ सो मत्वे छस

मज्जाणेसही॥सांचीवातमनोहरकही॥६७०॥दोहा॥ जोदुज्जनुममेंम्लेछसम॥हिर
दैसुनजोहोइ॥वातकहतहूंडरतहों॥मनवचजानोसोय॥७१॥म्लेछकथाचुमसोंक
ही॥सतिकरिजाणहुएह॥अगरयाइजिनछेदियो॥तिनकीकथासुनेह॥७२॥इतिर
तनोम्लेछकथासमाप्तं॥चौपई॥मगधदेशाइकअद्भुतत्तसै॥नागुत्तपुरतहांउ
तिमवसै॥राजाअंगरथअरिमातंग॥कुंभविदारणसिंहअनंग॥७३॥एकैदिव।
सकरमकेभाइ॥सेनातैविछुसोनरराइ॥मंत्रीसाथनदूजोकोइ॥होणहारहोईस
वहोइ॥७४॥मंत्रीसहितनृपआगोषड्यो॥एकपयादोदीठेपड्यो॥रेमंत्रीपूछत।
कूंतोहि॥यहकिसचाकरकहुंमोहि॥७५॥मंत्रीबोल्यौभूपतिसुनों॥हाल्लीसुनह।

All Rights Reserved @Shri D.K.Jain
Shri Gyan Mandir

रिहैतुमतणो॥ वारहवरससेवामहिगयो॥ नागनदैतुमदर्शनभया॥७६॥कोपपराय
णनृपवोलियो॥मंत्रीकामवुरैतेकियो॥हमसोंतोकछुभाष्योनाहि॥हमसेवाजाणी
नहिताहि॥७७॥दोहा॥ शिष्टनिकिष्टसेवाकरै॥सेवाजोनकराइ॥किंकरमंत्रीजानिक
रि॥कहैनृपतिसोआइ॥७८॥साधवर्गस्वाध्यायको॥कुलरमणीघरकाज॥मंत्रीनृप
कारजविषै॥करवोसदाइलाज॥७९॥चौपई॥हालिनृपतिनैलियोवुलाय॥वहुतखुसी
हुइवोल्योराय॥सेकरटअटवीसुभदेश॥गांवपांचसैभत्ताविशेष॥८०॥सवतुममन।
बंछितदातार॥कल्पवृक्षसममसोमैसार॥इसोदेशमैतोकोदियो॥पूरवपुण्यनदैतो
लियो॥८१॥दोहा॥ इसेवचनसुनिनृपतिके॥हालीवोल्योएव॥गांवपांचशतजेकहों॥

कसैरषोदेव॥८२॥इतेगांवनृपजोगतिसु॥जाकैकिंकरहोइ॥मुऊतैरिष्याहोइनही
मनमेदेषोजोइ॥८३॥सतवादीराजाकहै॥मानोमेरीवात॥वहुतगांवपरसादतैचाक
रहोसीभ्रात॥८४॥होइदरववहुगामतै॥दुष्यतैंचाकरहोइ॥तातैराजादरवसम॥औ
रनजुक्तिमकोइ॥८५॥सोरठा॥दुष्यवडोसंसार॥कहैमनोहरजोरिकरि॥मनमे
देषिविचार॥वडोनीचधनकोधनी८६॥दोहा॥कुलीमानीपंडितगुणी॥सूरच
तुरस्रभिराम॥धर्मवंतकंदर्पदुति जाकीगठडीदाम॥८७॥वयविरधाविद्याविर
ध॥तपविरधागुणराइ॥एसगरुवेधनविरधके॥स्रहनिशिसेवहुपाइ॥८८॥सोरठ
जाकीगठडीदाम॥सोईवडोसंसारमै॥मानोवचस्रभिराम॥दामविनानरचामसो॥

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain
Jinmantra Library, Ara

टए॥सवइयाइकतीसा॥ अकुलीकोंकुलीसेवैवालकोंविरधसेवैकायरकीसेवासूर
रातियोंसवहैहै॥दुष्टकोसज्जनसेवैहिंसककोदयावंतसठआगेपंडितपुरुषआगि
कहैहै॥कुष्टीगलितंतासोंकामिनीकरतभोगआनसखीषांनपानलिएकरिरहैहै॥
औसोधनसोभाजनज्ञानकोपरमवैरीतासकूंषलकलोगसवहीपेचहैहै॥ए०॥दोहा॥
चक्रवत्तिकेसोजुगल॥औरभूपतिलोइ॥एसवयदवीदामहै॥मुरखमनवचहोइ॥ए१॥
चौपई॥नृपवचसुनीहास्तीवोलीया॥सीसनाइकरिउत्तरदियो॥मोपरदयाजूपनीतो
हि॥षतएकअुमटीजेमोहि॥ए२॥घासगढ़ाजोवरिजितहोय॥दुहूंगलकीषेतीहोइ॥नृ
पहास्तीकेवचनसुनेइ॥सीसधूणिमुहअगुलीदेइ॥ए३॥कौनवचनयहभाषेदीन॥आ

॥६८॥ षरहाल्लीवुधिकरिहीन॥याकोदूसननांहीकोई॥कर्मलिष्योसोईपैहोय॥९४॥कर्मनुदैमो
हिदूसनभयो॥ताकोआदरमैवहुठयो॥मनवचत्रासषढैजोकोइ॥आषरकुलसारु
दोहा वुधहोइ॥९५॥निजगुणनागतजैनही॥जोहरराषेकोल॥नारायणभूषणाकरै॥गुंजाव॰
ढैनमोल॥९६॥जच्चासनीनपूजिये॥गुणपूजैसवकोय॥मोडलटीकीभात्तसंधि॥नावहु
मणिमयहोइ॥९७॥इसीभांतिनृपशोचकरि॥वचनपयंपेएह॥एकषेतशुभआगरको॥मं
त्रीयाकोंदेहु॥९८॥मंत्रीसुनिकरिनृपवचन॥लीनोसीसचढाय॥जावजीवलोआगरको
षेतदियोतिसजाय॥९९॥चौपई॥देषिषेतहाल्लीदुखकरै॥अश्रुपातनेत्रनितेझरै॥हुं
नृपकेवूडोविस्वास॥अहोनृपतिनृसाकीराज्ञि॥१००॥मैसतरषिषेतमांगियो॥इसो॰

षेतनृपमोकुदीयो॥ तामेकछुवनहोइनपाव॥करेंजुकछुतिसनामोजाइ॥१॥दोहा॥क
र्मत्रिष्योसोपाइयै॥वहुतकरैक्याहोइ॥ग्रहोधर्मकीगाइका॥दंतनदेषैकोइ॥२॥हमकर
मीइहकामके॥नीकोकरिहोंमोर॥इसोनदेतोनृपतितो॥कसैहमारोजोर॥३॥चौपई॥इ
सोविचारकेघरिग्राइयो॥सारीरतिमतोतिनपाइयो॥प्रातसमैस्नान्यावहुत्तेइ॥तिनके
हाथकुहाडीदेइ॥४॥तरुकाटेजउसेतीकुधी॥हाल्लीकोंकहिकेसीवुधी॥व्यापिसुवासर
हीचहुंग्रोर॥भ्रमरसमूहकरैवहुसोर॥५॥जुन्नतसरत्नसज्ञानसमसार॥मूरषवात्यकरेति
सठारि॥ज्योंमुरखकोफूटोहियो॥भुहहस्ततत्रोपमकियो॥६॥दोहा॥मूरखवसगत्येहृ
दकी॥षोयोनामनिघंड॥ज्योंग्रन्याईपुरुषघरि॥मारिकरैदहवट॥७॥चौपई॥षेतसवा॥

॥ढाल॥ रिमुगधवापडो॥ राजा आगै हूवोषडो॥ वोत्योहाल्लीसीसनवाइ॥ महाराज कृषिदेषोजाय
८ भूमिपति अतिसमकितकरी॥ सगलीधरतीकरसमकरी॥ वोत्यो राजासाहसधीर
॥वोयोकहातांहिमेवीर॥८॥हाल्लीवोत्योसुनहुसुजान॥ कूडकहनठाकुरकीआन॥सक
ल कुटंबभावतोधान॥कोदोवोयोमेराजान॥९॥दोहा॥कुमतिदेषतांमूढकी॥हसकरि
वोत्योराइ॥ विगरजल्योजेठकुहुइ॥मोकोंआणदिषाव॥१०॥चौपई॥ हाथलकडियापा।
ईपरी॥राजाआगैआणकरिधरि॥राजाकहेतासमदभाव॥याहिवेचिकरिवेगोआय॥११॥क
होमोलयाकोनपकहो॥मेरेमनकोसंसैदहो॥मुगधमोलमेकायोरही॥वणिकदेइलेसी
ईसही॥१२॥काढलेइआयोबाजार॥एकवाणियेलियोहकार॥वणिवरताकीकीमतिकरी॥

All Rights Reserved © Shrenik Jain

पंचदीनारहाथपरिधरी॥१३॥ताहिदेषीकरिहात्तीषडो॥मूर्छाषाइधरणिमेपडो॥षिण
कहुइतासमुधभई॥होमेरीमतिकैठिगई॥१३॥एकपलकचितरहैनधीर॥आसानलताषि
योशरीर॥विनाविचारैकरसीकाज॥जाकोहोसीजमपुरवास॥१४॥दोहा॥हाथकाठको
दर्वमे॥पायोसठअभिरम॥कोजानैसववृत्तको केतेनपजतदाम॥१५॥नवनिधान
समषेतनप॥मोहिदियोसुखकार॥विनाविचारैपापमति॥वात्तिकरैअतिछार॥१६
राष्योहोथोजततनिकर॥सोचकरिमनमांहि॥परिजनसवसुखपावतो॥यामेमिथ्यानां।
हि॥१७॥सोरठा॥जेतोउरनिवास॥तेतौपूरैपरमगुरु॥कहैमनोहर॥सोचनेकीजेचतुर
नर॥१८॥चौपई॥इसप्रकारहात्तीदुखकस्यो॥शोकसमुद्रमेमूरषपस्यो॥विनाविचारैकर

सी काम ॥ जिहि को जासी सुख अभिराम १९ यहे सीष मेरी मन धरो ॥ विना विचार काम म
ति करो ॥ काम विचार विना नहि होइ ॥ जग मे करै सु मुरख होइ २० ॥ सोरठा ॥ हाती सरिषो
को इ ॥ अविवेकी होइ तुम विषै ॥ तो हू ऽ र पो स्तो इ ॥ कहत मनोहर कथा शुभ २१ हाती मु
रख की कथा तुम सो कही वषान ॥ चंदन त्यागी की कथा ॥ कहूं सुनो चित ज्ञान ॥ २४ ॥ इति
अगर कथा समा पू ॥ चौपई ॥ मगध देश देश न शिरमोर ॥ मथुरा नगरी नृपति मठोर ॥ राजा
शांतम नारि पुसात्र ॥ शुभ गुण मंडित दीनदयात्र २५ एकै दिवस करम के भाइ ॥ नृप ज्यो
दा घ नृपति वित्त लाइ ॥ तड फ ड़ाइ चित धीर न धरै ॥ नैठो ज्यो त्यो मछी करै २६ ज्यो ज्यो
वैद्य करै नृपचार ॥ त्यो त्यो ताप वधै अधिकार ॥ अष्ट प्रकार वैद जी करी ॥ ता की औषधि

एक नपुरी ॥२६॥ मंत्रीकों अति चिंता भई ॥ मथुरामांहि घोषणा दई ॥ राजादधिवांवैसोई ॥
ताहि गांवमौदी जैलोइ ॥२७॥ अस्वाकोवहु आदरकरै ॥ जावजीवगुणाहिरदैधरै ॥ यहतो क
थाइहांहीरही ॥ सुनोकथा जोदूजीकही ॥२८॥ करमजोगइककारणभयो ॥ वणिकदिशा
लोटीलेगयो ॥ धोवीकेकरलकडीऐक ॥ तासंगलेगेभंवरअनेक ॥३०॥ दोहा षट्पदसंगलै
वाणियैं ॥ मनमैकरौविचार ॥ यालकरीगोशीरकी ॥ यामेफेरनसार ॥३१॥ फेरिवाणियेअद्भु
तवुद्धिकरी ॥ पुत्रसाथितसबुकटीभरी ॥ गेवोबालकलैनगाह ॥ धोवीपूछेसुनिहोसा
हु ॥३२॥ कोनकाजबालकविलमाइ ॥ जोमांगै सोदेहुमंगाइ ॥ चुनिरदै होइमतिसही ॥ बा
लकको दुखभंजोकही ॥३३॥ दोहा ॥ बाणियो बोलैरंजकसौंमधुरवचनगंभीर ॥ तेरेकरकी

झाकरी॥यह मांगतहैवीर।३४॥चौपई।धोवीफिरभाषेवचदीन॥नगरसेठतुमहुमजुक
मीन॥नगरसेठतुमहमजुकमीन॥अहोसाहुकरत्नकरीकाज॥कांईरुवावोयाकोरा
जि।३५।तेत्नकरीवात्नकतजिगाहु॥तुमहमेरपीठीदेगसाहु॥अैसेवचनरजकनुच
रे॥वनकवात्न आगैतैधरे।३६॥दोहा॥धोवीत्नकरीसाहुकों।दीनीकरिमनुहार॥साहु
वुद्धिनिधिरजकसों॥भाषेवातविचारि।३७।तेरोविसवोतेहिको॥तुधोवीहमसाहुको
॥देवोजाहेवगडमें॥वांधितेहुधरिजाहु।३८॥चौपई।धोवीमनमेभयोषुस्यात्न सहीसा
हुएदीनदयात्न॥वांधिवोज धोवीघरिगयो॥इहांऔरइककारणभयो।३९॥सोरठा।वा
णोवुद्धिप्रवीण॥रंचकत्नकडीघिसत्नई॥दाघपयाणोंकीन॥करपदनामित्नगावता।४०

सी काम ॥ जिहि को जासी सुख अभिराम १९ यहे सीष मेरी मन धरो ॥ विना विचार काम म
ति करो ॥ काम विचार विना नहि होइ ॥ जग मे करै सु मुरख होइ २० ॥ सोरठा ॥ हाथी सरिषो
कोइ ॥ अविवेकी होइ तुम विषै ॥ तो हठ रो तो होइ ॥ कहत मनोहर कथा शुभ २१ हाथी मु
रख की कथा तुम सो कही वषान ॥ चंदन त्यागी की कथा ॥ कहूं सुनो चित ज्ञान ॥ २४ ॥ इति
अगरकथा समाप्त ॥ चौपई ॥ मगध देश देशन शिरमोर ॥ मथुरा नगरी नृपति मठोर ॥ राजा
शांतमना रिपुसाल ॥ शुभगुण मंडित दीनदयाल २५ एकै दिवस करम के भाइ ॥ नृप ज्यो
दाघ नृपति वित्त लाइ ॥ तडफडाइ चित धीर न धरै ॥ नठै ज्ञान ज्यों मछी करै २५ ज्यो ज्यो
वैद्य करै नृपचार ॥ त्यों त्यों ताप बधै अधिकार ॥ अष्ट प्रकार वैद जी करी ॥ ना की औषधि

ठौर ॥ वणियासमठगकोनही ॥ मेरेकीयोभौर ॥ देवोजादेकाठको ॥ ४८ ॥ वाणेातजैनवाणि
यामेकछुमिथ्यानही ॥ घात्योघावपिठाणि ॥ वाणेासरवसत्यूटिके ॥ ४९ ॥ जानोंमनवच
काय ॥ यामेधोषोकछुनही ॥ ताकीमूठोमाय ॥ वाणेाकोमोमेंकह्यो ५० ॥ दोहा ॥ गुपति
देइनोसवजिये ॥ परतषीसंसोएह ॥ अपनोघटतोपरअधिक ॥ तिनसोकिसोसनेह ॥
५१ ॥ आदिनमंत्रमुदितविरधि ॥ कठिनकामकृतिजानि ॥ कामसरेकुनिनमंत्रकै ॥ वणि।
यापिभुनसमान ५२ ॥ चोपई ॥ थानआपनेंसिंघसमान ॥ जंबुकसमपरदेशावषाण ॥ मे
ढणसमेयेस्वानसमान ॥ रणिमृगसममानोपरवान ५३ ॥ बगुलाकीपरिमौनजुकरै
भीमसेनसमभोजनधरै ॥ वसनसस्पजोंवहुविद्विगहै ॥ कपिसमानथानेनहिरहै ५४ ॥

आपत्तिषै आधरकी पांति॥ हींगमिरचजीरेसवभांति॥ फुनिकरिताहिवचावोकोइ॥ह
गमरजरवांचेयोलोइ॥५५॥ कूडदुष्टनहीव्यालागार॥ देषतत्रूटैसवसंसार॥ कामपड्या
सोंविनोकरेइ॥ सरैकामतववांईदेइ ५६॥ दोहा॥ वाणपासोंगुणजोकरै॥ कछुनहिदीसै
मिष्ठ॥ अगनित्रजैजिमरोगकों सोनहीकोइत्यादीव॥५७॥ वणियासमदुष्टकोनही॥ करै।
मित्रधननांश॥ तातैंवरवेशमत्री॥ परगटवैचैमांस॥५८॥ सोरठा॥ सावसेवुरोसुनार
ताहुकोगुरुवाणियो॥ धरमवंतगुणसार॥ सहीसरावगजाणियो॥५९॥ दोहा॥ इसप्रका
रसोकाअगनि रजकदज्योसवगात॥ लोभठगावैचतुरनर॥ कहारजककीवात॥६०॥ कोटि
कचंदाऊगवै॥ दिनपतिलषहजार॥ तमअज्ञानमिटैनही॥ गुरुविनघोरअंधार॥६१॥ नरअं

All Rights Reserved © Shanti K. Jain
Gurumandir.com

धोदेषैनजरि। नजरिअंधनरमोहि॥ ज्ञानअंधनरनजरनहि देषोमिथ्यानोंहि।६२॥सो
रठा॥ धोवीसमजोकोइ॥हृदैभून्यद्वैनुमविषै॥तोहूंडरपोंनोइ॥कहतकथासुंदरसुन
ग।६३॥इतिचंदनकथासमाप्तः दोहा॥एकसमैएचनुरसठ॥वनवैठैतजिगाव॥तिनसमेंइक
महामुनि॥वीरवाघतसुनाम।६४॥चौपई॥निमनेहीसवकोचितहरै॥निःकामोपिमहा।
वत्तधरै॥धरैग्रंथपरिग्रंथकरिहीन॥अंतरनिर्मलअंगमलीन।६५॥गुपतिवंतनिरवंध
अनूप॥सवजनवल्लभरूपकूरूप॥महावुतसिंघासनसार॥चढ्योकरमदलंजनहार
।६६॥मुकतसकलपापतैजती॥पंचसुमतिपालैजगपती॥सकलजीवरषिकगुणासार॥तर
वरधमविधावनहार।६७।सत्यविषैमुनिवरचितधीर॥पाथोनिधिसमवुधगंभीर॥करैस।

माइकमनवचकाय॥ ताकोचितइतउतनहीजाइ॥६८॥ षटपदछंद॥मेरसमानअडोलते।
जकरिसूरवषाणहु॥कोतिमानशशिजिमौसिंहसमनिर्भयजाणहु॥ मनवंछतदातारकल्प
पशाखासमकहिये॥ पवनजेमनि:संगआवरगुणकैसेलहिये॥ देवमार्गनिर्मलजुभणि
सूरवीरआयेमरण॥मनरहसमनोहरइमकहैइसोसाधभवभयहरण॥६९॥सवईयाइकती
हरिहरब्रह्मावरखगाधीशनरवंसवांधिलीनेनविशंककीनीमनमै॥ भगवोभरडावैसधो
स्तीयोसदरवेश॥जैनमुद्राधरिभाजिभाजिगयेवनमें॥ स्वेतांवरजटाधारीपभुपंषीअ।
धिकारीसवजीतिमूंठमोरठाडोरलोरणमैं॥ऐसोमारमुनिनाथमारिकियोदहवटतिन
केपादारविंदसेवोतिहूपणमै॥७०॥दोहा॥इसोकामजीतोसुनो॥ब्रह्मचर्यदलसाज॥दोष।

अठारहवा पदा ॥ जयादहुंदिशिभाज ॥ ७१ ॥ सवईयातेईसा ॥ आतमध्यानधरैदिनरातिपरि
ग्रहछांडिरहैसुखवासी ॥ चेतनस्योंसमभावकरैरतजेवपुआसचिदानंदभ्यासी ॥ गुणछत्री
सजुशोभितहैकरमिंधनजारिशिवैपुरजासी ॥ होभविजेनमसेंमुनिचंदहुतौअघजारन
लहौसुखराशी ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ अंधिरोकिंचित तनुविषै ॥ लायोश्रीमुनीराज ॥ सकलपदारथ
जानिया ॥ मुक्तिवधूसुखकाज ॥ ७३ ॥ चौपई ॥ थावरजंगमरिष्याकरै ॥ विषैशत्रुकोवहुवि
धिहरै ॥ भव्यजीवकों देनुपदेश ॥ धरमकाजवो लैभुनरेश ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ इमोमुनीस्वरदे
षिकै ॥ चारोमूरषधाइ ॥ मनवचक्रमयाइनपरइ ॥ धरतीसीसनवाय ॥ ७५ ॥ पावइंद्रीदृढ
मेदिनी ॥ धर्मवृद्धिदुखनाश ॥ सोमुनिवरतिनकोंदई कहोमनोहरदास ॥ ७६ ॥ चौपई ॥

All Rights Reserved to Shri D.K. Jain
Oriental Library, Arrah

देअशीसमुनियोजनगयो॥ च्यारोंमुरखझगरोमयो॥ आपसमैंकीनो वकवाद॥ जानैन
हीधरमकोस्वाद॥७७॥दोहा॥ धर्मवृद्धिमोकुंदई एककहैनहिमोहि॥एककहैनहिमो
हिदी॥एककहैनहीतोहि॥७८॥इसीभांतितिणझगडतां॥वीतगयोइकजाम॥मूरखकेए
हीलक्षणा॥करैनतत्त्विमकाम॥७९॥एकवटोहीवापडो॥वोल्योमनवचकाय॥वाही।
कोपूछोनक्यों॥झगडोदेइचुकाय॥८०॥मुनिवटोहीकेवचन॥महामुगधकीराशि
वाहीमुनिवरकेपीछे॥दोडिचल्लेइकसास॥८१॥एकवटोहीसामहो॥मिल्योकरमकेभाइ
॥कोभइयासचुजातहो॥मोहिकहोसमुझाइ॥८२॥एकसाधइहाआइयो॥हमकीनोव
णाम॥मुनिअसीसहमकोंदइ पूरणवंछितकाम॥८३॥सोअशीससुखकारणी॥काहि

दईमुनिराज ॥ वाहीमुनी पैजास्तहै ॥ याहीपूछनकाज ॥८३॥ चौपई मुगधवचनसुनि॥
वारंवार ॥ पंथीमनमेकरैविचार ॥ एमूरखमूरखशिरआहि ॥ एमुनीशदुरखदेशीजाइ
८४॥ पंथीबुद्धिमनमांहिकरी ॥ तिनसेतीवाचाउच्चरी ॥ तुलमेंजोसठदीरघहोइ॥ सा
चकहतहोंमानोतोइ॥८५॥ तबमुनिसोवाचाकई ॥ भुसअशीशमोताकुदई॥ तातेस
मझिआपमैंएह ॥ दीरघलघुसठजानोजेह ॥८६॥ यहसुनिपंथीकोवचसार ॥ परसपर
सझगडहीअधिकार ॥ झगडतझगडतनगरमंझारि ॥ गहेजहांवणिकवाजार॥८७॥ अ
होपंचतुमपकरेपाइ ॥ करोहमारोउतमन्याइ ॥ कह्योसकलतिननिजव्योहार ॥ पंच
सकलमिलिकरहिविचार॥८८॥ दोहा ॥ अपनीअपनीवारता ॥ मुगधपणाकीवीर ॥ क॥

होवातहमसौंसकल्प॥ मनवचक्रमकरिधीर॥ ६९॥ सोरठा॥ वोल्योमूरखएक॥ मेरीमू-
रषतासुनो॥ सुनतोहोइविवेक॥ तातैसुनियोकानदे॥ ९०॥ चौपई॥ दोइकामिनीमेरे
भ्रात॥ मानहुसकलआपदामात॥ प्राणहुतेंप्यारीअतिषरी॥ रतिसमयेदोनोसुंदरी
९१॥ दोहा॥ जैसाकोजैसामिलै॥ तवहीरंचरंग॥ प्रकृतिविरोधीजवमिलै॥ तवहीहोइ
कुरंग॥ ९२॥ तौभीमेरीतिनविषै॥ अहनिशिकंपैकाय॥ दोमीनीविचजैदरो॥ कहिकोलौं
ठहराइ॥ ९३॥ तिनसेतीक्रीडाकरत॥ कालगयोवहुरंग॥ एकसमैरजनीविषै॥ सूतोदोनों
संग॥ ९४॥ दोऊभुजदोऊत्रिया॥ शिरतलसूतीदेइ॥ मत्तोवुरोनविचारई॥ कामीहो-
इजिकेइ॥ ९५॥ चौपई॥ दीपगसिरहाणैतेधस्यो॥ दोनकेविचविधिवसपस्यो॥ क्रमि

क्रमि किती यक वीती रति ॥ मूंसै आनि गही तिन वाति ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ करम जोग मूसो मु
ग्ध वाति दई तिन डारि ॥ जल ती लोचन परि पुरी ॥ कछु न सक्यो सहारि ॥ ९७ ॥ सोरठा ॥ जिहका
चिर तैं हाथ ॥ काटि बुझावों वाति को ॥ सोई कोपै नाथ यहै सोच मन मैं बढ्यो ॥ ९८ ॥ दोहा
दोऊ भार्या भय ग्रसति ॥ तत छिन भयो अधीर ॥ लोचन फूटो ही भलो ॥ मन वच जाणहु
लोई ॥ ९९ ॥ सोरठा ॥ कहै मनोहर दास ॥ जो दूजी कामिनी वरै ॥ तिस मुरख को नास ॥ लो
चन फूटै कहा भयो ॥ ९१०० दूजी पर णे नारि ॥ धिक्कु पर ये ता पुरिष को ॥ मन मैं देखि वि चार ॥
कहै मनोहर जो रिकर ॥ १ ॥ मो सम मान जग मां हि ॥ अथवा जैहो इतु मविषै ॥ या मैं मिथ्या नां
हि ॥ कहो आपनी वारता ॥ २ ॥ दोहा ॥ दूजो मूरख बोलियो ॥ सुनो हमारी बात ॥ एक रूप चि

तलाइकरि॥ मनवचजानोभ्रात॥३॥ विधिनाकरिकैएकठी॥ सकलआवदाषोंनि॥ है
कामिनीमोकोरची॥ वैपुरातनजान॥४॥ सवइयाइकतीसा॥ अतिहीकरालविकरालबाल
मालकालजालअधरुशरबालअंगिअंगिअतिहीं॥ इतनीभुषोंनीनेकषातहे
नअरसानीमोतिकीनिशानीवानीवोलतअसतिहीं॥ कुंचजैसैसूषविषैवागुलि।
रहतझूलिमदनभवनकोनहाथधरमितिहीं॥ अतिहीकेकात्तीमतवालीरंडगात्ती
नमेधिकजाकोजीयोअैसीविषैमानैंरतिहीं॥५॥ चौपई॥ इसप्रकारकीकामनिदोई॥ दई
विधातामोकुंहुन्जोई॥ दोनोमोकुंपीनकरहि॥ तिनकीनुपमादीजैकाहि॥६॥ एकपषात्रै
दक्षिणपाव॥ दुतियाकोंवावैपरिभाव॥ इहविधिसेवतवहुदिनगया॥ करमजोगइकक

रणभया॥७॥देषिदाहिनोपाइपधारि॥वांवैपगपरिधस्योसवांरि॥त्रघुत्रियअपनेपगपरिपा
ई॥निरषिमूसलत्रैतोक्रोधाइ॥८॥देषिरषिजीतापैगई॥क्योंरंडातोंअधिकीभई॥मेरेपग
परदीनोपैर॥नुंजानोथिनांहीवेर॥९॥दोहा॥गयोदेवकोदेवपणि॥पीतत्रकोभीमोत्रि॥
गयोपापणिरंडिका॥अैसावोलनवोत्र॥१०॥मनमैनूंहीरहतहो॥पतिवरतानुनारि॥जा
नोतेरोचरितहों॥मनमैदेषिविचारि॥११॥एवातेसुनिसोककी॥वोलीषरीरिसाइ॥हेरं
डाशिरऊपरै॥षरीचढीनूंजाइ॥१२॥जैसेदुःकृततैकरै॥तैसोकोनकरए॥मस्तकतेरो
मूडिकरि॥षरपरवेगिचढाय॥१३॥पंचयटीशिरराषिकै॥मुंडपरस्याहीत्राइ॥घात्रि
सराईमात्रिका॥सगत्रेसहरफिराय॥१४॥इसप्रकारतोकोंकरै॥तोनहितिरषितहोइ

गयो पूत घर को धनी ॥ बैठो सरवस षोइ १५ ॥ ऐसी परि दो नो त्रिया ॥ भई परस्पर रारि ॥ दे
षो बैठो बापडो ॥ नी चीदृष्टि निहारि ॥ १६ ॥ फुनि दूजी मन रेसकरि ॥ मूरख त्रिय ठाय ॥
दूजो पग लै तोडियो ॥ दुष्ट रंडिका धाइ १७ ॥ दोनो मैं करि मोवनी ॥ नैकन निक सेवा गदो
नो हरि विचर कन्यो ॥ घरि घरि को पैठा ग १८ ॥ सोरठा ॥ जो नर दूजी नारि ॥ व्याहै मन संतो
षकरि ॥ सो मूरख शिरदार ॥ ताको जीवन है कठिन १९ ॥ शीलवंत सुसरूप ॥ दीरघ कुल की
ऊपनी ॥ वरन्यो नारि अनूप ॥ को नृदिन जीयो चहै २० ॥ षटपद छंद ॥ त्रिय कुशीलव
त हीन हो इ जो दूजी परणे ॥ वृद्धि वा त्रिय वरे का ठि दे आयेसर णे ॥ हा कि मकरै अनीति
पुरुष पर त्रिय नित भोगी ॥ वुद्धि या करै सिंगार और परिग्रह तयोगी ॥ पूरव विपाक धनपा

इकरिदानपुन्यनहितिहिसदन॥परिहरैमित्रसंकटपरै॥देहुधूलिइतनावदन।२१।दो
हा॥ तवतैहुंघोरेभयो॥जानैसकलजिहान॥वडौनफौजीवनछुटै॥नातरजातेप्राण॥२२
सरठमोमैभईजुसोज॥सोसगलीतुमसोंकही॥जिनकोजैहोघोज॥सोदूजीकामिनीवरै
२३॥सीघसुनोयहमूलि॥जोदूजीकामिनीवरै॥तिनकैमस्तकधूलि॥कहैमनोहरजोरि
कर।२४॥नारिदोइकोएह॥दुखपायोअतिसुजना॥मैकहियोसवतेहु॥सवजगछाडो
दूसरी।२५।जोनरदूजीनारि॥व्याहेमूरखवाणियो॥ताकाघरमेंधारि॥आठपहरत्याजि
रैहै।२६॥दोहा॥चक्रवर्त्तिसमहोइवल॥तोवनहोइवसुनारि॥एकनिपाछैदूसरी॥मनमैं
देषिविचार।२७।वाघनिसांपनिवशिकरण॥जगमेपुरुषअनेक॥एकामिनिवशिकरण।

कों॥ कोई भूपरिएक॥२८॥ सोरठा॥ इसप्रकारको भ्रात॥ जो मूरखहोइ तुमविषै॥ कहौ आपणी
वात॥ आदिअंतविस्तारकरि॥२९॥ चौपई त्रितीयमूरखवोलेएव॥ विनतीएकसुनोहोदेव॥
मुझसमानमूरखनहिकोइ॥ मेरेकामसुनोतुमलोइ॥३०॥ दोहा॥ गयोसासुरैएकदा॥ प्राण॥
पियारीलेन॥ जाइत्रियानिजिनोगवी॥ महामदनसुखदैन॥३१॥ वहुतदिनोकेमिलेतें॥ क
हीपरस्परवात॥ रसकारीसुखवर्द्धिनी॥ तातेंजयजे धात॥३२॥ दवोल्योवातेंकरत॥ दोइ
पहरकोखनहूवा॥ पहिलेवोलेकामिनी॥ हारेसोदशहीपूवा॥३३॥ चौपई॥ घृतगुलल्योलित
तानाकिया॥ हारेसोदढीलनत्रिया॥ यहेहोहअहोभरतार॥ शीलवंतनहिलोपैकार॥३
अशुभयोगइककारणभयो॥ तिहिथानकतस्करइकठयो॥ तिहीपापीसगलीधनलियो॥ दो

नोमधिको इनवोत्तियो ३५ दोहा ॥ सवधनतीयोसोधिके ॥ मयोमनोहरकाज ॥ जारचो॥
रकोंप्रीतमां ॥ निरभैथानकराज ॥३६॥ चौपई ॥ फुनितसकरत्रियकोंपरधान ॥ षेचनत्राणो
वसनश्रयान ॥ जवकामिनीवोलीरिसभरी ॥ अरेमुगधतोहिआईमरी ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ धिक
परोताजीवतवि ॥ तात्रियकोअपमान ॥ देषतहोतापुरुषसो ॥ मनवचमत्तोमसान ॥ ३८
॥ चौपई ॥ प्राणप्रीयाकोवचनसुनेइ ॥ हसिकरिमूरखउत्तरदेइ ॥ हारीहारीमनमेजोइ ॥ प्रथ
मप्रतिज्ञाकीनीसोइ ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ घृतगुलतोलितहात्तिकै ॥ देहुनकीजेढीत्त ॥ वारिजनैनी
दृगपूवा ॥ रष्याचाहोजीत्त ॥ ४० ॥ सोरठा ॥ पितानपाजितिदाम ॥ धर्मकामताकेविषे ॥ मूरखता
केकांम ॥ करिकैवोयोप्रीतमा ॥ ४१ ॥ अैसोमनमैजानि ॥ वचनटककीजैनही ॥ तातैजसधन

हानि॥ होइ मनोहर कहत है॥ ४२॥ षटपद छंद॥ वचन पंच पांडव आदेश सब आपनो खोयो
॥ वचन राव हरिचंदनी च घरियाणी ठोयो॥ वचन राम दुख सह्यो जाइ वन वास बसायो॥
वचन लंक के धनी सकल कुल नाश करायो॥ धरम करम पूजा विषै वचन टेक जु त्रिभुवन क
रे॥ धन सुजस जाइ ता वचन तैसोई वचन मन वच तज्यो॥ ४३॥ सोरठा॥ जीवत तन को
नास॥ करै वचन वसि मुगध नर॥ कहै मनोहर दास॥ नासो कहि कहिये कहा॥ ४४॥ दोहा॥
कष्टि कष्टि धन जोरिकै॥ कहै मनोहर दास॥ होइ वचन वसि मुगध नर॥ करै वस्तु सब ना
श॥ ४५॥ ग्रहीट कछाडै न सठ॥ जदपि जीभ गति जाइ॥ मीठो कहा अंगार मै॥ ताहि चको
रचुगाइ॥ ४६॥ सोरठा॥ जै जग ढठो सर्व॥ मो सम मूरख को न ही॥ होइ वचन वसि सर्व॥ खोयो

मैपापीसकल॥४७॥मोसोमूरखहोइ॥तुममैकोइमुगधनर॥कहोआपणीत्योइ॥मूरखता
कीवारता॥४८॥दोहा॥चौथोमूरखवोत्तियो॥मनमैकरिअभिमान॥मेरीतोवातैसुनो॥ता
तेकंपहिप्राण॥४९॥चौपई॥मनवेछितशुभसुखदातार॥स्वर्गावासमम्रोमैसार॥इसे
मासरैत्तनात्तेन॥गयोसकलइंद्रियसुखदेन॥५०॥नानाविधिकोभोजनभयो॥मानों
विधिआपणनिरमयो॥नांतिभांतिकोव्यजनसार॥वर्णनवहुविधीहोइपसार॥५१॥कं
चनभाजनमधिमेल्हियो॥तत्तावसिभोजनतुछकियो॥इहिविधिगएतीनदिनसार॥
जठराग्निनउपजीतिहिवार॥५२॥दाझणत्तागेदशशुभप्राण॥प्रत्तयकात्तकीअगिनिसमा
न॥छुधात्तगीमोकुंदुखदेन॥तवढूढोग्रहमैसवत्रैन॥५३॥दोहा॥सेजतलैचावत्तभयो

देष्यो भाजनतो इ॥ क्षुधा आतुरदेषैनही॥ सनमुख आवैकोइ॥५४॥ तेचावत्तमुखपुरियो
कियोनकछूविचार॥ तोरैमरजादाक्षुधा॥ यामैफेरनसार॥५५॥ षटपदछंद॥ कृपणवु।
द्धिजसटरैकोपदिढप्रीतिविछोरैडभविधंसेसत्यषुधामरजादातोरै॥ कुविसनधनछ
यकरै॥विपतिथिरतापदटारै॥ मोहमरोरैज्ञानविषैशुभध्यानविडारै॥ अभिमानविछे
दैविनेगुणपिशुनकर्मगुरुतागिरै॥ कुकलाअभ्यासनासेसुपथदारिद्सोंआदरठि
लै॥५५॥दोहा॥ तिहिअवसरमोकामिनी॥ आइरूपविशाल॥ मुखनचलायोलाजवसि॥
फूलगयामोगाल॥५६॥सोरठा॥ गयफूलमोगाल॥ तोचनदोनिकसेपरे॥ देषरिमेरीचा।
ल रुदनकरतमोपैगई॥५७॥दोहा॥ अहोमातमोप्राणपति॥ कोईकरमकेभाई सूजिग

योसारेवदन॥कीजैकौनउपाय॥५८॥चौपई॥ऐसेवचनसुनिभोत्रियतणा॥सासमो॰
आईततषिण॥ज्योंज्योंकरस्योंदावैगात॥त्योंत्योंकरेकरैविज्ञात॥५९॥रुदनकरै
मोहिकामिनवहु॥तासूणीनगरजोषितासहु॥मिलिआईमोदषनव्याधि॥कोऊकहै
साधकोऊअसाधि॥६०॥कहैएकमतिकरेअपसरेस॥माताकोयहहूवोदोस॥व्याह
समैसविसर्जनकियो॥तातैदविमहादुखदियो॥६१॥एककहैयहसांचीकही॥मेरेम॰
नमेआईसही॥अकसमातवेदनहैइसी॥देवदोसविनहोइघरवसी॥६२॥करमुखदे
अणिवाणीचई॥करणिसुचिकायाकोभई॥वेगिजपाइकरैइसकाम॥वेदवुलावेदकरिदा
म॥६३॥दोहा॥कोऊवातकोऊपितकहैकोऊकहैसनिपात॥इसप्रकारपुरयोषिता॥योडि

महसइकवात।६४।सोरठा॥ होणहारकोवाइ॥ आयोवेदसुजाणतहि॥वातकहीसमुझाई
।मेरीसासूबोलिकरि।६५।चौपई॥ ज्योंज्योंमुखकरसोचायंति॥वेदवदनमुखकटन।
करंति॥नैकनमुझकोंपीडाहोय वैदविचारीहिरदेजोय॥६६।सवविधिजाणीनिजमन
मां॥याहिरोगतोकोऊनांहि॥जोपरपंचकरोइसिठाम॥तोमोहिवहुतमिलहिगेदाम
६७।सोरठा॥ कोऊवस्तुमुखमांहि॥मेलीमूरखभूषयत॥यामेमिथ्यानाहि।वाईनाहिला
जषुति।६८।चौपई।वैदचतुरमनमांहिविचार॥इतनतदेषिदिष्टीनिहारि॥ज्यएोचावत
इसमुखवीची॥फूलेगालसजत्वकरिसोच।६९॥अडिल्लछंद॥तंदुलभाजनमांहिषां।
ढितलदेषियो॥वामेमुष्टिसमानचिङ्कुनिपेषियो॥मातातंदुलव्याधियाहिमनवचभई

कष्टसाध्यउपगारकरेजोजीवई।७०।सोरठा मनवंछितजेदेव॥देहिमोहिजोत्योभतजि
॥रोगगवाजेसर्व॥पहिलेहूंमाजोनही।७१॥दोहा॥ नाईकोत्तीवाद्ही॥मालीविरधाना।
रि॥पंचवेदएकलूमें॥मनमेंदषिविचार।७२।सोरठा।इनमेंकेजोकोइ॥जषधिवर।
जैमोतनी॥तोहूंआपणीत्योई॥विद्यापरगासोंनही।७३।पहलेतीजीठौर॥मेरोतुम
नपतीजहु॥मेरोमकसुदऔर॥पाठऊगरतकोफिरै।७४।एपेयारोकपचास॥एकभैंस।
वागौजुगम॥कहेमनोहरिदास॥तीजीठांहरिमेलिया।७५॥चौपई॥शास्त्रतेइमोचीरो।
गाल॥निकसैकीटकबहुतविसाल॥होइहोइसबनारीकरै॥वारंवारवेदपगपरै।७६
भाषितदेइविनौबहुकियो॥योभरतारवेदतेंदियो॥वासमयेमोपीडाभई॥तापीडाकों

जालै दई॥ जो मैझूठ त्याजपणा गयो॥ अपणो किधो आपही त्यागो॥ गीतनादकुनिक
वितभणंति॥ सुसरयेहसेग्रामकरंति॥७७॥ जीमतिवादकरतेव्यापार॥ एतीगहरत्या
जनिवारी॥ त्याजकरतसहीओगुणहोई॥ तहांत्याजछांडसवकोइ॥७८॥सोरठा॥इतनी
ठाहरत्याज॥ जोनरकरसीमुगधबुधि॥ ताकोउत्तिमकाजु॥ सिधनहोइमनुहरकहै
७९॥ प्रथमफडायोगात्र॥ मूवाथैदुखवहुहुवो॥ पाछैगयोजुमोत्र॥ करमिकरमिजोजो
रिये॥८०॥ धरमअरथअरुकाम रतनअमोलिकजगतमें॥ षोयोसठअभिराम
झूठीत्यजाठानिके॥८१॥चौपई॥ मूरखताकीवातेकही॥ मनमैपंचविचारेसही॥
तजिमुत्राहिजोमनवचकाय॥ हमरोझगरोदहुचुकाय॥८२॥ बोलेपंचमुगधिकहेकाहि

अग्रवाल सम सम वही आहि॥ तुम सम वही सम देषो जोइ॥ मूरा मोठ मैवडौ न कोइ॥८३॥ वे
रपाल जन नृपति दातार॥ चाकर गर्व करै अधिकार॥ बुल्ल चारी हो इसु घटो रहै॥ नौड
होइ करि सोचहि गहै॥८४॥ सुकुल कामिनी घरि घरि जोइ॥ ए जाल्हो मकरै अधिकाई
मूरख के विचु पंडित जोहि॥ एती बात संभवे नांहि॥८५॥ सोरठा॥ कहै मनोहर दास
पंडित मूरख विचपरै॥ हुइहै ताको नास॥ मनवचक्रम जाणसही॥८६॥ झगडो चुके
वलोइ॥ बात भई घर घर विषे॥ मन मेदै ष्यो जोई॥ स्थान भष्यो पन हीलही॥८७॥ दोहा॥ पी
तम अपनो दुख भषे॥ कहा न को है तोहि॥ सज्जन मुनि के दुख धरै॥ दुर्जन हांसी होहि॥
८८॥ सोरठा॥ स्वेत कात्र भव भाव॥ दधि र कारज जे करै॥ वे पावै सुख सार॥ पंडित होइ भव॥

नवविषे ॥ ८९ ॥ एदशमूरख सोई ॥ जे असो होइ तुमविषे ॥ तो हुइर पौं जोइ ॥ मैएकाकी तुम
बहुत ॥ ९० ॥ इतिसठकथादशमीसमाप्त ॥ चौपई ॥ षट पुत्रकेवचनसुनेइ ॥ फुनि भूमीसुर
उत्तरदेइ ॥ वारवार नृभासैघणी ॥ हमहैसवैविचारकधणी ॥ ९२ ॥ फुनिविद्याधर बोल्यो
ऐव ॥ मेरी वातसुनहुनृदेव ॥ एकवातफुनि इर प्रोलोइ ॥ कहुसवैतुम जाणहुसोइ ॥ ९३ ॥
दोहा ॥ आसनपैसनपुस्तिका ॥ जोगपटानही होइ ॥ लोकरिझावनवेसिनही ॥ नही ॥
पादुकपगदोइ ॥ ९३ ॥ सोरठा ॥ इनकेवचनप्रवीण करैनयद्यपि शाचहै ॥ नारायणकी ॥
आण ॥ इनमेकोइनमाविषे ॥ ९४ ॥ आदरकरैनकोइ ॥ मेषविनाईजगतमें ॥ आडंवर ॥
करिकोइ ॥ पूजहियद्यपिनिगुण है ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ वामणकोल्यो सेकतजि ॥ हमपरि

धरिकैभाव॥ चाव्योफिरिफिरचावता॥ तामैलावणासाव॥९९॥ चौपई॥ कथा॥ मनोवेगवे
ल्योकरिचाव॥ विनतीएकसुणहुधरिभाव॥ सांचवचनतुमआगैकहू॥ पूरवअपर
विचारेसहू॥९७॥ भवनप्रसिद्धपुंडरीकदेव॥ जगतनुपावनमारणएव॥ जाप्रसाद
लोकशिवलेहै॥ जगव्यापिनिरमलसुधरहै॥९८॥ चक्रगदाधनुशंखसंयूत॥ लोक
सदनथंभायरभूत॥ शात्रुदवानलदानवहरै॥ लोकनुपद्रवकारणकरै॥९९॥ लषमी
अधरसरीदीताहि॥ ताकीनुपमादीजैकाहि॥ कौस्तुकमणितिसनुरिशोभंति॥ लक्ष्मी
धरज्योंशोभलहंति॥१०००॥ परमदेवदेवनिशिरदेव॥ वैकुंठपरमातमएव॥ इसोहैकि
वानहीकहो॥ मेरेमनकोसंसेदहो॥१॥ दुजवोलैअमोहरिआहि॥ कापैमित्रनिषेध्योजा

य॥ दुख पावक हरिवेकों मेह। सबकोदूरिकरैसंदेह।२। यामैभ्रांतिकरैधरिमान। जोनर। जानेंपभुवसमान॥ षगवोत्योदुजदेषोजोय॥ जैनारायणश्रेसोहोइ।२। नंदकीगाइचरा वतफिस्रो।। ग्वालरूपतिहिक्योकरिधस्रो।। मोरमुकुटशिरगत्तिकुंडमात्र॥ हाथत्रकुटि यासंजिगोपात्र॥४॥ दोहा॥ पाइककीपरिषांडवा॥ पेस्रोमनवचकाय। दूतकरमकहि क्योकियो॥ जरयोधनपैजाय। ५। चौपई॥ क्योंपारथकोंसारथिभयो॥ रथहांक्योंटलस नमुखगयो॥ विप्रानुम्हमनदेषोजोइ॥ चाकरसमोनदुषियोकोइ॥६। चाकरहोइदूर वकरिहीन॥ चाकरहोइसवैविधिषीन॥ चाकरहोवैमाननहिरहै॥ चाकरविनावडाईत्र है।७। सोरठा॥ धिकचाकरीमत्तीन॥ यद्यपिहोषेगढपती। वरजुगरीवीहीन। पराधीनक

वहुंनहुइ।८। कहैमनोहरदास॥परवीनधिकनरपती॥धनसेवैवनवास॥सुइछाचा
रीपुरुषजे।९॥चौपई।जोईश्वरथोकैसोराइ॥क्योवलिराजाजाच्योजाय॥नृपपदतजि
अपरधीभयो॥स्त्रीकुलनैपालीदयो।१०।जातिछिपाइइमचंडाल॥जातिछिपावै
धूरतवाल॥जातिछिपावैवातअलाम॥जातिछिपावैदुष्टगुलाम॥११।जातिछिपावैति
रजातीक॥जातिछिपावैटेढषटीक॥सरवीररणजाजैहोइ॥क्योंकरिजातिछिपावैसोइ
१२॥भिष्यामांगैसतकरिहीन॥भिष्यामागैमुरखमतीन॥भिष्यामांगैवांभणभाट॥
भिष्यामागैटूटौजाट।१३॥दोहा॥भिष्यासंमरणभलो॥देषोमनमैजोइ॥वहुजियोभि
क्षासहित॥थिकपरेतिसलोइ।१४।प्रीतमकरपरिकरकरै॥करतलकरमकरेइ॥जवतै

करतरिकरकियो॥नवतैमुवोगिलेइ।१५॥मानमहातमपेमरस॥गरुवत्तनअरुनेह॥ए
सवहीअहित्तेगए॥जवहीकहाकछुदेह।१६।धिकपरौतिनिजनन एकपसीकणका।
ज॥वैचैमानअमोलानग॥दीनवचनमुखसाज।१७॥सवइयाइकतीसा॥मानसनमा।
नकोपयानोहोतपहित्तेहीजदपहैमहागुणीगिरहंतेगरुवो॥अतिहीअजानचाहतन
तनथोरोहोतमनहोतहीउनहीदोरेकोसामरुवो॥कहैकविराजजसनचरनवारवार।
चिटुकीकेदेतत्तगैकटुकीतैकरुवो॥तिनदंतैतूसदंतैकैनदंतैफलदंतैजाणहूसवहंतैमं
गिणहहारिवो।१८॥दोहा॥जेटमासधूपैपरै॥प्यासैंनिकसैजीव॥पाणीपरयोआपणी
तोपांणीमांगिनपीव।१९।राजाहोइत्रिलोकको॥क्योंकरिमांगैभीष॥इसीवातभुवलोक

मै॥प्रीतमसुनियएदीष।२०।चौपई। विसुननांवजैसरवज्ञहोइ॥क्योंसीताकोपूछैलोइ
॥कामानसतापियोसदीव॥पूछतफिरियोवनचरजीव।२१। करिपद्मवत्रपत्रसमजा
नि। नासासुकुपिकवचनवषाण॥लोचनजुगश्रीश्रावकजैम॥विंवाधरननदामनिते
म।२२। पूर्णचंदसमआननकांति॥दसनमनोहरहीरापांति॥ताकीउपमादीजैकाहि
कामतरुणीनविपूजैताहि।२३।दोहा। सवतनसामुद्रिकलिए॥महारूपकीषांनि॥सर
सुंदरताकुपरै॥कोटिकदीजैदान।२४।चौपई। इसमारगश्रैसीसुंदरी॥देषीसर्वकाम
कीगरी॥वारवारदूपूछततोहि॥ताकोउत्तरदीजैमोहि।२५।दोहा। इसप्रकारहांडत।
फिरयो॥पूछतसवतिरयंच॥मेरजानैकुल्लमै॥पंडितवुद्धिनरंच।२६।चौपई॥श्रैसीकी

डाकरीमुरारि॥ मनमैदेषोविप्रविचार॥हममत्तीनहीनसववात॥दोषनहीहमक्रीड
नन्तात॥२७॥खेटवचनसुनिवोल्योएव॥इसोदेवदेवनिसिरदेव॥साचबचनभाष्योतेंए
म॥ताकोउत्तरदीजेकेम॥२८॥फिरविद्याधरवोल्योएव॥विनतीएकसुनोहोदेव॥तीन
लोकतापायनपरै॥त्रैसोकरमनीचक्रोंकरै॥२९॥देवअन्याईकरैअधीर॥शिष्यनिकों
कोवरजैवीर॥नृपतिहोइकरिपरधनहरै॥चोरनिवारणकहिकोकरै॥३०॥सोरठवा
नसुनोइकलोइ॥सासूहोइविभचारिणी॥मनमेदेष्योजोइ॥सुनषानेवरैजेकवन॥३१॥
चौपई॥जेराजीपरमेश्वरहोइ॥निरराजकहिकहीइकोइ॥पृथ्वीसकलउदरमेधरी॥क्यौ
रावनमसीताहरी॥३२॥जोव्यापकसवहीमैहोइ॥ताकोविरहनव्यापैलोइ॥जोकोईवस्तुस

श्वतीजोई॥ताकोंपीडाकरैनकोइ।३३।जिकोपरायोकामकरा३।सोत्रिभुवनपतिकैसे
थाय॥सर्वगहोइक्योंपूछै वीर॥ईश्वरहोइक्योंजाचै धीर।३४।प्रबुद्धननींदकरैअभिराम।
द्वैविरागनविसेवैकाम॥मछकछसूकरकेसरी॥वावनत्रिधारामभुवपरी।३५।एअव
तारकहोक्योधरै॥भूपरिओगुणतासोंभरै॥नमठौडठोइक्योंराम॥नीचठौरआएकि
हिकाम।३६॥दोहा॥अस्तपीवमंजारुधिर॥नषामासअरुचाम॥इसीकायक्योकरि
धरै॥जेहपूरणराम।३७॥यहशरीरविष्टासदन॥मनवचजानोत्योइ॥सरवगहोइसो
क्योरहै॥मनमेदषोजोइ।३८।सोरठा॥जहादुर्गधकीठौर॥हीनपुरुषभीनारहै॥जोसर
वज्ञसिरमौर॥इसीठौरक्योंकरिरहै ३९।चौपई॥पहिलेतोतिनदानोकरै॥प्रभूहोइफु

नका हेकों हरै॥ ऐसो को नजीय संसार॥ पुत्रनु पाय भीडारै मारि। ४०। अमरि हो इसो क्यों करि मरै। त्रिपति हो इक्यो भोजन करै॥ मैं क्रोध नजीय जिहि रंज॥ शस्त्रसमूह गहै किहु काज। ४१। सोरठा॥ पूरव अपर विचार। सो दुजनु मजानो नही॥ झूठो ठग अहंकार। को लोनिवहै जगतमै। ४२। दोहा॥ पषपात कों दूरिकरि॥ करो सोच मन मांझ॥ ऐसी विप्रन बूझिये॥ मेरी मां अरु बांझ॥ ४३। सोरठा॥ निजविचार विनज्ञान॥ क्यों जीतें परमेश्वरी॥ विद्या रतन महानि॥ तुल्य षो यो भट नर। ४४॥ दोहा॥ इसप्रकार दृष्टंत बहु॥ दीये षेचरण इ॥ को इनउत्तर देशकै॥ सब बुद्धि गई विलाय। ४५॥ चौपई॥ उठो षगति निमुख देषेह। जय विटताकरि भूषित देह॥ मित्रसनो अवदेव विचार। ताको कहूं सकल व्योहार। ४६। जनम

जरामृतरोगकलेस॥ क्रोधलोभनाहीलवलेस॥पूरवअपरविरोधनकोइ॥सोइदेव
जिआपैहोइ॥४७॥फुनिसुनिवातकहूखगपती॥मेदहतिमरभेदनदिनपती॥सोपै
सुनोकहूसवतोहि॥ससोहरणीकाजअवमोह॥४८॥दोहा॥ नरथचेत्रमेकात्रवह
सदापूर्वत्तवीर॥निजसुभावत्रियरहै॥मनवचजानोधीर॥४९॥चौपईचौथेसमैए॥
पुरुषप्रधान॥सातितीनअधिकपरिमाण॥द्वादशचक्रवर्तिचौवीस॥तीर्थंकरभु
मगुणहगरीस॥५०॥दोहा॥ नवकेसोवलिभद्रनव॥नवप्रतिकेशवजानि॥सोसर्ववि
तकर्मभए॥महाशीलगुणषान॥५१॥सोरठा॥ कहैमनोहरदास॥सोसवषाएकात्रनै
मतिकोकरैविसास॥इसोदुष्टकिरतांतिको॥५२॥दोहा॥ नारायणमैअंतिको॥नार

यणवसुदेव॥ सुतसुभ है जगमैप्रगट॥ मनवचजानोएव। ५३। परमेश्वरजिश्कोंकहै
॥एवा मणसुनिरंजि। रंणपोस्यात्तकरिथापियो॥ स्तोकभजनकेकाज। ५४। चौपई॥ व्या
पकनिष्कलंकनिरवाध॥ जरामरणासुखशुभसाध॥ अछेदअभेदनिरंजनदेव॥ नि
रकोरनिरामयएव। ५५। जिहमोहैएतागुणहोय॥ दशअवतारधरैक्योंसोइ॥ एसवा
तैझूठीकही॥ पूरवअपरविचारैनही॥ ५६। वारंवारमित्रसमुझाई॥ मित्रस्वरूपधरियो
खगराइ॥ चक्रकेशकजत्तदुतिदेह॥ दलिदपिंडरचियोमनुवेह। ५७॥ पवनवेगकीनोमें
जार॥ कपिलनेत्रकजत्तठविसार॥ विद्यावेषवनायोताहि। मूरखवेसवजानैनाहि। ५८
दोहु॥ श्रवणकाटिघटिमहिधरी॥ पतनकरिप्रवेश। दूजीवृत्तजात्यागयो। ताउनूर्यअशे

रा॥पर्ण॥ चौपई॥ कनकसिंघासनबैठोजाय॥ सुनिभेरीदुज आएधाइ॥ करिमछरबोलेदु
जराइ॥ क्योंसिंहासनबैठे आइ॥६०॥ वादकरणकीइछा होइ॥ सोतुमहमसेंकहियोखोइ
सुणिरभीलबोल्योदुजराज॥ वादनामसैसुणियोआज॥६१॥ पभूरूपहूंवनचरतात॥ तुम
पंडितसबजानोबात॥ जोनंथोवनचरकोराइ॥ क्योंसिंहासनबैठोआइ॥६२॥ क्योंनि
सानवजाएवीर॥ वादशास्त्रमेंधरियोधीर॥ कैहमसोतुमवादकरेहु॥ कैसिंहासनतरप
गदेहु॥६३॥ दोहा॥ कनकसिंहासनबैठियो॥ देषिअपूरवथान॥ वादअर्थनहिमाहना॥ को
पनकरहुसुजान॥६४॥ जेनंवनचरसुपहे॥ नतरवेगिगवंर॥ इतनीसुनिकरिऊतस्यो॥ वि
द्याधरगुणसार॥६५॥ चौपई॥ तौवनचरिभीतनिकोएव॥ कोएकाजआयोधरिभाव॥भी

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

स्वरूप वो त्यो गुणसार ॥ हुआयो वेचन मझार ॥५५॥ कहा मोख गुण हम सेक हो ॥ हमरे मनको संसै दहो ॥ विप्र वचन सुनि वो त्रियो ॥ जिनवाणी फुनि उच्चरियो ॥५७॥ गुण इस गंध द्वादश योजना ॥ रहै नहीं गुण पति वाहना ॥ याको मोख पचासदीनार ॥ जो दे सो त्रै फेर न सार ॥५८॥ मीख वचन सुनि कै शुभसार ॥ परस परस सबकरहि विचार ॥ वित सार क्या कैं वित देहु टीख न करहु मेजार हख्वेहु ॥५९॥ दोहा ॥ एक दिन एक उंदरी ॥ करै नजार गंभीर ॥ तिहि को वाट सहश्रवो ॥ मांग्यो छै नहि वीर ॥७०॥ वेगि लेहु इनसताकही देखो याको शीख ॥ वस्तु अपूर्व पंडित जन ॥ लेता करै न ढीख ॥७१॥ चौपई ॥ जवदुज जिनि करिदीएदाम ॥ विद्याधरवो त्यो अभिराम ॥ परषि देषि करि लेहु मंजार ॥ पाछे झगडो नहीं खगार ॥७२॥ हूं

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain
Oriental Research Institute

एकाकी तुमवहुआथि॥ दूजोनाहीनमेरेसाथ॥ चहुंदिशिफिरिदेवेमूदेव॥ कटेश्रवणतु
षिवोत्येएव॥१३॥ कटेकरणक्योंयाकेवीर॥ नउतरदीजैसाहसधीर॥ सुनिवचवोल्योख।
गपतिवात्त॥ जिनपदसेवकदीनदयात्त॥१४॥ दोहा॥ वीसकोसकोचालियो। इहांन
पहुंच्याआइ॥ कोशच्यारिपरदेवघरा॥ तामेंउतरेजाइ॥१५॥ हारेहमवहुस्वेगए।
सातप्राणतवनाश॥ थाकेमेसुधिनारहे॥ कहेमनोहरदास॥१६॥ चौपई॥ उसथानक
थेमूसावहु॥ कतरेश्रवणतुमजाणेसहु॥ इसावचनसुणियाहिजजेम॥ षत्तषत्ता
ईवोल्योहसिएम॥१७॥ औरझूठिझूठनिसिरमोर॥ झूठकहणकीथोडीठौर॥ तैहम
सोंक्योवोल्योझूठ॥ तोसमश्रवरणदेष्योदूठ॥१८॥ दोहा॥ उंदरद्वादशयोजना॥ या

कीगधिनेजाय॥ पहिलीतेतौयोंकही॥ श्रवकहात्रगीवाय॥७९॥ चौपई॥ सुनिवोत्यो
खगवचनश्रभंग॥ जिनपदपंकजसेवनत्रंग॥ एकैश्रवगुणगुणागणवीर॥ कोंं
करिनासैगुणगंभीर॥८०॥ दोहा॥ दुजवोत्याश्रीगुणथकी॥ नासैगुणजुश्रनेक॥ कांजी
केरीवूदतैं॥ फाटैदधमणएक॥८१॥ सूरजकेक्योंगुणगये॥ मूढीकोंश्रधियार॥ जाइकही
खगपतिकहै॥ ताकोकहोविचार॥८२॥ श्रैसेगुणश्रीगुणवरू॥ पुरणविवेजो होहि॥ तो
तुमनोमाहना॥ सत्यकहतहोतोहि॥८३॥ चौपई॥ इस्योझूठपुरणमैभ्रात॥ तोस
वनेरीसांचीवात॥ सुनिखगउत्तरदीयोताहि॥ वातकहतहोंडरयोंश्राहि॥८४॥ दोहा॥ मी
ठकूपसमाननर॥ कैकोजुसतिहिन॥ तिहस्योंवातविवेककी॥ कहेनपुरुषप्रवीण॥

८५। सोरठा॥ समवेरवगपतिभ्रात॥ कूवाकूपरिआइयो॥ मीडकपूछेवात॥ कहांरहोक्यों आईयो। ८६। रहूमानसरमांहि॥ हंसनामजगमेप्रगट॥ यामैमिथ्यानांहि॥ करमनदेइहाआईया॥ ८७। चौपई॥ भणैभेकफिरिमछरीवांणि॥ मानसरोवरकहिनमानि॥ हमसोकहोवातनुमएहु॥ तोमनकोमाजैसंदेहु। ८८। दोहा॥ भेषवचनसुनिरवगपती उत्तरदीयोताहि॥ मानसरोवरसारिखो॥ मानसरोवरआहि। ८९। चौपई॥ वोहपक्षा। रिसुवोत्योएव॥ नुमसायरइतनोहैदेव॥ कैअधिकोयाकूपसमान॥ कैयातैअधि। कोपरवांन॥ ९०॥ नवपंषीपतिवोत्योएम॥ तासप्रमाणकहूंहूंकेम॥ कैजाणैआगमको जाण॥ कैदेष्योसोकरैप्रमाण। ९१ वोत्योभेकवचनतिसषंड॥ यातैवडोनकोब्रह्मांड॥ स

All Rights Reserved - Shri J.K. Jain
Oriental Library, Arra

वतेवडोरूपमोहिताही॥ यासमदूजोऔरनआहि॥९१

चाष्योनालियर॥तिसकचरणममिह्व॥९२॥सोरठा॥ईछेसे
तीकाज॥गुरुकहैजोआपणे॥गईजुतिहकीलाज॥कहैमनोहरजोरिकरि॥९३॥दो
हा॥याणीअनजुदेवटम एकैनदरसमाहि॥दृष्टपेटदमरीभरी॥वातसमावैनाहि
॥९४॥मीडकसमनेहमकहै॥कहागईमतिवीर॥हमपंडितपंडितितिलक॥गुणकरि
गहरगंभीर॥९५॥चौपई॥फिरिकरिखगपतिवोल्योएव॥जोतूवपंडितहौभुवदेव॥तु
मसोंकहोज्ञानकीवात॥धरिकरिश्रवणसुनोहोभ्रात॥९६॥मंडपकौशिकतपसीधी
र॥ताकीमहिमाअदभुतवीर॥तपसीमांहैसोमितइसो॥ग्रहगणमांहैनिशपतितिसो॥

९७। एकै दिवस करमकै नाइ॥ तपसी बहुत मिल्यै तहां आय॥ सबै बैठे जीमण कों जाय॥
ताहि देखि उठिया महराय॥९८॥ मंडप कौ ऋषि कवोल्यो एव॥ मोहि देखि क्यों न उठे देव सा
रमेय सम हम कों ऋषि णयों॥ मंडप कौ ऋषि कतिन प्रति मणयो॥९९॥ ता कों उत्तर दीजै मोही
। पाइत्रा ऋषि करि पूछो तोहि॥ तपसवोल्यो करि मन कोरु॥ नं तपसी तै न्यारा होहि॥१००॥
तेजु कुवारै तपस्या लई॥ पाप वेलि तै अद्भुत वई॥ अवहम तै तू न्यारो होहि॥ नातर मार
पडै जीतो हि॥१॥ दोहा॥ अपुत्री कों गति नही॥ स्वर्ग न ही ति सवीर॥ प्रथम पुत्र मुख दे
खी कै॥ फिर तप त्यागै धीर॥२॥ जो रै तपसी सज्जन जन॥ जा चै बहु त प्रकार॥ वयो ती तै
देन ही॥ कीजै कौन विचार॥३॥ फिरि करि तपसी बूझिया॥ दूपूछत हू तोहि॥ वयातीत॥

कोंदेनही॥ उत्तरदीजैमोहि।४। चौपई॥ तपसीवोल्याकरिकैमोहि। विधवाग्रहकैग्रा
हीतूहोहि॥यामैदूषणनाहीकोइ॥तपस्याआगमकरियोत्योइ।५। दोहा॥ जिहकोपति
तपसीभयो॥औरनपुंसकहोइ॥पतितभूवोनीकलिगयो॥एत्रियपाचोजोइ।६। एजो
अन्यपुरुषकरै॥दत्तपुरुषकीआन॥इनकोदूषणकोनही। मनवचजानसुजान
७। इनकीआज्ञामानिकै आणिदईघरमांहि॥सज्जननत्योगुरुवचन॥यामैमिथ्या
नांहि॥८। चौपई तिहस्यो नवनवकरताभोग। पुत्रीभईकरमसंजोग। तासमकोनुनपूजै
नारि॥तीनलोककीमोहनिहारि। स्तनशोभाचामीकरहस्यो॥छायानामतासतैंधस्यो
॥कलासकलगुणगणकीषानि॥दूजीकामभेदनीजानि।९। क्रमक्रमअष्टवरषकीभई।

मातपिताकेचिंतामई॥तातेसोचकरैमनमांहि॥यहकादुकुंसोपैताहि॥११॥दोहा॥यती
दुखतछांहडी॥कीडीकनसुनलोइ॥पुत्रीपोषेपितानिज॥परकारणकोहोइ॥१२॥पुत्री
कौंकहीसोपिकै॥तीरथकीजैनारि॥पापनपायोहैवहुत॥मनमेदेषिविचार॥१३॥सो
ठा॥स्वामीइससंसार॥साध्धरमीकोकुनही॥सोपैकरिमनुहार॥सोईपापीत्रैरहै॥१४
॥दोहा॥स्वामीइससंसारमे॥इसोनकोसमरथ॥एककनकअरुकुचनको॥कोनपसारै
हथ॥१५॥चौपई॥महादेवकोसोपैजाइ॥वहकामीकामीसिरराइ॥अरधसरीरीनमयार
है॥वाकेमनकीकोनविलहै॥१६॥पारवतीतजिमिथ्यानांहि॥गंगातिणराषीजटमांही
सोतोकामीअधिकाजानि॥ताहिनसोपैठाकुरआनि॥१७॥दोहा॥तिहिसेईतिरजंचि

नीरूपमिरगकोंधारि ॥ सोकोंछोडैरूपनिधि मनमैदेषिविचार ।१८। जारजुवारीज॰
गतिजम। जोगीजंगमजोइ ॥ एतेहोइनआपणे ॥ त्याघकरैजोकोइ ।१९॥ चौपई। वन॰
मेंशिवरीरूपनिहालि ॥ गुदाहाथदेनाच्योनालि ॥ अैसोशिवनहोइआपणा। कोविस्वा
वदेयैराघणा ।२०। यामैभीकछूवरकतनही ॥ साचीबातनारिमैकही ॥ जोनारायणसो॰
पैयाहि ॥ सोवैसहसकामिनीताहि ।२१। जिनकोसेवतिरपतिनही ॥ बैकामंधकाम
मयसही ॥ निजकामनिकोछाडिअधीर ॥ परकामिनिसेवैवरवीर ।२२। पदमाताकैहि
रदैरहै ॥ कामवहावैत्योंहीवहै ॥ अैसोमुरखकलमैहोइ ॥ चोररतनराघणदेसोइ ।२३। य
हतोकामीअद्भुतजाणा ॥ जैसैग्रीषममैद्वभाणा ॥ कामीत्याघचाहिजैजहां ॥ एकहिकामसरै

॥ऋद्धि॥ होतहां।२४।दोहा॥ नारायण भीमा हरै॥ आयो नाही दाइ॥ कोई निरदूषण नही॥ कीजै॥
कौनउपाय।२५।चौपई॥ ब्रह्मासोंपलिकरहुविचार॥ वैनतितपविनजियोतपसार॥
सोसुंदरिकामिनीकोपाइ॥ ताकोमनक्योंकरिठहराइ॥२६॥ब्रह्माकरैतपस्यातिहां॥ सु
रपतिआसनकंप्योइहां॥ सुरगुरुकोपूछैदेदान॥ आसनकंप्योकहोवषान।३७।सुरगु
रुभलोत्रगनइहांमित्या॥ ब्रह्मातपवलिआसनदुत्या॥ तपकरियाजैविद्यासार॥तपक
रियाजैज्ञानअपार॥२८॥तपकरियाजैदेवविमान॥तपकरियाजैउत्तमथान॥तपकरि
अष्टसिद्धिनवनिधि॥तपकरियाईजैवहुरिद्ध॥२९॥तपकरियाजैकेवलज्ञान॥तपकरि
याजैशिवपुरथान॥कहैमनोहमनवचस्तोइ॥तपविनकरमनपरत्रैहोई।३०।तातैसक।

त्रकाज को छारि॥ तप जिनकथित परमजर धारि॥ तातैवैतपस्या बहुकरि॥ आसनदुलि
योतातैंहरी॥३२॥दोहा॥ तातैमरयोकह्यो करि। कामिनिएकपठाई। कामणि विनतपनाट
लै। जानोमनवचकाय॥३३॥चौपई॥ तिलतिलत्रैसुरकामिनिरूप॥ रचीकामिनि अधिक
अनूप॥ ताकोरूपसुनहुसिंगार॥ कविजनकहैवहोविसतार॥३४॥सवईइकतीसात्रीत्रा॥
गतिसिंधरमधुरवैनकोकिलाकेरभावपरीतजंघकटिमृगराजकी॥ आननअमत्यसो
ममानोघरिआनंदकोनाससुकलोचनषंजनसवकाजकी॥ मीनपीनपयोधरजुगविंबा
धरदशनकुंदेकेगुलऊपटनिवाजकी॥ ऐसीतरुणीसंवारिवृस्नातपटालवेकोकविछ
विकहांलोवषानैसवसाजकी॥३५॥चौपई॥ ताकीउपमादीजैकाहि॥ कामदेवनीदूजी

॥ एम्॥ आहि॥ ऐसि कहि हरिषठई नारि॥ तपवृत्ला को जाइ रटालि॥३६॥ गई काम की पासी जि॥
सी॥ मानो मदिरा जीरण तिसी॥ वृत्लासन मुख करि मनुहार॥ राग रंग करि नृत तिनारि॥
॥३७॥ हाव भाव करि करि वहु भाई॥ अंग जु पांग दिषावे काइ॥ श्रवणासुनत नाटक झंकार॥
कुसुमायुध वर ध्योति हिवार॥३८॥ वृत्लामनमे धरै विचार॥ देषोंचरत कहा है सार॥ त्यो
च नदेषैं तपनहि जाइ॥ जे मनमुद्धि होइ कविराइ॥३९॥ देषे वृत्ला दृष्टि निहारि॥ मानो काम
निसुखदातार॥ कामवान वेधियो सरीर॥ एक पलक चितर हैन धीर॥४०॥ तियजान्यो
वृत्लामनभूत्ल॥ इसपापी षोयो तपमूत्ल॥ तिहिस्वोंपाजै षटषंडराज॥ तिहिसोपाजैस
मकितसाज॥४१॥ तिहिसोपाजै देवविमान॥ तिहिसोंपाजै शिवसुखथान॥ सोतपपावन

बोयो आज॥ रतनगवायोकोडीकाज। ४२। फिरिबावैमुनिनाचैनारि। वृत्तामनदेषैअ
वधार। मनअैसोवृत्ताचितयो। तपप्रशादमुखदूजोभयो। ४३॥दोहा॥ क्रमि क्रमित्रिय
तैनाचता। हूवाबदनतसच्यारि॥ दषैवृत्तारामयत॥ शिरपरिनाचैनारि। ४४। षरआनन
ऊपरिभयो। ज्यानैसवत्रियलोइ॥ सुरपतिषैत्रियज्याइकै॥ वातकहतसवद्योक। ४५। स्वामी।
वातपदूरिकरि॥कीयोवारहवाट॥जैसैटोयतवणिक॥ छोड्योडोलैहाट। ४६॥सोरठा
वृत्तामूरिषकौंन॥मैतीनोंजगवसिकरै। एकैसाधविहौन॥जिनसाहिवमास्योमदन। ४७
जहाहमारोराजा॥नहांदुहाइमदनकी॥ गिनैनकाजअकाज। करणमतैसोईकरै। ४८॥
चौपई॥ स्यावासिस्यावासिसुरपतिकरै। वहुतभांतिकरिआदरधरै॥अववृत्ताकोसुनो

विचार॥ कस्यो मुगधमन अतिअहंकार॥ ४७॥ देषै देवत मासो आइ॥ तिण कोंषाणत्यागयो
धाइ॥ चष्यो आदमी छोडै त्याज॥ चष्यो पर हरै आतमकाज॥ ४९॥ चष्यो आदमी छोडै गेह
॥ चष्यो परिहरै जत्ति नेह॥ चष्यो आदमी मूवै परै॥ चष्यो पुरुष विषषाई मरै॥ ५१॥ चष्यो त्र
ाईव हु विधि करै॥ चष्यो पुरुष मद्ले नीसरै॥ चष्यो पुरुष मे ङ्क सिर छारि॥ चष्यो पुरुष मे
टै कुल कार॥ ५२॥ सोरठा॥ कहै मनोहरदास॥ चष्या पुरुष सो बोलसी॥ हो सीता पर हास॥ यामै
मिथ्या है नही॥ ५३॥ हर पद मस्तक धार॥ देवस कल विनती करै॥ स्वामी ह मे न वारि नात॥
रिबुला षात है॥ ५४॥ दोहा॥ महादेव मनि रोस करि॥ हिर देष्यो विचारी॥ धर मस्तक तिण
छेदियो॥ या मै फेर न सार॥ ५५॥ सोरठा॥ मन मै जानो धीर॥ जै दुख देसी खल्ल क मे॥ बुला वा॥

स्त्रीवीर॥तिहुपापीमैहोइसी॥५६॥चौपई॥कांजनसरियोतपटात्रियो॥स्वानमष्योपनहीं
मारियो॥मत्राविधाताकरनकस्या॥शिरमूंडाअरुर्जत्यापस्या॥५७॥ब्रह्माभीशिवदि
योसराप॥तैपापीवहुकियोसंताप॥मेरेतपकोयहफलकहो॥सिरहमारोतेरेकरिरहो
५८॥दोहा॥गदहासिरनुवहाथसों॥त्रग्पोरहोनितवीर॥ब्रह्मादियोसरापवहु॥मन
वचजानोंधीर॥५९॥चौपई॥यहसुनिशिवब्रह्मापगिपरे॥वारंवारविनतीवहुकरै॥हम॥ वार
स्वामीकीनोंअपराध॥क्षिमाकरोमोहिंजपरिसाध॥६०॥दोहा॥ब्रह्मामनमेंदयाकरि
वहुविधिदईअसीस॥पुरुषोत्तमनैछीवता॥करस्योंपडसीसीस॥६१॥सोरठा॥तवतेंमि
त्रमुनान॥कापालीव्रतआरस्यो॥अरिहंतजीकीआणि॥जगतमस्योपरपंचस्यो॥६२॥

दोहा॥ महादेव गयो विस्मये॥ सवदेव निसिरदेव॥ छीवत सिर करते गिरयो॥ मनवच।
जाणीए व॥५३॥ चौपई॥ मिरग मिरगिनी वृत्ता पेषि॥ कामझपनो ति हि विधि देषि॥ कामी
जनको परियो मरी॥ गदही नी त्यागै अपछरी॥५४॥ वृत्ता भोग करे वहु भाइ॥ गरभरह्यो
ता मनवचकाय॥ पुत्र जन्यो सम एगुण निधि॥ जंबव नाम भुवन परसिद्ध॥५५॥ वृत्ता सेवे
तिर्यंच नी॥ सो क्यों छोडै भु मनुष्य नी॥ तिस पुराण मति अंसी सूत॥ तिरयंच नी क्यों ज
नि ये पूत॥५६॥ सोरठा॥ वृत्ता इसो अधीर॥ ता कों सो ये नावने॥ को कू ता को षीर॥ राषण
नै देव चुर नर॥५७॥ देषि अहिल्या रूप॥ इंद्र विडंव्यो वापडो॥ कन्या देषि सरूप॥ अनुभुग
ती सो कोर है॥५८॥ देषि कामिनी जार॥ गोतम दियो सराप वहू॥ भगहो इयो हजार॥ रेषा पी

इसपापतैं॥ जिहकेइकमगहोइ॥ सोषोयोसवजगतमे॥ मगहजारतिसुखोइ॥ ताको
सर्वसहीगयो॥७०॥ गौतमपाइदेवसवपरै॥ दीनवचनवहुविनती करै॥ तुमहमपरहो
इदीनदयाल॥ यहमरापजतरैयहकाल॥७१॥दोहा॥ इहअपनोकीयोचहो॥ षिमाकरो
हमलोइ॥ कदैनकोपैप्रभुममती॥ त्रासकरैजोकोई॥७२॥ नारायणइसभाषियो॥ वहुवि॥
धिविनोकरेह॥ सहस्रनेत्रप्रभुकीजिए॥ याकोदसणएह॥७३॥ नारायणको कहोसु॥
नि॥ मनमेंदयाकराइ॥ सहश्रनेत्रसुरपतिकह्यो॥ जानोंमनवचकाय॥७४॥ यहवातपरि
सिद्धहै॥ मनमेदषो जोइ॥ सहश्रनेत्रसुरपतिभयो॥ तवतैमनवचलोइ॥७५॥ सुरपति॥
कोयहपुत्रिका॥ दीयेवनेमीनाहि॥ रिषीकामिनीछोडीनही॥ सोक्यों छाडैयाहि॥७६॥ मैदे॥

All Rights Reserved © Shri P. K. Jain
Oriental Library, Ara

॥ ९८ ॥ ष्यातीनो भवन ॥ मनवचजानहुनारि ॥ निरदूषणकोईदेवभुभ ॥ त्रष्योनलोकमं ।
जारि ।७७। सत्यसौचयतत्रारिदत्तन ॥ समदिष्टीगुणधार ॥ दोषरहितजिनदेवहै ॥
यामेकरनसार ।७८। सोरठा ॥ मनमैकरिनुविचारि ॥ समवरतीयेन्नायकरि ॥ कंन्यासों
पीसार ॥ तीरथकोउद्यमकस्यो ।७९। दोहा ॥ आकुलतामनकीगई ॥ भएसचेकरिही
न ॥ तीरथभ्रमकरतेफिरे ॥ दंपतिमहाप्रवीन ।८०॥ चौपई ॥ काममहीयमदेषिन्न
पार ॥ कामवाणत्यागैतिहिवार ॥ तिहसोभोगकरैजडमती ॥ जोविधीकरियात्रीहुती
८१ ॥ इरिथौनीपरिमनहिविचार ॥ त्रेकरिराषीउदरमंझार ॥ करिकैभोगकरैउरमां
हि ॥ मतिकोउऔरत्रेजोहि ॥८२॥ सोरठा ॥ कामीजनजोकाहूसो होइधीनैनही ॥ नि

जसमदेषैलोई। तातैडरतोहीरहै। ८३। त्रेषणिपोथीजोइ॥परकरगईनवाहुडै॥फिरै
करमवसिसोइ॥घसीफसीफुनिदत्तमती। ८४। चौपई॥इकदिनवोल्योपवनकुमार
क्षगनिदेवसुनिमोवचसार॥सवदेवनिमैमनवचधीर॥समवरतीसुखतिष्टवीर। ८
५। सोरठा॥तिहमैसुगणअनेक॥सुरतियजीतीरूपकरि॥तिहित्रियपाइएक॥रति
इमृतकीवाहिनी। ८६॥चौपई॥भोगकरतसोत्रिपतैनाहि॥मगनरहैसुखसागर
माहि॥अगणिनएसुनिपवनकुमार॥वहत्रियहमहिमिलावोसार॥ ८७। अगनिदेव
केवचनसुनेइ॥पवनदेवतिसनत्तरदेइ॥भोगकरैरागषैनरमाहि॥पवनभणैकछुमिथ्या
नाहि। ८८। जरसतीइकजामनिकरि॥त्रिपकरैछैगंगमझारि॥आषिमूंदिकरियालीत्वे

॥ ए ए ॥ इ ॥ जल अंजुल सम कुल कुदेइ । दए जो तो सो कुछ न घट महो इ ॥ यह वेला मित्र नेकी सो इ ॥ मै
तो बात कही हे सांच ॥ तुम अपणे मन देष हु जाच ॥ ए० । दो हा ॥ इसे वचन सुणि यौ नके ॥
बो ल्यो अगनि कुमार ॥ त्रिय त्याज आका शतें ॥ या को को न वि चार ॥ ए१ ॥ एका की जोवन ।
न वल रूप नि धि मुख रूप अपार ॥ करै ता हि वसि जा ननर ॥ या मे फेर न सार ॥ ए२ ॥ चौ पई काम
वाण वेधि यो सरीर ॥ एक पल क चित धरै न धीर ॥ मोह न रूप अगनि नि रधार ॥
आ यो तट सुर सरी वि चारी ॥ अह पुछ न्न हो इ बैठो जि हां ॥ यम रा जा फुनि आयो ति हां ॥
काढी नु दर मांहि थी नारि ॥ आय णे पैठो गंग मझारि । ए३ । देषि कामिनी अगनि कुमार ॥
वि हवल भइ न रूणि ति हिवार ॥ घणी बात को करै पसार ॥ ति हसे ती की नो वि चार ॥ ए४ ॥

कहै नारि करि कै विचार॥ जाहिर जाहिर अवइहां सोयार॥ मेरो रमन कालु को वास
सब त्रिलोक है ताको गास॥९५॥ तो समीप मो देखि भरतार॥ भछन करत न ही त्यागै वार॥ यह मत वा तन नाहि कछु कूर॥ जार पुरुष त्रिभ कै न भूर॥९६॥ बार बार आलिंगन
देइ॥ दीनव चन वहु विनय करेइ॥ नई प्रीति दुठ छोडै कोइ॥ तिहि समपापी अवरन
कोइ॥९७॥ सोरठा॥ तुम समीप जो प्राण॥ तिक सम मेरे कामिनी॥ सुरपति केरी आन॥ तो
कृपा वू पर मयद॥९८॥ दोहा॥ जो घालो तो गो रवा॥ शास्त्रन घाल्यो घाउ॥ चंदन वडो
विध्वंस तां॥ जो सिर गयो तो जाउ॥२००॥ सोरठा॥ तुम समीप्य मरण॥ मारे तो वर सुंद
रि॥ तुव वियोग सहिका जा॥ करै टुक दोइ मदन भट॥१॥ दोहा॥ ने प्रीति न छाडिये। जैदु

छहसैअनंत॥ घसौजिकेघसिजाहुनै॥ मिश्रीषानहिदंत।२॥ चौपई। नारिअगिनिके
वचनविचारि॥ अगनिउदरमेराष्योनारि॥ यहअचिरजदेष्योमनमांहि॥ अैसोका
मसुण्योकविनांहि॥३। सोरठा॥ प्रीतमसुनहुविचार॥ पंडितमीजानैनही॥ कामिनि।
चरितअपार॥ कहैमनोहरवालिया॥ ४॥ मैठढीसवठौर॥ सुरपुरनरपुरनागपुर॥ त्रि
यसमकोउनऔर॥ कपटषानिदेषेनही॥ ५॥ सीषसुनोयहमूल॥ घणीघणीअव।
कोकहै॥ जिसकैहिरदैधूलि॥ जोत्रियजानैआपनी॥ ६॥ चौपई। अगनिविनातिहुंलोक
मेंजारि॥ षलमलाटपंडियोसंसार॥ कारजरलोअगनिविनसवै॥ लडकेवास्तेरोवैत।
वैं७। जज्ञकरमकाहेसोकरै॥ अगनिहोत्रिसिरकूटतफिरै॥ सकलदेवसुरपतिपहि।

आइ॥ विनो भगति करि त्यागे पाइ॥८॥ कहं नदीसै अगनकुमार॥ ताको कीजै कौनविचा
र॥ तुम हमरै होउ तिमधनी॥ हम कुं आय आपदा वनी॥९॥ अगिनि विना भूष्यो सबको
ग॥ वन्यो आइ करि करम संयोग॥ देववचन सुणि मनवचकाय॥ त्रियो पवन सुरपति
वुलाय॥१०॥ अगिनि देव कहिपाजै नही॥ तिहको हम सोव्यो रे कही॥ पवन वेग वोल्यो
तिहि भाइ॥ हम जानत नहि सुरपति राइ॥११॥ दोहा॥ वोल्यो सुरपति रोसकरि॥ सुणिरे मु
रख लोइ॥ वेतो जिय राए कहै॥ देघण को हम दोइ॥१२॥ ऐसी ठाहर कौनही॥ जहां न तोप
रवेश॥ तीन लोक की वस्तु तूं॥ जानेपवन अशेश॥१३॥ चौपई॥ पवन भणे देमस्तक हाथ
॥ सवठौ हरमैं देखी नाथ॥ थान एक मैं देख्यो नही॥ सो नीथान कदेख्यो सही॥१४॥ ऐसिक

हिकै पवनकुमार॥ पुनि मनमाहै कस्यो विचार। करि आलोचन वारंवार॥ सकल देवन्यों तेतिहि ठार।१५॥ सोरठा॥ यम आगै त्रय पीठ॥ इक इक पीठ सवनैं दई॥ वडो तमासो दीठ॥ सवदेवनि अचिरज भयो॥१६॥ दोहा॥ तीनपीठ निज देखिकै॥ वोल्यो श्रीयमराज॥ मोहि दए तैं पीठ त्रय॥ कहि प्रीतम किहि काज।१७॥ चौपई॥ तीनपीठ मैदीनी सही॥ हं देवनि तैं त्रिधि को नही॥ यम फिरि वोल्यो पवनकुमार॥ कारण मोहि वताव गवांर॥१८॥ अडिल्ल छंद॥ सुनि कै यम के वचन पवन यम स्यों कहे॥ वनिता वेगि नि कामि कहा प्रीति दहे॥ इतनी सुणि यमराज तरणि तिणि जुग ली॥ पुनि हं दारी भरडो साथ मली जोडी मिली॥१९॥ पुनि तिहि पवनकुमारि नारि सेती कहे॥ अगनि हु वेग नि कास कछू हठ मति गहे॥ पवन व

चनसुणि नारि अगनि तहां जु गत्यो॥ पर हां कहै मनोहरदास जु ठग नैठग मित्यो॥२०॥
देषि तमासो देव सकल अचिरज मयो॥ रहे परसपर चाहि कहा याको भयो॥ समदरसी
यहदेव कहै याकों हरी॥ देषो या की बात कहो मूरष करी॥२१॥ सोरठा॥ कामी जन कों दूरि
॥ कोजु नाही कामीनी॥ जिहि के मस्तक धूरि॥ जो या बात न मानही॥२२॥ चौपई॥ देषि
अगनि को पैय मदेव॥ इंद पाणि ले भायो एव॥ देषि नयन तरणि को जार॥ षिमा क
रैसो मूढ गवांर॥२३॥ आगे पावक भाज्यो जाइ॥ जार चोर कैसैंठ हराइ॥ जुसके मन महि
उपजी संक॥ जाइ छिप्यो तरु मांहि निसंक॥२४॥ दोहा॥ तरु पाषाण विषै अगनि॥ भाजि
रैठो सोइ॥ पर गट ठाहर नारहै जार चोर जो होइ॥२५॥ जिहि समया कों पाठियो॥ मानों

मोवचसार॥तरुपाषाणविषैअजूं॥निकसैअगनिकुमार॥२६॥तुमपुरणमैवातयह
हैकिनाहिंमूदेव॥तिहिकोउत्तरदीजिये॥मनमैतजिअहिमेव॥२७॥सोरठा॥बाभणवो
त्योलोइ॥तैसांचीवातैंकही॥अैसोमूरखकोइ॥सांचीकोऊठीकहै॥२८॥प्रीतमजगमैसा
र॥नाङ्कीसोनाङ्कीवसत॥मनमैदेषिविचारि॥यमसेतीछूनीनही॥२९॥यमकीउदर
मंझार॥दोइवस्तुबहुविधिरही॥जानीनहीगवांर॥कहाजानपरगुणगयो॥३०॥अै
सीअनरथवात॥ताकोंतुमसांचीकहो॥हमपंडितअवदात॥कहाऊठतुमस्योंकही॥
३१॥दोहा॥न्यावजुकीजैप्रीतमा॥पक्षपातनैछोडि॥मानुषभवतोहीसफल॥सत्तक
होकरजोडि॥३२॥सोरठा॥मूसैकतरैकान॥कहांभयोजोएकदिन॥मनवचजाणसुजा

ण॥गुण नही गयो विद्यावका।३३।दुर्जन अपनी वात॥झूठी नैसाची कहै॥परकी मन भ्रा
त॥सांचवात झूठी कहै।३४।कामी कामिनी क्रूर॥इनस्यों जो संगति करै॥एजगमें विष
मूर॥प्राणगवांवैपापिया॥मैजगदेष्योजाइ॥अपनी अपनी सबकहै॥अैसे मूरख लोइ
॥करै अंधेरी ससनिको।३५।कहि मूरखस्यों वात॥को नगवावै परमबुद्धि॥रामरामहम
भ्रात॥दयाभाव वहुरागष ज्यो॥३६॥चौपई॥पुनिविद्याधर बोल्यो एव॥विनती एक सुणहो
देव॥कहूदेवगुण मनवचनेम॥दुमसंसारदहपावकजेम।३८।चंद्रवदन चामीकर कां
ति॥जैसेकनकलतावहुभांति॥परकरमतिहकौलोकहुं॥सरणदाषिकरिमारेवहु।३९।
तिहिअैसीदुठछांडीनारी॥सोइदेवमोसिरधार॥सायरभीमरजादाटलै॥मेरुचलैतिहिचि

तनचल्ले॥४०॥ ऐसोदेवजिहाजसमान॥ आपतिरैअरुतारैआन॥ संकरशिवकारण
तजियोग॥ जमयासेतीकीनाभोग॥४१॥ सोलहसहसकामिनीछारि॥ नारायणासेईव्रज
नारि॥तिणमिवचारितछांडिअभाग॥ देषिनत्यकीनोंअनुराग॥४२॥देषिअहिल्यार
पअपार॥सुरपतिपणिवूठौतिहिवार॥देवनमेजमभीदषियो॥ गयामेजोघरिघरिकियो
॥४३॥अगनिदेवतुमसुनियोबीर॥भाजिगयोचितरलोनधीर॥ ऐसाकीकुणारषैआ
स॥इसादेवसंसारहिकास॥४४॥सोरठा॥ अपोसकैनरषि॥सोक्योराषैंवारको॥परमेसुर
कीसाषि॥एटवाठगहैसकल॥४५॥वरकतिनहीसुजाण॥नांवदेवपणिगुणनही॥सोय
हमयोकहान॥नांवकपूरीअवैविष॥४६॥मनमेकरोविचार॥देवासेवोपरषिकरि॥कहै

मनोहरदास॥वचनठांहि अहंकारको। ४७। जिवसेइ परदारा। कोपकस्योवहुतापसी॥
लिंगछेदितिहवारा॥पूजैलिंगतवसोंमुगध। ४८॥कुतादेषिसरूप॥दिनपतिभीविहु
लोभयो॥सोक्यांदेवअनूप॥कहोमानतजिमहल्ल। ४९। इनहिआदिवहुदेव॥निरद्
षणसुनियेनहीं॥मनवचजानोएव॥देवनुलारादेषिया। ५०। घरशिरछेदनवात॥क
हीजैनशास्त्रनविषे॥सोजगमेअवदात॥सोअवनुमसेतीकहूं। ५१। चौपई। सातिकरि
षिसुनज्येष्ठासात॥महादेवजगमेविष्यात॥तिहितपजैनकस्योवहुभाइ॥तपवलविद्या
सीधीआइ॥५२। वडीपांचसैविद्यासही॥लघुविद्याकोलेषोनही॥विद्यानिधिमनवच
क्रमभाए॥नदीथानज्योसागरजोन। ५३। वडीपांचसैविद्यासही। लघुविद्याकोलेषो

नही॥ विद्यानिधि मनवचक्रममाण॥ नदीथान ज्योंसागरजोन॥ ५३॥ विद्याविभौ देषिवहुभा
इ दशपूरवथैपडियोधाइ॥ यहैवातकछनाहिनसुनी॥ कामणिछाड्योगिरिसममुनी॥ ५४॥
कन्याऋषभेचरीवेष॥ छाड्योतपपावनतिनदेषि॥ तिनहीजनकपैजाचीजाय॥ तिनकु
निंदीनीमनवचकाय॥ ५५॥ तिनमैरतिसमरथगोरज्या॥ सवकामनिमेभुमनारज्या
ताकेमनमानीवहुभाइ॥ कामअगनिप्रजलीतिहिकाइ॥ ५६॥ दोहा॥ एकसमैएतासमौ
गोगकरतवहुभाइ॥ तिरभूलीविद्याभजी॥ जाणहुमनवचकाइ॥ ५७॥ नाहीदेषित्रिभू
लिका॥ यामेफेरनसार॥ विद्याभाजीब्राह्मणी॥ देषिइसाआचार॥ ५८॥ भाजीविद्याऔर
भी॥ तिनकीकौनकहाइ॥ कामीजननेप्रीतमा॥ वस्तुअपूरवजाय॥ ५९॥ प्रतिमायैसिव

जपकरै॥विद्यासिद्धिकेकाज॥विद्याआईमंत्रवसि॥गईविक्रियासाज॥६०॥चौपई॥नृत्यक
रैनानाविधिभाई॥हावभाववाजित्रवजाइ॥मोहनरूपदेषियेनारि॥देषीशिवरीझ्यापर
डारि॥६१॥सोरठा॥ऊंचीदृष्टिनिहारि॥महादेवदेषणलग्यो॥उत्तमवहुविधिनारि॥तिहस
मएदेषिघणी॥६२॥चौपई॥तिनकीदिष्टनसक्योनिहार॥प्रीतमसन्मुखदेषेद्वार॥च
तुराननदेष्योतिहिठौर॥पुरुषएकसिरपरिसिरमोर॥६३॥गदहासमअतिवृहतिजा
इ॥महादेवसिरकाट्योताहि॥कटिसिरतासहाथसोंलग्यो॥जिसोनाहीअसेहीपग्यो
६४॥सोरठा॥सुखसोभाकोनास॥करैपापलाग्योहुतो॥कहैमनोहरदास॥इसप्रकार
सिरकरलग्यो॥६५॥गईतासतपटारि॥विद्यानिजनिजथानसुभ॥तपटारनकेनारि क

रीविधातासोचकरि। ६६। चौपई। भिष्टहोइशिवजहांधेषऊौ॥ वर्द्धमानस्वामीदिठप।
ऊौ॥ प्रतिमायोगमसानमंझार॥ कस्योनपदुवसवश्रविचार॥६७॥ प्रभातभएजान्यो
जिनराय॥ पछातापकरैवहुभाइ॥ वारवारफुनिपाइनपस्यो॥ पदछीवतासिरकरते
छिस्यो ६८। दोहा। कहैमनोहरसुनहुभवि॥ सीसछिस्योयहुभाइ॥ ज्योंविनतीगुरुनरय
की॥ पातकजायपलाइ॥६९॥ सोरठा॥ धरसिरछेदनवात॥ ओरसेतीमेंकही॥ मूरख
विकत्थविष्यात॥ ओरसेओरकहै॥७०॥ चौपई। वाक्योमनुजवगुणहिविवेक॥ कौतिग।
नोहिदिषाऊएक॥ साथिपवनजवकरिसिधिरूप॥ पछिमदिशिकोचलेश्रनूप॥७१॥ गएवा
दग्रहगुणगंभीर॥ परमतषंडनसाहससधीर॥ ताडिनिसानमहागलगाज॥ कनकासन।

All rights Reserved © Pandit K. Jain Oriental Library, Agra

वैठो मुनिराज ।७३। सुनिवच मुनि फुनि तिनस्यों कही ॥ वाद नाम दूजा नूंनही ॥ क्योनीसा
एवजाए ध्याइ ॥ षेटमणेको तिगदुजराइ ।७४। वैठो कनकासनथ्योंसही ॥ जनम पाइकरदे
ष्यानही ॥ वोलेदुजकौनगुरुतोहि ॥ ताकोउत्तरदीजेमोहि ।७५। गुरुमोनहीमुनीश्वरक
ह्यो ॥ आपणहीमैंतपसंग्रह्यो ॥ गुरुविनसमझिमहातपगह्यो ॥ कारणकोनदुजऐसोक
ह्यो ।७६। कारणकहूकह्योनहिजाहि ॥ वातकहतहोंडरयोआहि ॥ अंतरकथाकहोदुजराइ
सुनोश्रवणदेमनवचकाइ ।७७। गुरुवासाचंपापूरभूप ॥ हरिमंत्रीतसुअधिकअनूप
मंत्रीहरिगंगातटसोऊ ॥ शिलातरतदेषीजलमोऊ ।७८। स्वामीशिलातरतजलजही
हमदेषीकछुमिथ्यानही ॥ सुनिकरिवचननृपतिवोलियो ॥ झूठझूठकरिसोवंधकियो

॥ अर्थ ॥ पुनि करि मंत्री उत्तर दियो ॥ मैं प्रभू अपनो कृति पाइयो ॥ ऐसो सुनि मंत्री वचसार ॥ न
पमंत्री छोड्यो तिहिवार ॥ ८० ॥ मंत्री वत्ति मन मतो उपाइ ॥ वादर तिनि मिष एव हु भाइ ॥ करै
नृत्य संगीत वजाइ ॥ वन मा है नित मन वच काय ॥ ८१ ॥ एक समै नृप वन वि चरंति ॥ कपि कु
लदेषे नृत्य करंति ॥ आइ कही मंत्री सो वात ॥ नृपति कपि कुलदेष्यो न्यात ॥ ८२ ॥ सुनि मंत्री
वो त्तीयो रिस पाइ ॥ राजा तो हि वगी है वाइ ॥ दुष्ट वुद्धि मन मा है षरी ॥ मंत्री अपनी सी विधि क
री ॥ ८३ ॥ हाथ जोडि मंत्री इम कही ॥ राजन अव छोडु तुम सही ॥ कहा भई मेरी मति तो हि
तै देषी मन मै न हि जोइ ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ स्वामी तुम ज्यों टेषियो ॥ कपि कुल नृत्य करंति ॥ त्यों
ही मै देषी प्रभु ॥ जल मधि शिला तरंति ॥ ८५ ॥ सोरठा ॥ कहै मनोहर दास ॥ असंभाव्य जो वो

त्रिसी॥ होसीतिहिउपहास॥ नृपमंत्रीसमप्रीतमा॥८६॥ चौपई॥ तातैदुजगणमेरीबात॥ अ
संभाव्यहैमनवचभ्रात॥ इतनीतुमसोंविनतीकरों॥ ताहीतैंहूंकहुतोडरो॥८७॥ अैसीसु
णिवोत्तदुजराज॥ कहौंबातमनवचतजित्राज॥ वोत्योखगपतिवचनअवीह॥ अरिक
रिकुंभविदारणीसीह॥८८॥ श्रीपुरनगरएकमहित्तसे॥ मुनिदत्तश्रावकतिहिमधिवसै
॥ हूंबुद्धिसागरतिहिकोवात्त॥ पढणैकोंसोप्योचटसात्त॥८९॥ एकदिनागुरुमोहिबुलाइ॥
नीरवेगिलेआवहुजाइ॥ तेकमंडलहूंचालियो॥ षोलतपाणीवीसरीगयो॥९०॥ गुरुपांणी
कोजोवैमोंजि॥ हूतोरलोप्यातसोंत्याजि॥ ढीलदेषिकरिकोपैमुणी॥ चटियापैमैअैसीसु
णी॥९१॥ इतनैगुरुआवतदेषियो॥ ताहिदेषिकरिहूंमाजियो॥ कर्मजोगकारणतेषियो॥

सनमुषगजआवतदेषियो॥ए१॥सोकलतोडिवगाईकही॥मदकरिसिंचितआवैमही॥
ताहिदेषिमैकंपैलोग॥यहआयोमरणैकेजोग॥ए२॥मृत्कसूपयहअंडादंड॥पकरैताहि
करैदुषंड॥रुद्रसूपगजजान्योलोइ॥अहोविधिताकैसीहोई॥ए३॥मरणईनविदीसैकोई
मैमनमोंहिविचास्योजोय॥फुनितकालमतोमैकियो॥करमंडलमैहूंपैठियो॥ए४॥न
समारगमैगजपतिराइ मैरैपीछैलागोधाइ॥हकमंडलनालैनीसस्यो॥नसगजपतिनै
कोपोकस्यो॥ए५॥पकरिवसनमोकारैडारि॥हूंदोस्योउघानमंझारि॥कमंडलनाकूगजप
रिधीर॥निकस्योमनोकालकोवीर॥ए६॥अटक्योइकताहि॥गजपतिहालसकैनहिजा
हि॥षेदषिन्नकूपडाआयाण॥नसठाहरनिकसेतसप्राण॥ए८॥दोहा॥वंवईतेंअहि

पूछवाल

नीससो॥ऊपरिमसिचान॥अहेडीसरसंधियो॥कोराषैतिहिप्राण॥एर्ण॥अहेडीविसह
रहडस्यो॥वावीहाकेभाग॥सरछूटौमूठीडिगी॥गयोसिचाणैत्यागी॥३१०॥जाकोरष्योसा
इयां॥मारनसक्कैकोइ॥वालनवांकोकरिसकै॥जोजगिवैरीहोइ॥१॥रणेराजुजत्याग्निद।
ष्यि॥परवतअहिवनराइ॥इनकोमैनाहीनकछूजैहैपूरणआइ॥२॥जोकाहूगाढहाषुणै
प्रभुतिसषणिहैरूप॥मनसावाचाकरमणा॥यहैजानिजियरूप॥३॥सोरढा॥पड्योदेषिग।
जराज॥मोमनचिंतानूपणी॥कीजैकोनइलाज॥राजालेसीलूटिघर॥४॥जोरेविगारेका
म॥ताहिसोदावाचलै॥मनमैहैअभिराम॥धारिमतोहूनीससो॥५॥चौपई॥मैकंपतिहूं।
आघोपड्यो॥जगन्नाथदिढमंदिरपड्यो॥करीवंदनाभीतरिजाइ॥भयोहरषअतिअंग

नमाय दृगयो दिवस निशि मऊ मथयो ॥ षेदषिन्न निद्रावसि भयो ॥ नगनगात कपरे वि
नहीन ॥ जागि उठो मन अधिक मलीन ॥७॥ कपडा कापै मांग्यो जाइ ॥ मांगे कुलकी शोभ
नसाइ ॥ तातैसु कचिर लोवर वीर ॥ कुलवज्ञा लोपी नहीं धीर ॥८॥ दोहा ॥ धिक परो नहजी
वना धिक परो सुरगेह ॥ साजी क्षास तषंडि करि तो न कहूं कछु देइ ॥९॥ कुंडलिया ॥ धि
क परो तिन जन कको ॥ एक पसी कए काजि ॥ वेचै मान अमोल नग दीनव चन मुख
साजि ॥ दीनव चन मुख साजि मान नग मूरख षोवे ॥ विन श्रम विट तौ नांहि लोक तीनो
फिरि जोवे ॥ तातै धीरज ठानि मानि शिष्या न नमठिकु ॥ देहु देहु जचरै ज्याहु जन मजननी
इधिकु ॥१०॥ चौपई ॥ कुलंतिजैन तपस्या करो ॥ राग दोषन विमन मेधरै ॥ चितवत चितवत

पगरो थयो ॥ कारण पाइ मुनीश्वर भयो ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ मुगति मुकत दातार ॥ जैन धर्म जग मै
भुभग ॥ अवर धर्म सब छार ॥ भुगति मुकति दी सैन ही ॥ जैन धर्म भुभरैन ॥ अवर धर्म कौडी
सदृश ॥ भुगति मुकति सुख दैन ॥ यह विचारि तप सी भयो ॥ १२ ॥ चौपई गांव नगर पुर पट्टन
वहू ॥ तीरथ यात्रा की नी सहू ॥ भ्रमत भ्रमत में आयो सही ॥ सोच वात मै तुम सों कही ॥ १३ ॥
कवहूं वात न काहूं कही ॥ यासे ती मेरे गुरु नही ॥ तुम पूछी मै कही सुभाव ॥ कारण इहै वि-
चारे दाव ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ जब तुम होइ भाव ॥ तब गुरु कहि कि हां पाइयो ॥ वुढती जल म-
धि नाव ॥ कहां कहां ढूढन फिरै ॥ १६ ॥ चौपई ॥ विद्याधर के वचन सुनेइ ॥ हस अवनीश्वर उ-
त्तर देइ ॥ झूठे नर हम देखे वहू ॥ सो नि:फल करि डारे सहू ॥ १७ ॥ तुझ ठो निधि मिथ्या नांहि वो

त्यो मेष तै पांतीमां हि॥ हाथी कमंडल मोहि गंवार॥ पैठ तसु न्यो न इस संसार॥१८॥ जैनी
होइ करि झूठ मत्ति इ॥ क्यों जिन मति मुख कालि मदेइ॥ इतनो झूठ कहो मति कोइ॥ कहतै
कष्ट महादुष होइ॥१९॥ अडिल्ल॥ अगनि मांहि जल होइ कमल भूरी थली॥ व्योम पहुप
षर सिंग तर नित मावली॥ वांझि गोदसुत पिंग चैतन्य परसही॥ कुनिहारे झूठे सिर
मोर वचन मति तो नही॥२०॥ चौपई॥ दुज वच सुनि बोल्यो खगनंद॥ धर्म पयोनिधि मा
नंद चंद॥ झूझूठो झूठो सिर मोर॥ मो सम झूठो नाही न और॥२१॥ इसी बात तुम आगम मां
हिं॥ होइ वहुत मानो कै नाहि॥ तिस कौन उत्तर दीजै मोहि॥ हूं अवसांच कहूं सब तोहि॥
२२॥ सोरठा॥ अपनी अपनी बात॥ सब कोई सांची कहै॥ तहां कहा कुशलात॥ वचन आ

सतजेसतकहे॥२३॥दोहा॥ अपनोछिद्रपहारसम॥ताहिढकैनहिकोइ॥सरसोंसमपरछिद्रहै॥ताकोदेखेलोइ॥२४॥अडिल्लछंद॥आतममांहिअपारदोषवीत्रीजेवडा॥अपरआतममांहिदोषसुराईतेवडा॥जाणेहुगुणवंतअनेराकेवडा॥फुनिहाक्योछुटैयहजीवसुकर्महिएवडा॥२५॥दोहा॥ सज्जनओगुणडारिकै॥गुणगणबांधैगांठि॥सज्जनसोंसांचीकहे॥दुर्जनतजैनगांठि॥२६॥अवगुणसज्जनछोडिकै॥गुणगणगहैसदीव॥जैसेदधिमथिगूजरी॥रचिपचिकाढैघीव॥२७॥दुर्जनगुणसबदूरिकरि॥पकरैओगुणलोई॥जोकतरुणीस्तनत्याइयै॥मैत्यापीवैकोई॥२८॥चौपई॥विद्याधरवचहिरदैधारि॥दुजगणवोलेवचनविचारी॥जोपुराणमैहोसीसही॥सोमानोमुनिमिथ्यानही॥२९॥मुनिमु

निज नरदीयो नाहि॥ कहूं वात पणि ऽरयौं आहि॥ जो मेरै मति साचीवात॥ तुम सब झूठी क
रीविख्यात॥३०॥ सोरठा॥ अपणै वुत की वात॥ कहत जीव त्यागत्यो परै॥ तहां कही कुश ल्यात
वात कहो जो वेद की॥३१॥ दोहा॥ सुत्र कंठ वोत्यो मुनि॥ संकात जि कही वात॥ कथा वेद
की मीत्र तुम॥ तौ सति मानो भ्रात॥३२॥ चौपई॥ सुनि वोत्यो विद्याधर सून॥ सव गुण पूर
णता हीन न॥ कहो कथा भुन मन वच काय॥ सुन हु का नदे पंडित राइ॥३३॥ धरम वृत
इक दिन वोल्यियो॥ सभा मांहि वीडो केरियो॥ सूर सुभट अस को है कोइ॥ धरणी धर गहि
त्यावै सोइ॥३४॥ अरजन वोत्यो गरवत वाणि॥ सपत मुनी सम मेत्रे आनि॥ नठो सुभट म
छनि देताव॥ धनुष षैचि मही की नो घाव॥३५॥ दोहा॥ तीरवेऊ दश कोटि वत्स हित चल्यो

वत्सवीर॥ गहिबांध्योकणिराजकुनि॥ सतसहितगुणधीर॥३६॥ वाहीमारगआईयो॥ हाथ
गहेअहिराज॥ सीसनाइकरिबोलियो॥ तेहिगरिवनिवाज॥३७॥ चौपई॥ बोल्योखगपति
साहसधीर॥ वातसत्यकेझूठीवीर॥ पखियाततजिउत्तरदेहु॥ जोमेरोभाजैसंदेहु॥३८॥
बोल्योदुजयहसोचीवात॥ कायैमित्रनिषेध्योजात॥ सुनिषगपतिबोल्योबचसार॥अ
होझूठदेख्योव्योहार॥३९॥ दोहा॥ तीरवेऊदशकोटिवल॥ बैठोसोसति आहि॥ कमंडलपैठो
फीलइकु॥ झूठकहतहैताहि॥४०॥ सोरठा॥ जोपूछतहैमोहि॥ अपनीअपनीसबदलै॥स
वजगदेख्योटोहि॥ नपुंसिषबोल्योषंडमखो॥४१॥ चौपई॥ सुनिअवनीशबचनभणेइ
कुकरकीज्योंदांतीदेइ॥ महीउदरहोदीरघचीर॥ फाटितिगईधस्योनधीर॥४२॥ कमंड

त्रनुदरत्छहैसही॥ क्यौंगजपैठतफाटोनही॥नाकुगजनिकसियोत्रसेस॥त्रटकि
रह्योक्योंपूछिकसेस।४३। जाकोहमकोंदीजैजाव॥जोराषोचाहोनिजत्राव॥सुनिखग
वोल्योवचनत्रभंग॥जैसैमदमातोमातंग।४४।मुनित्रगस्तियरगटभूमोंहि॥तनुत्रंगु
ष्ठसममिथ्यानांहि॥सागरजीवनपीयोसहू॥यहेकथाजानैतिहांवहू।४५।तुमत्रागम
मैत्रैसीकही॥झूठकरौकैरषौसही॥दुजबोल्योयहसांचीबात॥कुंडातलिनछिषैशशिभा
त॥४६॥सोरठा॥त्रगस्तिनुदरमंझार॥मायोसायरजत्तसकल॥मनमैकरेविचार॥झू
ठकमंडलगजरह्यो।४७।त्रहोझूठकीनिधि॥तुमदेषैइहजगतमै॥तुववचनाहिनसि
द्धि॥त्रसंभाव्यकोसत्यकहै।४८।वहैझूठकीगांस॥कौनचलावैसाचकी॥तिहिठौरडूबै

वांस ॥ कोमूरख पोरीगिनै ॥ ४९ ॥ चौपई ॥ कहैसत्य नविभाषैंकूर ॥ संसैतिमरननसावनमू
र ॥ नष्टिभईधिरथीइकवार ॥ ब्रह्मा ढूंढतफिल्योगवांर ॥ ५० ॥ तरुतलिदेषोअगस्तिजमु
नी ॥ ताकीमहिमाअद्भुतवनी ॥ सरषपसमकमंडलतिसजांन ॥ तरुशाखाधिररा ष्यो
तानि ॥ ५१ ॥ नमस्कारकरिबैठोजाई ॥ मनवचक्रमकरित्यागोयाई ॥ मुनिवोत्योयहसं
सोमोहि ॥ व्याकुलताअंगदीसैतोहि ॥ ५२ ॥ हेमुनिवरजागईविद्याइ ॥ गहीतेकीप
रिढुंढोताहि ॥ मुनिवोत्योविधिमचिरजयेषि ॥ कमंडलमीतरपैठिकरदेषि ॥ ५३ ॥ ब्रह्मा
कमंडलमधिपैठियो ॥ तिहिमधिवटतरुशुभदेषियो ॥ वटतरुकोइकपत्रविशाला ॥ ता
ऊपरिसूतोगोपाल ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ ऊंचोनींचोनदरहरि ब्रह्मादेषिसुजान ॥ बूझैब्रह्मारु

THE CENTRAL JAINA ORIENTAL LIBRARY. ARRAH. Estd. 1911

स्त्रकों॥ मनवचदेवहुमान॥५५॥सवसरीरनिहचलप्रभु॥ नदरहस्त्रेकिहिकाज॥मोम
नश्रतिसंसैपडो उनरदीजैराज॥५६॥मुनिवोल्योमथरापति॥मोवचहिरदैधारि॥पर
जानासतिदेखिकरि॥कीनीनदरमंझारी॥५७॥चौपई॥मुनिविधिवोल्योजोरकैहाथ॥
भलीकरीतुमगोकुलनाथ॥जोमोकुंतुमश्राज्ञाहोइ॥सवपरजादेखोंश्रवलोइ॥५८॥
सुतवियोगसास्तहैमोहि॥मोसुखहुइपुनिजपजततोहि॥पैठनदरमैंमनवचका
इ॥विनाकाजमतिसोचकराहि॥५९॥पैठदुनीसवदेखीजाइ॥भयोहरषश्रतिश्रंगन॥
माइ॥वहुतवारतिहांतिष्ठोसही॥लोचनदेखितृपतेनही॥६०॥दोहा॥श्राननदि
श्रिनीसरणकों॥वुलानद्यमकीन॥हरिराख्योमुहमूदिकरि॥सिष्टाजाननदीन॥६१॥

हरि धूतारे देसके॥ करी मसषरी लोइ॥ जे हंनि कसं हेठि वटि॥ मो जग हांसी होइ॥ ५२॥ ब्रह्मा
मनमैं मतो करि॥ हरि सुंडी हुई वीर॥ निकस्यो अपनी मुजावत॥ अदभुत साहस धीर॥ ५३॥
॥ चौपई॥ फुनि नारायण हासी करी॥ ब्रषण वाल हिरण्यो हरी॥ षेचत दुषण लाग्यो ठार
हासी ठगि फुनी कीनी और॥ ५४॥ कमलासन की नो विधि जहां॥ बहुत काल लों निवस्यो
तहां॥ यहु माया विश्व व्यापी रही॥ देवा नै भी छोडी नही॥ ५५॥ कमलासन तव नै भयो स
ही॥ नाम विधाता मिथ्या नही॥ करै वडा पर पंच जगि कोई॥ तो भी नाम वडे का होइ॥ ५६॥
वडा करै सो सगली छाजै॥ और करै तो डोडी वाजै॥ तुम पुराण मैं अैसी वात॥ है कि नाही
सत भाषो भ्रात॥ ५७॥ विप्र कहे सत्य मन वच काइ॥ का पै मित्र निषेधी जाइ॥ सुनि वोल्यो मु

निवचन अभंग ॥ जिनपदपंकजसेवनभंग ६८ ॥ दोहा ॥ वृषणवालब्रह्मातणो ॥ त्यागो
वृहजोपाल ॥ वोहीवालगजपूठको ॥ त्यागोनाकूनाल ॥ ६९ ॥ मुनिकमंडलजगभारतैं ॥
फाटैनहीलगार ॥ मोकमंडलगजभारतैं ॥ क्योंकरिफटैगवांर ॥ ७० ॥ सोरठा ॥ कमंडलसर
सोमान ॥ तामैमायोजगतसव ॥ मोसमगजगुणखान मोकमंडलमावैनक्यों ॥ ७१ ॥
विरथीविनदुजराइ क्योंपरिभ्रमियोविधिकहो ॥ हरिमूतोकिहिठाहि ॥ दुनियाभाजीका
हिपर ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ परजाएषीजदरहरि ॥ मनमेंदयानपाय ॥ लघुदीरघवाधाकहो ॥
करतेमोहिवताय ॥ ७३ ॥ जोवृहाव्यापकसकल ॥ जानैसवसंसार ॥ क्योंमहिजातीआप
णी ॥ जानीन ॥ हींगवांर ॥ ७४ ॥ जोसवदेहीनरतनी ॥ काटनकोसमरथ ॥ वृषणवालका

छोन क्यों ॥ समझैनही अपथ ७५ परिलै होतीमेदिनी ॥ रघीकेसो राइ ॥ सीतारघी ।
केोनहरि ॥ जानीकोनवताइ ७६ जिहिहरिसमरणमात्रते ॥ जाइसकलदुषदूरि ॥ सिया
वियोगतैरामचंद ॥ सहोपरमदुषभूरि ७७ ॥ नारदब्रह्मासारिषे ॥ ताकोपूछतवात ॥ सो
सीताकोषलकपै ॥ पूछतफिरियोभ्रात ७८ चौपई कवलपत्रसमदारापानि ॥ लावनिरू
पधर्मकीषानि ॥ सीलतरंगिनिगुणकीमही ॥ ऐसीत्रियाअहिदेषीकही ७९ दोहा ॥ ताको
परमेश्वरकहो ॥ करिकरिझूठउफोल ॥ छोकसकैनहिपूंदनिज ॥ लोगनिकोंदेषोल ८० ॥
होणहारकोंप्रीतमा ॥ मेटनहारैकौन ॥ स्यालफलावैस्वानपै ॥ लोगणकोंदैसोन ८१ ॥
सोरठा ॥ कालअनादिमिथ्याति ॥ मदिराकरिजगठकिरह्यो ॥ मूरषनहीसमाति ॥ अपनी

अपनी बातमै॥८२॥चौपई दोष अठारह कहावषानि॥ एसवदुज्ज ग कारण जांनि॥ षु
धाअगनि तैंतपतै देह॥ इंद्रिय पंचन करहिं सनेह॥८३॥दोहा॥ विनयो नैविघ्नमकला
वहुविधिहासविलास॥ एत्रिलावसिनासहै॥ कहैमनोहरदास॥८५॥चौपई॥ भयकरिकं
पतसकलसरीर॥ वचननमुखतैनिकसैधीर॥ दोषीसवपरिकोपकराइ॥ गुणानविज्ञा
नैमनवचकाय॥८६॥रागयगतपरपीडाकरै॥ इंद्रिवसिविषयनवसिपरै॥ कगताकगत
विचारैनही॥ कहैमनोहरमानोसही॥८७॥मेधनमेतनमेरीमात॥मेकांतासुतमेरेभ्रा
त॥मोहविज्ञाचगलो॥योकहै॥प्रीतिनदीमेवूडोरहै॥८८॥सत्तेषमवातपितत्तनुदहै॥रो
गयगतवातैंएकहै॥पुत्रमित्रधनदासीदास॥कामनिजेहमनुषभवआस॥८९॥मोहि

कहा सुख मन वच काय ॥ चिंता वसि मूरख विललाय ॥ जैसे कर्म उदै संयोग ॥ उपजै आइ तहा निज रोग ॥९०॥ गरभ नरक हूते अधिकार ॥ ता अधि सुख न विहोइ गंवार ॥ जरा ग्रसति तन कहो ई करै ॥ वहिरभूत को आदर धरै ॥९१॥ मृत नाम सुनि कंपै काइ ॥ चक्रितर हित मन कछु न सुहाइ ॥ महा रोग उपसर्ग अपार ॥ पुत्र मित्र धन हो इ वैकार ॥९२॥ करै विषाद मूढ हो इ को इ ॥ कहै मनोहर मन वच त्रो इ ॥ सूक्ष्म ज्ञान सुणि वि समै करै ॥ जिन वर वचन न हिरदै धरै ॥९३॥ तन विष्टा पर पूरण त्रो इ ॥ रति मानै जो मु रख हो इ ॥ काम करत न उपजै वहु षेद ॥ हो इ वीर्य वल को वहु छेद ॥९४॥ चल्यो पसेव महा जव गात ॥ विकल हो इ तन मन वच त्रात ॥ निद्रा जव आवै है तोहि ॥ सपत प्राण मूर्छित

होइजाइ॥९५॥हरकपात्ररोगीगुणषान्न॥सिररोगीनारायणजानी॥पंडुरोगीदिनप
तिसुनीवीर॥रासिकुष्टीजानैसवधीर॥९६॥चित्रमानुषासिरमोर॥कहिकोगुणैमनो
हरओर॥रममहारागकीषांन॥वैरविदारनदोषवषान॥९७॥मोहमरोरैज्ञानप्रधा
न॥नयवसिआवधगहैअजान॥एतेवतीदोषवसिभए॥नुछविचारैजडस्योंगए॥
॥९८॥गजमारतहरिहोइनखेद॥मृगमारतनहिताहिनुषेद॥तेवैदेवकहोक्योंहो।
हि॥मिथ्यातीसवतेवैहोहि॥९९॥सोरठा॥हमदेष्योठहराइ॥देवइसावरकतनही॥मुं
डोजाकीमाई॥देवकहैइनकोजिको॥५००॥चोपई॥ब्रह्माविसनमहेश्वरएक॥कहैमुग
धजिनतज्योंविवेक॥जैतीनोइकहोतेवीर॥क्योंब्रह्मासिरछेदो धीर॥१॥दोहा॥गएदो

षनसितासतै॥ज्योतमभानउघोत॥सोईदेवतिसदेवकी॥व्यापिरहीजगजोति।२॥
चौपई॥ ब्रह्मावीर्यगिरयोजलमांहि॥उठेबुदबुदामिथ्यानांहि॥तीनभागकरिजगत्र
यकरै॥तुमआगेममैऐसेधरै॥३॥सांसोमोहीवडोहैवीर॥कहोंरह्योपिरथीविन
नीर॥परवतद्वीपणीसरताकरी॥इतीवस्तुकहायानैपरी॥४॥सोरठा॥दुर्लभएक
सरीर॥कारणएमिथ्यानही॥हूंपूछतहोंवीर॥तीनलोककोकरिकरे।५।ब्रह्माके
तननांहि॥निराकारतुमकहतहो॥समझिदेषमनमांहि॥सिष्टिकहोकासोंकरी
६॥चौपई॥पहिलीसिष्टिनपाईएज॥नासकरीफुनिकहुकिसिकाज॥मूरषपापज
पायोभूरि॥सोकैसेकरिहोसीदूरि।७।निराकारकृतिरनितवुद्ध॥परमातमपरमे।

श्वरशुद्ध॥ त्रैसोपुरुषमहात्रभिरम॥ त्याककरणसोंकाईकाम॥८॥लोकनपाइकैरफु
निनाश॥मुनिकरिमोहिआवतहैहास॥नुमपुरणमैहैजोज्ञान॥पूरवत्रापरविरुद्ध
जोवात॥९॥न्यायवंतजेपुरुषप्रधान॥त्रैसेवचनसुनैनहिकान॥नुमपुराणमैज्ञा
तत्रसार॥रंभातरुमैकछुनहिसार॥१०॥सोरठा॥सुनीवातखगकीजु॥उत्तरकिछुआ
वैनही॥मानोमारेवीज॥टकटकाइन्योठगरहै॥११॥षगपतिमत्तिकरिमान॥नदी्रा
जुत्रारिकरिकेगरी॥कहिकहिवातसुजान॥समझावैनिजमित्रको॥१२॥नुमपुराण।
मैवीर॥वेदकहैसोमैकहों॥सुणोंश्रवणधरिधीर॥त्रागैंभीकछुकहतहों॥१३॥नारा
यणकेचारि॥हाथचतुर्मुखब्रह्मके॥वेदुष्टसंसार॥तीननेत्रहरकेकहे॥१४॥चौपई

दोइभुजामुखएकविष्यात॥सकलजगतदीसतहैन्यात॥पीयमिथ्यामदिरावुधहीन
॥करैऔरसोंऔरमलीन॥१५॥जगतअनादिनिधनहैलोइ॥अकृत्तमकरतानहीको
इ॥जीवअनादिकरमवसिवीर॥भ्रमतिचतुरंगतीमनवचधीर॥१६॥जैसोकरमज
देहोइआइ॥तैसोभुगतैमनवचकाय॥ब्रह्मविसनमहेसरजांनि॥लहीचतुरगति
दुखकीखांनि॥१७॥अपनीदुखसहिभयेअधीर॥सोपरदुखनाकैसोवीर॥मेरम
नमेचिंताघणी॥कहूंवातनुमसांचीभणी॥१८॥सोरठा॥जेनरघरकीलाइ॥बुझावनअ
समर्थहै॥परघरमनबचकाय॥बुझावैकैसेमुगध॥१९॥चौपई॥रागदोषमदमोह
मलीन॥तिनहिकहतहैशिवसुखदीन॥ऐसीमूढकहैजोवात॥धिकपरो तिसजणा

णीभ्रात॥२०॥ कामभोगवशिवर्त्तीजीव॥ मिथ्यामदमैंमगनसदीव॥ मुक्तिमार्गतिनरा
ष्योठाई॥ कहैमनोहरमनवचकाइ॥२१॥ मिथ्यामदठकिऊठी कहै॥ तेशिवमंदिरकै
सैलहै॥ कहैताहिंमनमांहिविचार॥ कौणपरषलहियेधर्मसार॥२२॥ दोहा॥ छेदन
तापनताडना॥ निर्घषीणएच्यारि॥ कनकपरिक्षाप्रीतमा॥ मनवचदेहविचार॥२३॥
सत्यतपसंयमदया॥ चारिपरिषहैभ्रात॥ धरमरतनकीप्रीतमा॥ मनवचजानो
भ्रात॥२४॥ देवशास्त्रगुरुपरषकरि॥ जेनरशुभसेवंत॥ तेनरसोकलकर्मदिढ॥तोडि
मुकतिमहिजंत॥२५॥ देवदेवसोंपरषिये॥ शास्त्रशास्त्रसोजोइ॥ धर्मधर्मसोंपरषिये
मुनिसेतीमुनिसोइ॥२६॥ सवइयाइकतीसा॥ देवजिनिअष्टकर्ममूलतेजपारिडारेनी।

नही नुवनपति ग्राकीछ्क्ति गाईज्॥ रागदोषरहित धर्महेयउपाय ज्ञास्त्रतो सोई ना
मैतातै एवताईज्॥ सो तोत्रिण समजा कैवैराग जहितमुनि मानजातवनोवासी प्राणी
सुखदाईज्॥ कहतमनोहरण चतुररतनशुभइहमैहोइशरणाईज्॥ ३७॥ चौपई॥ प
गपतितजिमुनिवरशुभरूप॥ ग्रलोतापसीरूपअनूप॥ उत्तरदिशतहांवृक्षज्ञात्व॥ ग
येजुगमप्राणीरघपात्व॥ २६॥ तहांनिज्ञानवजाईजाइ॥ कनकसिंघासनवैठग्राइ॥ सुणि
मेरीदुज-ग्रायोगाजि॥ सवेतनचलैवादकेकाज॥ २७॥ वोलेब्राह्मणसाहसधीर॥ न
रकपढ्योव्याकरणकवीर॥ वोल्योतपसीवचनप्रचंड॥ वादवचनकरैज्ञातषंड॥ २८॥ वा
दनामहंजानोनही॥ वातहमारीमानोसही॥ क्रीडाकरतफिरोसवदेस॥ मातजातहूं

तपसी भेस ॥३१॥ सुनि वामण को ते सब हसी ॥ तपसी को कहि क्रीड़ा किसी ॥ जन मतंही
को तपसी भयो ॥ बड़ो अचंभो हम को थयो ॥३२॥ तिहि को हम सों व्यो रा कह्यो ॥ हमेर
मन का संसै दहो ॥ वो त्यो जितवैरी सुतसूर ॥ पंडित मंडन षंडन कूर ॥३३॥ नगर जैजंती
मेरी मात ॥ मूल कुवारी जग विष्यात ॥ जैसे मात कुमारी रही ॥ कहो वात सो मन व।
चस ही ॥३४॥ व्याह समै मो पिता सुजाण ॥ गल्यो कामिनी करण षाण ॥ सुनि निसान।
गज आयो धाइ ॥ काल रूप संकलन विषाइ ॥३५॥ परी नगर मो दहदिशि कूक ॥ पकरे
ताहि करै द्वै टुक ॥ गए वरती चहुं दिशि भाज ॥ दूलहर लो कामिनी काज ॥३६॥ इत
नै गज दुष्ट आइ कै गह्यो ॥ दूलह षेचि पावत लिद्यो ॥ पकरि दंग द्वै राती चीर

पापीहिये नउपजीपीर॥३७॥करमपरसतैंभयोअधांन॥मेरीमातकीवातप्रमाण॥ना
नीमोमातासोकह्यो॥पुत्रीकहांगरभनुऊरह्यो॥३८॥ज्यिनिमलदोकुकुलमही॥तिनि
मुखकालीमदीन्हीसही॥कहावुद्धिकीनीतेपूत॥क्यारणेनुऊगरभप्रसूत॥३९॥सोर
ठा॥करमपरसनरतार॥गरभरहोज्यान्योसही॥अवरसकलसंसार॥तातन्यातस
वमोहियो॥४०॥चौपई॥गर्भमासनवपूरणथयो॥इतनैसन्यासीआइयो॥नानीमोति
निभोजनदियो॥फुनिमहंतनानीपूछियो॥४१॥मेरेमनइकसंसोपस्यो॥नुदिमसक
लकहाकोकस्यो॥वोल्योमहंतसुभवचनरसाल॥वारहवरसपडैइहांकाल॥४२॥ज
हांभुनलदेवअवदात॥तहांजाइतिष्टहगेमात॥हमनुमसोयहीसांचीकही॥तिसकार

गयहछोडीमही ॥६३॥ हुमातागृहमैथितिभात ॥ सकलसुनीतिहांतिनकीवात ॥ जो
भयमोनपज्योनहाथके ॥ ताकीवातकहोकुणवके ॥६४॥ सुणीवातचितमोथरहस्यो ॥
जोलाबज्ञाकाशतैपस्यो ॥ निकसिभूषमेरकोधीर ॥ यहविचारकीनोमनवीर ॥६५॥
होसीइहांतवैभुमकाल ॥ तबहीहूंनिकस्योतनबाल ॥ यहविचारकरिगर्भमैरह्यो ॥
बारहबरसऊठनहिकस्यो ॥६६॥ क्रमक्रमद्वादशवर्षतिगया ॥ तबतपसीकाआवण
भया ॥ पायलागमाविनतीकरी ॥ भयोसुमिछनुमआयेफिरि ॥६७॥ बोल्योतपसीम।
धुरीवाणी ॥ भयोसुनिछइहंमाताजानि ॥ मैसुणितपसीवचनरसाल ॥ निकस्योदूम
नबचततकाल ॥६८॥ नठिरेपात्रगहिबोल्योएह ॥ मातामोकोभोजनदेह ॥ देषिस्परा

All Rights Reserved © Shri D. Oriental Library, Jai

समसमभाइ॥हाइहाइकरिअतिविलखाइ॥४९॥सुनिकरिरुदनकामिनीवहू॥नानाभवमित्रिआएसहू॥देषिरूपमाभईउदास॥यहकोईनपज्योघरनास॥५०॥प्रेतरूपदीसैवपुथान॥जनमतहीमागैदुठषान॥जानमघेरिमेरोतजिगेह॥मैतेरेछांडियासनेह॥५१॥नाहिजाहितजिमेरेथान॥बालिकनकजेतोडैकान॥मातवचनसुणिहुवोसियो॥मधुरवचनकरिउत्तरदियो॥५२॥मोहिमातदीजैआदेश॥करुंतपस्यावालकभेश॥माताकीआज्ञाजोहोइ॥निकस्योग्रहतपत्वेकरिसोइ॥५३॥कष्टकष्टभुभतपस्याकरे॥सपूकुलीअपनीउधरे॥धनमातातोवचनप्रमाण॥तैमेरेकीन्योकल्याण॥५४॥नमसमत्वाइशिरभद्रकराइ॥निकस्योमाताआज्ञायाइ॥तपसिनिसंगि

तपदुद्धरकस्यो॥ कीयोपापपुरातनहस्यो॥५५॥करमजोइइकारणभयो॥साकेतान
गरीमेगयो॥तहांसुनीइकबातअचंभ॥योकरिमनराष्योनिजथंभ॥५६॥दोहा॥मै
निजमातादूसरे॥व्याहसुन्योतिहिथान॥हूंचित्यावसिहोइकरि॥पूछेतपसीआन
॥५७॥चिंतायकतमोवचनसुणि॥मोप्रतितपसीआहि॥दोषनहीतोमातकों॥करनैंदूजो
व्याह॥५८॥चौपई॥द्रोपतिकैहैपंचभरतार॥पाडोसवजानैसंसार॥सतीकहाईजग
मेसही॥सोतोवातदत्तगुरुकही॥५९॥दोहा॥पतिमूवोवर्षआठको॥रहैप्रसूतानारि
अप्रसूतावरषचारको॥रहैधीरजचितधारि॥६०॥पाछैपतिजोकरै॥दोजकुलमेमो
नि॥ताकोदूषणकोनहीं॥व्यासवचनयुवजानि॥६१॥चौपई॥मैतपसीकीसुनिकरिवा

त॥ दोषरहित निज जानी मात॥ गयो मन्त्र तप पावन चरो॥ तपसी साधित तपस्या करो॥६२॥
तीरथ करत इहां पग धरयो॥ करम उदै तुम दर्शन भयो॥ कापि विस्फुर्जित अधर विशाल
॥ सुनि वोल्यो दुज अति विकराल॥६३॥ दोहा॥ सकल झूठ त्रिलोक को॥ करै एक ठो आ॥
नि॥ ता को नूं विधि ना कलो॥ अरे झूठ निधि षानि॥६४॥ सवइया इकतीसा॥ पूरब स॰
कल देषि पट ना विहार आदि सकल वंगाल देषि देष्यो फुनि गोरहू॥ उत्तम स्यामका॰
वित्त षंधार षुरासा न देषि सकल पछांह देषि देषी कला नोरहू॥ पहाड की तली आदि
गंगा पार सब देषी और हू सकल कि रिदेषी बोर ठोर हूं॥ दक्षिणा सरव गुजरात वीजा
पुर देष्यो न त्व वार को उ तेरी सम और हू॥६५॥ चौपई॥ क्षिति देव निके वचन सुनेइ॥ म

नोवेगतिसनत्तरदेइ॥तुमपुराणमैऐसीवात॥कैतोमानोमनवचत्रात॥६५॥हमपु
राणमैऐसीवहू॥कथाहोइतोमानोसहू॥मुनिउत्तरखगदीयोताहि॥कहोकथाप
लिडरपोंआहि॥६७॥तिनिपुराणमैपजिपजिकही॥ब्रह्महत्यामनवचकरिसही॥
व्यासकह्योसोइतुमजाण॥मुनिवासिष्ठवचनपरिमाण॥६८॥इनकेवचननिषे
धैकोइ॥ब्रह्महत्यातिहिपदहोइ॥इसीभांतिजेवातकहेइ॥सोईसठइमउत्तरदे
इ॥६९॥दोहा॥सुनिद्विजवोल्यावचनतें॥पापनत्यागेऋतीहु॥षडगकहेतेतापसी॥
कटैनकवहीजीहु॥७०॥वचनकहेतेतापसी॥पापनत्यागेकोइ॥अगिनकहेतेवदन
जगी॥दाऊतसुन्योनत्योइ॥७१॥चौपई॥तातेतजिसंकाधरिधीर॥वातवेदकीकहूं

होवीर॥ हमठांन्याईपरमसुजाण॥ करैनअन्यायजाहिनिजप्राण॥७२॥सुनिविद्याधर
वोल्योऐव॥ विनतीएकसुनोहोदेव॥जोनुमषटमतजाणप्रवीण॥कहोकथासुणियोसु
खलीन॥७३॥भागीरथीकामिनीआथि॥दोनुत्रियसूतीइकसाथि॥नयोगरभतिनिश्च
चिरजभयो॥भागीरथसुतताकैथयो॥७४॥दोहा॥ गंधारीधृतराष्टके॥रहेमासदुइवी
र॥व्याहकरणकेमाहणमनवचजानोधीर॥७५॥करमयोगकपराभई॥इतनेमनवच
एह॥चौथेदिनअस्नानकरि॥काममगनतसुदेह॥७६॥सोरठा॥ पुनिसरुषनिहिवात
आलिंगनदीयोनरुपि॥रह्योगरभततकात्व॥गंधारीनेमाहना॥७७॥चौपई देषिगरभ
माताअरुतात॥हिरदैमोऊविचारेवात॥नानामतोकरिहिजयजाहि॥धृतराष्टनैदीनी

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

व्याहि॥७८॥ राजा राणी मछर करै॥ लोकवाद तैसवही डरै॥ कर्मकर्म पूरा नवमास॥ भये
पुत्र रात स्त्री स्त्र विलास॥७९॥ सत्य वात कै झूठी कहो॥ मेरो मन को संसो दहो॥ कहै द्विज
ए सांची वात॥ का पै मित्र निषेधी जात॥८०॥ तब सयर सैं वात कहोई॥ सो तो सांची मा
नो लोइ॥ नर सयर सैं मोजन भयो॥ ता को झूठ झूठ तुम कह्यो॥८१॥ कैसे चेतद्विज वोल्यै
ऐव॥ विनती ए कसु नो हो देव॥ तपस्वी वचन गरभ में वीर॥ क्यों करि सुणियो साह
सधीर॥८२॥ द्वादश वरष उदर मैं रह्यो॥ तहां नर कसम वहु दुख सह्यो॥ ता को उत्तर
दीजै मोही॥ मन वच क्रम सम पूछत तोहि॥८३॥ क्षितिदेवा के वचन सुनेइ॥ जाति सन्या
सी उत्तर देइ॥ उदर मांहि अभिमन्यु कुमार॥ चक्रव्यूह विधि सुनियो सार॥८४॥ सुणि

करिसगत्तीहिरदैधरी॥ वाहिरनिकसित्तगईकरी॥ वैसुनिसीघीसोसत्यवात॥ सुनीवात
मैझूठीभ्रात॥८५॥ मयमुनिएकैसमयेवीर॥ सरकोपीनपधारैधीर॥ कामदेवनेवहुतस
ताइ॥ सोतोजीतिसक्यौनहिभाइ॥८६॥दोहा॥ षत्रीतभईमयमुनीकी॥ सुकधातकोपीन
परीहुतीजत्रइछया॥ पीतमिंडुकीदीन॥८६॥ चौपई॥ पीवतगरभरह्यौदईरी॥ तिहिजा
ईकन्यासुंदरी॥ देषिमींडुकीकन्यारूप॥ सुरकन्यातैअधिकअनूप॥८८॥ हमहियोग्य
कन्यानविपीव॥ हमतीरजंचपाणीकेजीव॥ दोऊदंपतिमतोविचार॥ नलनीदत्तपरि
धरिस्योकुमारि॥८९॥ एकदिवसकर्मकेभाइ॥ देषिमयमुनिमनवचकाय॥ अतिस्नेह
उपज्योमनताहि॥ मोवीरजउतपतियहआहि॥९०॥ तेइगोदमुनिथानकिगये॥ देष्यो

कहातमासोभयो॥ वहुजपाइकरिपात्रीवात्र॥इकमनहोइपुनिदीनद्यात्र॥९१॥याको
नहीअचंभोकोइ॥संतितकोपात्रैसहुलोइ॥नामउदकयाताकोदीयो॥करमयोगइक
कारणभयो॥९२॥सोरठा॥मयमुनिकीकौपीन॥श्रुकधातकरिरमरही॥इहपुत्रीकहा
कीन॥यौवनवयमैकरमिवसि॥९३॥पुत्रीमुनिकोपीनसरवरन्हाइपहरिकै॥रह्यो
गरभताचीन्ह॥मयजान्योमोवीर्यते॥९४॥कन्यादूषणजोइ॥मनमेसंकाकुपनी
सपूसहसवृषलोइ॥थांभ्योमुनिवरगर्भतिस॥९५॥चौपई एकसमैकरमकेभाइ॥राव
णनिकस्योतिहिमणिपाय॥करिशिवनौनपत्रियोवुत्राय॥मुनीपुत्रीत्रिसदीनीव्या
ह॥९६॥भयोपुत्रताकुलआधार॥इंदुजीतजाणेसंसार॥कथाहैकिनुमनांहीकहो॥मे

रे मन को मंसो दहो ॥ ९७ ॥ सुनि बोल्यो सब ही दुज राइ ॥ काये मीत निषेधा जाइ ॥ यहो बात सो
च हैं सही ॥ तै क्यों झूठ और क्यों कही ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ सप्त सहस वृष इंद्र जित ॥ रह्यो गर्भ मति
दुष्ट ॥ मात गर्भ हुंषट दुर्गति ॥ रह्यो बात सो झूठ ॥ ९९ ॥ चौपई ॥ मोनि सो च दुज उत्तर दी
यो ॥ जनम तही कैसे तप लियो ॥ क्यों तो माता कन्या भई ॥ इहि उत्तर हम दीज्यो सही ॥ १०० ॥
सुनि बोल्यो खग वचन सुजोन ॥ सुनहु विप्र मन थिर दे कान ॥ इक थो पारासुर रिषि राय
सब तपसी से वै तसु पाय ॥ १ ॥ नाव चल्या वै थी धीवरी ॥ सो पारासुर की दिठ परी ॥ देष रूप
तैं वि हवल भयो ॥ ताको सठ आलिंगन दीयो ॥ २ ॥ दोहा ॥ गंगा मधि कूनि झीवरी ॥ आपन
तपसी लोइ ॥ जोग अजोग न जानई ॥ कामी होइ जि कोइ ॥ ३ ॥ चौपई ॥ वा ही समै गर्भ तिसर

ह्यो॥तपसी मेदनकाहू कह्यो॥करम करम पूरा नवमास॥भयो पुत्रता के शुभव्यास॥४॥
दोहा॥जन्मत नप ज्यो वोध॥शुभ व्यास पर्यंपेए म॥करूं तपस्या तात जी॥आय सदी जैमोही
प॥सुनि पाराशुर वोलियो॥हित मितवचन रसाल॥इहांही तप पावन करो॥मेरी ढिग गुण
माल॥६॥चौपई॥योजनगंधा नामतिसधस्यो॥पाराशरजी त्रैसो कह्यो॥व्यासपुत्र भयो गु
णगंभीर॥तिहितारेदो कुलवीर॥७॥सवइयाइकतीसा॥आठोही पहर मद मांस जेभ
षन करे निंदजाति धीवरी नपापसो डरचुहे॥पाराशुर कोई करिषी सुरइ कहे हे भयोता।
केतन का मानलत्र अतिहीजरचुहे॥पाराशुर धीवरी दुहू के व्यासपुत्र भयो ताके तो पुरु
ण सवपाप्ति कहरचुहे॥त्रैसो व्यास ताके वचन प्रमाण करै विधि को विधान कछु जान्यो।

नापरचुहै॥८॥दोहा॥व्यासतपस्याशुभकरी॥जन्मतहीशुभधीर॥त्रेसेंहीमेभीत्रही पावन
तपस्यावीर॥९॥चौपई॥सूरिजसंगशुभवालिकवलेा॥कुंतीकर्णकुवारीजलेा॥१०॥
ठैपंडुकोदीनीव्याह॥साचिहैकिनझूठीआहि॥१०॥नदीतटकऋषिगंगातीर॥सूतांसु
ऋषिस्योसुनिवीर॥जागिविचारिविंदकरिलियो॥कवलपत्रनूपरिमेलियो॥११॥चं
दुमतीपुत्रीनृपतनी॥संगसहेलीसुंदरघणी॥रजस्वलातेभईगुणखानि॥क्रानसुर
सरीजईसुजाण॥१२॥क्राईकवलपत्रतोडियो॥वहुरिकुमारीसुघणलियो॥संघतिसऋनास
मगगयो॥नदरपरसतैतायभमयो॥१३॥माताग्रभदेषीतसुतणो॥मनमोहैदुषपायोघणो
कहीवातराजाथैजाई॥पुत्रीकीनोवहुतअन्याय॥१४॥नपदूषणनेंडरिगुणराशि॥पुत्रीघरते

देहिनिकाज्ञ॥त्रिणविंदुनानमुनीगुणराव॥तिहिराघीपुत्रकरिभाव॥१५॥क्रमक्रमतासमास
नवगए॥नासकेततादेसुतभऐ॥अतिप्रसिद्धसौधरणीमांहि॥नुमपुराणमैमिथ्यानांहि
॥१६॥पुनिसोतामातापुत्रिआहि॥नुरतपिताकोसाधनजाहि॥ऐसाकहीमंजूषामाहि॥घालि
वहाईगंगामांहि॥१७॥वहिमंजूषापहुचोतहां॥करैनदात्ततपस्याजहां॥देखिमंजूषानदात्तक
मुनी॥काढिदेषिसुतमुंडीधुनी॥१८॥यहमोवीरजातलोपरभाव॥ज्ञानदिष्टिकरिज्ञान्योजाव॥
त्तककाढिनछंगणात्रियो॥जनमआपणोसफलोकियो॥१९॥दोहा॥पुत्रत्रेतदेष्योमुनी॥मन
मैदेषिविचार॥चंद्रमतिआईतहां॥पुत्रमोहिवसिधार॥२०॥नदात्तकतासोंकहै॥मनमेदेषिवि
चारि॥जोयहतेरेपुत्रहै॥तोनुमेरीनारि॥२१॥सुनीवोत्तीसाभामिनी॥वहुविधिकरिमनुहारि
देहिजनकजोतोहिमो॥तोमहीनुहारीनारि॥२२॥चौपई॥सुनिनुमेरेकलोकराइ॥नुमभुमीसु

रजा ग्यो जाइ॥ छारेसव संकामन तनी॥ स्वयनकरेपतिकुत्त कामनी॥२३॥ गयोरिषीसुर
राजापासि॥ जाचीचंद्रमतीगुणराशि॥ सुणिकरिराजाअतिसुखमयो॥ शुभपुत्रीकोदूषण
गयो॥२४॥ आनंदपूरवदईविवाह॥ मुनीवरत्यायोनिजघरताहि॥ होनहारसोइपरिहोइ॥
ताकोमेटिसकैनहीकोइ २५॥सोरठा॥ मनमथकेशरपंचत्यागैतेसुरपतिडिगै॥धीरज है
नरंच॥जदात्वकसममाहण॥२६॥त्रैगेकामकेवाण॥धीरजछोडैचतुरनर॥परमेश्वरकी
आण॥कौणजदात्वकवापडौ॥२७॥इतिश्रीधरमपरीक्षाभाषामनोहरदाससंगानेरीषंडेत्वा
लेकृतचतुर्दशमः॥परिछेद॥१४॥समापूं॥दोहा॥ चंद्रमतीसुतजाइयो॥कन्याकुमारीभ्रात
॥ज्योरेकुमारीजाणिहूं॥दुगजगणमेरीमात॥२८॥चौपई॥ऐसेवचनसुणिरघगनेम॥चाहि

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain Oriental Library, Ara

रहै द्विजवौरजेम॥ जीतेविप्रगणशास्त्रप्रमाण॥ चल्योमनोजवसिंहसमान॥२९॥ ब्रह्मोत्तो
कमिथ्यातपुराण॥ किरुद्रपरस्परजिनवरआण॥ मिथ्यामोहितकरैनविचार॥ मनवचवूडे
कालीधार॥३०॥ दोहा॥ तरुआलिंगतैकामिनी॥ जणेमहीसुतकोइ॥ मनुषपरिमतैवेत्ति
भुन॥ क्योनफलतिकहिल्योइ॥३१॥ नारिसंगजोनारिकों॥ रहैगरभइहल्योइ॥ गौसंगतैगो।
क्योंगरभ॥रह्योनदेख्योकोई॥३२॥ चौपई॥ मिटुकापभुजोमानुषजणे॥ यहतोवातमूलन
विवणे॥ कौदोषैतसात्भुभवीर॥ उपजतदेषिनाहिनधीर॥३३॥ भुऊमएउपजैसुतसार॥
तोकाहेकीजैभरतार॥ जाकेमतमेऐसीवात॥ तासोदूरिरहोनिजभ्रात॥३४॥ दोहा॥ सूरपर
सतैभामिनी॥ नानाविधिसुतदंति॥ वीजयरसतैधरतरी॥ सिभुक्योंनहिउपजंत॥३५॥ चौपई

करिवरसतैंवालकहोई॥भोजनपरसतैंत्रिपतैकोई॥क्योंकरियहजानीदद्दुरी॥कन्याश्रं
वुजदत्तिपरिधरी॥३६॥दोहा॥ध्यानजपोदादूरी॥इसोश्रचंभोमोहि॥यहतोवातवनैन।
ही॥हंपूछतहंतोहि॥३७॥चौपई॥धरमश्रनत्तरविसतीभ्रात॥कुंतीजाएसुतश्रवदात
शीत्तवंतकुंतीगुणखांनि॥ताकेनामपापदूहांनि॥३८॥ताकोदूषत्तगावेदोष॥क्योंकरिक
टिहैदुषभवपोष॥देवसंगतैंत्रियसुतहोइ॥इसोतमासोदेष्योत्रोइ॥३९॥मनुषसंगतिदै
वीधीर॥क्योनहीपुत्रजननैंहैवीर॥सर्वश्रसुचिमईस्त्रीदेह॥तासोदेवकरैसनेह॥४०॥वे
निरध्यातीश्रमत्तमत्तहीन॥कामिनीकोतनश्रधिकमत्तीन॥देवऋषीसुरपुरकीनारि॥क्यों
सेवैमनदेषिविचार॥४१॥जेनरसेवैपरकीनारि॥तेविटपुरुषकहेसंसारि॥तिणकोंत्रसै

ज्ञानांहीवीर॥वैसंसारधरैक्योंधीर॥४२॥सोरठा॥नीचरमैपरनारि॥सीलवंतनजिनि।
जत्रिया॥ज्योंवाइसमरवारि॥ठारिवीवैजलकुंभकौं॥४३॥दोहरा॥कोंणपरायाऊषणा
ऊषैमिथ्यानांहि॥करणराजनृतपतिकहौं॥ज्योजिनशासनमांहि॥४४॥चौपई॥व्यास
नपतिकेगुणहिविवेक॥मएतीनसुतपुनकीटेक॥धृतराष्टजोपंडुजानि॥तीजोविद्
रमहागुणषांनि॥४५॥एकदिवसइककारणभयो॥पंडुमहावनरमवागयो॥फिरतांवन
द्राष्यातसिपडी॥देषीषेटकामसुदडी॥४६॥देषिलेइपरीकरिओगुत्री॥सवहीमनकी
पूगीरत्री॥षेटिनदेषीकरमूंदडी॥मनमांहिअतिचिंतापडी॥४७॥फिरयोवीचतेंधीरज
नांहि॥आइढूढेखगवनमांहि॥तहिदेषिपंडुबोल्योवीर॥कहांढूढोहोगुणगंभीर॥४८॥

सुणि चित्रांग खगवोत्योएव ॥ विनती एक सुनो होदेव ॥ रतनमूंदरी मेरी मोहि ॥ गई इहां हूं सो धूंताहि ॥ ४९ ॥ निसप्रेही पंडु अद्भुत आहि ॥ षोत्ति मुद्रिका दीनी ताहि ॥ निरलोभी अरु साहससधीर ॥ तेपरवस्त्रनरषेवीर ॥ ५० दोहरा ॥ सज्जन परधन नागहै ॥ खाषज्ञतन करेइ ॥ यद्यपि आवे आपदा ॥ तऊवनपरधन लेइ ॥ ५१ ॥ छप्पै ॥ सत्यवडोसंसार सत्यतैंलक्ष्मी आवै ॥ सत्यवडोसंसार सत्यतैसवसुखपावै ॥ सत्यवडोसंसार सत्यतैगजरथहैफुनि ॥ सत्यवडोसंसार सत्यतैपावैशिवफुनि ॥ यहुजानतजीवसतमतितजोसतराषोजिनकारमै ॥ मनहरमनोहरइमकहैसत्यवडोसंसारमैं ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ लोभरहितजुतकुमर जानियो ॥ विद्याधरकेमनमानियो ॥ यासमानकोईअवरनभूप ॥ परधनत्यागीगुणग

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

एकरूप ॥५३॥ विद्याधरता हि भाषे वात ॥ नूमेरे धरमस नेही भ्रात ॥ तोसम को ऊअवर नआ
न ॥ तेरे परधन तिणं समाण ॥५४॥ वित्रषवदनको दुरवत्रगात ॥ किहिकारण कहिहमसो
वात ॥ मित्रमित्र सोगोपेनही ॥ वात आपनी मनवचसही ॥ सुनिरपंडुवा त्योनृपनंद ॥ पूर
णधर्मकर्मको कंद ॥ ज्योतुम मोसोमित्रीकरो ॥ मेरेमनकी चिंताहरो ॥५५॥ दोहा ॥ सोरीपुर
कोभूपति ॥ अधकवृष्णिसुधीर ॥ त्रिदशमांहि ज्योसुरपति ॥ राजै ज्योंनृपवीर ॥५७॥ कुंतीक
न्यातासकी ॥ कामपताकाजानि ॥ ऊर्द्धतीनविश्ववशिकरण ॥ महारूपकीषांनि ॥५८॥ चोपई
पहिलेभूपतिहमकोंदई ॥ विधिनाकामदेवनिरमई ॥ देषिरोगयतनभूपति मोहि ॥ फुनिन
देइसतभाषोंतोहि ॥५९॥ इहिकारणमैंदुरवत्रगात ॥ कहीसोचमैतोसोवात ॥ जोतुवभा

वैसो इकरो ॥ मेरे मनकी चिंता हरो ॥ ६० ॥ दोहा ॥ इहविषादमोमरमकों ॥ छेदअहिनिशिवीर ॥ ज्यों कुठारतरुमूलमैं ॥ ठेदेवहुविधिधीर ॥ ६१ ॥ इसेवचनसुनिपंडुके ॥ खगपतिवोल्योऐह ॥ सुचसाधविडंबिता ॥ मेराकलोकरेइ ॥ ६२ ॥ कामसूंदरीमेरी लेहु ॥ कामदेवको रूपधरेहु ॥ कुंतीमंदिरजाहिसुजान ॥ वाकोवहुविधिदेरतिदान ॥ ६३ ॥ गर्भवतीवहहोसीवीरि ॥ तव आपणाहीदेसीधीर ॥ चित्रागदको भाषितकियो ॥ पहिरिमुद्रिकायेवनलियो ॥ ६४ ॥ इक लोकपथोपहिलेराई ॥ भयोअधिकवलवलसोजपाई ॥ जरूमहिलमधिकहिसववात ॥ पर सपरपूछीकुशलात ॥ ६५ ॥ गंधर्वव्याहतिहांतिनकियो ॥ मनुषजनमकोलाहोलियो ॥ सपतदिवसकीयोतिनभोग ॥ रह्योगर्भताकरमसंयोग ॥ ६६ ॥ होनहारवसिकारणभयो

कुवरपांडु निजघरपैठयो॥ गरभवतीमातातसुजानि॥ नृपतिआगैकहीवखान॥६७॥ ग
जावोत्यावातविचार॥ वडोकलंककुलग्योयहुनारि॥ ऐसेसोचितवहुदिनगया॥ कुंतीक
न्याकैसुतभया॥६८॥ ग्रहदूषणतैदूरिपिठाइ॥ देवनदीमधिदियावहाइ॥ घाचिमंजू
षावहतोगयो॥ करमयोगइककारणठयो॥६९॥ सूरजनूपचंपापुरधनी॥ तिसकीम
हिमाजाइनगिणी॥ तिहिकीदृष्टिमंजूषापरी॥ देखीयहकाहैसोभरी॥७०॥ खोलीमंजूषा
देषनृप॥ बालकदेख्योरूपअनूप॥ पेषतताहिनृपतिसुखभयो॥ सोसुखजायकाः
पैवरणयो॥७१॥ घुसहोइबालकनृपगह्यो॥ मानोनिरधननिधिघटलह्यो॥ आपत्रि
याकोंसोंप्योतास॥ कहादियोयहजगजिसदास॥७२॥ अपुत्रीकरणाआदीत॥ पुत्रस

हितसुखकरैवदीत ॥ करणनावताकोनृपधस्यो ॥ निजप्रतापकरिपरतपहस्यो ॥ ७ ॥ सु
षमैकितोइकवीतोकाल ॥ भयोपरेषियहसूरजबाल ॥ करणराजपुरचंपाकरै ॥ दुर्जन
कोजधीरनधरै ॥ ७ ॥ यहसववातसुणीनृपती ॥ अंधकवृष्टीनिर्मलमती ॥ वोत्तियंडुन
पकस्योविवाह ॥ मद्रीकेमनअतिहिनछाह ॥ ७ ॥ करणकथानूंयहविधिजान ॥ थोराँही
मेकरोंवषान ॥ अंधकवृष्टिपित्ताशुभजोण ॥ तदभवपोरवशिवपुरथान ॥ ७ ॥ दशवे
धूसमूदविजैत्रेआदि ॥ रहीकीर्तिजिनभुवआछादि ॥ नेमनाथअरुकृस्नवखांन ॥ भये
तीजेमनवचजान ॥ ११ ॥ आपणशीलवंतगुणराशि ॥ कहेमनोहरमनवचभास ॥ ता
कोनावलियेअघघटै ॥ दुखदायकसववआपदहटै ॥ ७८ ॥ ताकेनावमिलैसुखसाज ॥ भव

जननमातधरमजिहाज॥ पुत्रतीनतागुणहनिधान॥ रोमैरत्नत्रयसमजान॥७९॥ प्रथ
मजधिष्टरभीमवषान॥ तीजोअरजनमनवचजान॥ पांडुमरतासकलगुणरूप॥ महा
समकितीजैनीभूप॥८०॥ ऐसीकुंतीगुणगणसार॥ ताकोंकहेपंचभरतार॥ ताकोभेदन
जाणैमूढ॥ अंधभयेमदमातेठूठ॥८१॥ दोहा॥ सकलवस्तुवांटतसुनी॥ मनवचजानों
भ्रात॥ कामिनिवांटतनासुणी॥ जैनधरमभ्रमवदात॥८२॥ चौपई॥ शीलवंतकोत्यागै
दोस॥ ताहिदुष्टकोगतियनमोष॥ भावैऐसीकरिकरिदेषि॥ आपणाकीअपहासीवेषि
॥८३॥ दोहा॥ नानाविधितपस्याकरै॥ मासमासजपवास॥ संभाषणपरपुरुषको॥ करैसक
लगुणनाश॥८४॥ चौपई॥ दूजोपुरुषकरैचंडाल॥ दूजोपुरुषकरैकलाल॥ दूजोपुरुषक

All Rights Reserved © Shri P.K. Jain
Oriental Library, Ara

रैधीवरी॥ दूजोकरइत्याहहिहरी॥ ८५॥ दूजोपुरुषकरैडुमडी॥ दूजोपुरुषकरैचूहडी॥ भूत्ते वंशकोकन्याहोइ॥ सोकोंपुरुषकरैदुहदार॥ ८६॥ पारासरथोराजावीर॥ योजनगंधान्॥ पसुतथीर॥ तिनकोव्याससुतगुणगंभीर॥ भवदधिमायरजतस्योनीर॥ ८७॥ योजनगं॰ धाजीत्वनिधान॥ भुवप्रसिद्धगुणगणकीषानि॥ ताकीकथाओरसीकही॥ तुमहीवा तसाचीनहीत्वही॥ ८८॥ दोहा॥ गंधारीधृतराष्टके॥ जेनधरमआधीन॥ दुरयोधनत्ते पुत्रसों॥ ताकेभएप्रवीण॥ ८९॥ कुंतीमद्रीपंचसुत॥ मानोपंचाचार॥ आपणाभव्यआरूप व्यको॥ वंछितसुखदातार॥ ९०॥ चौपई॥ करणआदिगंधारीवात्त॥ सेवैजरासिंधभू पात्त॥ पांडककेशवसेवाकरै॥ भातिभातिकीशोभाधरै॥ ९१॥ जाएसिंधमासोरणमोहि

All rights Reserved ©Pandit D.K. Jain

॥१३१॥ केशववल्लभदुराजकरंहि॥तीनषंडकेभूपतिभए॥तासोंभुवपतिसवकंपए॥९२॥कुंती
सुततपकरिगुणषांनि॥काटिकर्मपहुंचेनिर्वाण॥माद्रीसुततपकरिवरवीर॥सरवारथ
सिद्धपहुचेधीर॥९३॥ सवईया ३१॥ गंधारीसुपुत्रशतदुरयोधनआदित्यैकैसेयो।
जिनशासनपुरण्यवीजवोयोहै॥ तपस्याकरिकैफुनिमिथ्यातकोनासकस्योसम्यकत
पायतिनसंसारघटायोहै॥ अंतिकाल्लेसन्यासमकलनपाधिछारिअंतरमुदिष्टिरषि
शुद्धभावभायोहै॥ आतमकरमअनुसारकविराजकहैजिनकीदुहाईतिहदेवपदपायोहै
॥९४॥ चौपई इहप्रकारजिनशासनजानि॥व्यासअन्यथाकहैवषान॥मूरखभेदनजानै।
कोई॥दषादेषीचालैलोइ॥९५॥इकवांभणगंगाजलतीर॥नाजनगाडोगुणगंभीर॥

परिरेतपुंजवहुकियो॥ गंगामधिस्नानपैठियो॥९५॥सकितापुंजदेषिसवकोई॥करैपुंज।
सवमुरखलोइ॥ निकस्योवांभणाजलमैन्हाइ॥ देष्यापुंजकोटित्यछिआहि॥९७॥वांभ।
णसोचकरैमनमांहि॥ आतमपुंजकहुदीसैनांहि॥ पश्चातापकरैदुषघणो॥ जाणिकम
योवज्रकोहण्यो॥९९॥जगमूरखनेंयहगुणभयो॥मेरोइहांशुभभाजनगयो॥एकमेडकी
गैलअसेस॥पडैकूपमधिजाणिविशेस॥९९॥दोहा॥देषादेषीजगचलै॥मेटनस।
मझैकोइ॥गैलचलैतोसुषडो॥वीधावांधैलोइ॥६००॥मिथ्यातमलोचनचतुर॥ढाइरहैव
हुभाइ॥परमपंथदेषैनही॥जानोमनवचकाय॥१॥सोरठा॥देषोमनमैजोइ॥अविचारीस
वषलकहै॥लषकोडिनमैलोइ॥जाताकोइकपुरुषहै॥२॥चौपई॥प्रीतमदेषोलोकपुरा।

ए॥करीपरीष्यागहोसुजाए॥साचहोइसोईपवगहो॥झूटपत्तमनवचकरिजहो।३।
ओरपुराणसुणेहोवीर॥मानोमनवचसाहसधीर॥रकतवसनधारीगुणवंत॥पंचमसा
स्त्रादिठमतिजंति।४।वेगिनिशानवजावैधाइ॥कनकसिहासनवैठोजाइ॥सुणिमेरी
दुजआएवेग॥कहेहांक्यातेरोनेग।५।रकतवस्त्रतुमधारैवीर॥कोणवादकरस्योगुण
धीर॥वोल्योरकतपटपहरैचीर॥वादनजानोंअतिगंभीर॥६॥देषिअपूरवकंचन
थान॥वैठोमाषिनहीवादगुमान॥वालेदुजगणमधुरीवाणि॥कोणकाजआयोति
हथान।७।रकतपटीवोल्यासुनिधीर॥कहंकथाअचिरजगुणधीर॥पणिहुंतुमतैंउ
रपोल्याइ॥तुमतैनहीविवेकीकोइ॥८॥सुणिवोल्योपृथ्वीसुरवीर॥न्यायवंतहमगुण

गंभीर ॥ श्रवनीसुरकैवचनसुनेइ ॥ रकतधरेतबउत्तरदेइ ॥ ए ॥ बोधमतीगुरुहमरेज्ञा
न ॥ महाशीलधरगुणकीषांनि ॥ हमगुरुकपडाधोवनगए ॥ कपडाधोइसुकावण
दए ॥ १० ॥ करमयोगकारणभाइया ॥ वेश्यागात्रतहांश्राइया ॥ थूलशरीरभयंकरजांण ॥
देषितांहि डरपैगुणषान ॥ ११ ॥ रतपुंजइकश्रद्भुतचीर ॥ तापरधाइचढैदोजधीर ॥ दुष्टपु
जनिलियोजठाय ॥ द्वादशजोयननाष्योजाय ॥ १२ ॥ हमभषणकोउद्यमकियो ॥ चीत्र
सिवानतहांश्राइयो ॥ स्यालभजेदोऊतिहचाहि ॥ डरमेभोजनभावैकाहि ॥ १३ ॥ डरतजि
हमजुतिहांथेषडा ॥ एकनगरश्रद्भुतदिढपश्रा ॥ करेसोचमनमांहिश्रज्ञेश ॥ रह्योदूरि
नुविहमरोदेश ॥ १४ ॥ इहाहमकोईपिछानैनांहि ॥ नहीदामफुनिगठडीमांहि ॥ तहांदुख

वडुतेरो मल्यो॥ कछुनवसाइचुपहोइरह्यो॥१५॥दोहा॥ देशअपूरवलोगविड॥मानकी
जैआत्ति॥ काहूकीदोइलाकडी॥काहूकीदोइगात्ति॥१६॥चौपई॥ तातेकुलगततपस्याक
रै॥रागदोषनविमनमैधरै॥दोईलोकसुखसाधिकभाइ॥कहीतपस्यामनवचकाय॥
१७॥दोहा॥ रकतवसनहमपैहुतै॥पहित्यहीसुणिवीर॥भदहोइजघमकरो॥मनवचजा
न्योधीर॥१८॥यहघरअनरथषांनिहै॥महानरकोवास॥दानपुण्यपूजाविना॥कहै।
मनोहरदास॥१९॥सवयाइकतीसा॥ कामकीकरत्तविकरत्तभात्तजात्तअघरकुरा।
लदोकुलोचनमगनहै॥दृटिरोमपरैकहूंअटकैनवासघरअैसोजैसोमानोनिर्मलग
गनहै॥लोभकेनुदैतैंहाइहाइकरैआठौजाम॥औरहूंअनेकतामैंओगुणअनेकहै॥करि

कैलराईपूतरोजषेचैरावत्त कोंयाविधिअज्ञानीपाइभोजा मैमगनहै।२०। कामरूपगुनि
भूपगुणरूपदयासिंधुरोगतैरहितताकोंसुपनैंनदुखहै॥ कामिनीकवलमैनीपिकवै
नीसुखदैनीतासोंरतिमानैजीवदेवनकेसुखहै॥ अरबपरबकछुदरबकोलेषानाहिक
हालोबडाईकरोपुन्यजाकैरूषहै॥ कहतमनोहरजुयामैकछुफेरअैसीविधिज्ञानीपाइभो नांहि
गतैंविमुखहै।२१। चंचलचपलबाललोचनविशालबालमालमैविराजैरतिभूषणसवारै
है॥ अतीहीकठिनकुचकरिकैकरमशुभअधरकपोलदेषेकामदुष्टारेहै॥ मोतीनरमा।
लकटिकोमलमृणालतालखाजतमरालचालअैसेपोवधारेहै॥ शुद्धशीलप्रतिपालया।
तैंकोकरैनिहालअैसीत्रियापाइकोअज्ञानवंतेठारेहै।२१। नैककजासकोटिवासकोंनिरा

सकरैमुखकोनजासदेषिसोचपरैचंदहै॥ पानपिकजाहिग्रीवादीसनश्रमानतहैछविता।
हिदेषिदेषिरतिपाइवेंदहै॥ चरणशरणगतिसीषवेकोआयोहंसनैकक्षाचितौनीसेतीको।
टिकामकंदहै॥ शीलगुणषानतापैआनसषीकीजैदानश्रैसीत्रियापाइज्ञानीआपणपोनिंद
है।२२। कामकीश्रषनिसुखदामकीगुणहारीवामकीबडाईतनसुंदरसुवासहै॥ आननश्र
मलसोमकिधोंचरआनंदकोंदज्ञानवसनमानोश्रमृतनिवासहै॥ नैनकीकोरकांननर
लोविराजमानताकैआगेवारिजकीशोभाश्रजनासहै॥ छारिछारिकिन्नरविमानश्रावैदे
षनकोंश्रैसीत्रियापाइज्ञानीआपननदासहै।२३। वैठिकैविधातापुनिकोटिकनपाइकरै।
तौनसवारीजाइश्रैसीत्रियसुखवत्ती॥ कंचनवरणमनहरणमुहुरहास्तीताकैआगैरति।

मानोंफिरतकीधोबावली॥ विद्याकेप्रमादमेंमगनरहेआठोजामतापरिसुरेंद्रत्रियाकीजै
नवछावली॥ कहांलोंकरोवडाईठहोरतिसुखदाईऐसीनारीज्ञानीपाइसेवैनविआवली
२४॥ छप्पयछंद॥ तामहिनागनिनारिग्रसतितनमनधनप्राणहि॥ पुत्रमृपरिपुतहांप्र
गटलूटतधनज्ञानही॥ तहांस्वारथवसुबंधुसजनस्त्रीयोसवचाहे॥ कृमिजिमकाटहि
खोहिअंतसाथनिरवाहे॥ भगवंतभजनजानेनछिनहाइहाइदिनप्रतिरहे॥ अति
मूर्षनित्यजसमझेनही ऐसेघरसोघरकहे॥२५॥दोहा॥ ऐसेघरकोजाणिके॥तिहिमधि
वसैवखील॥ घरत्यागनकोपंडिता रंचकरैनढील॥२६॥चौपई॥ तातैंहममनमोहिवि
चार॥ गहीतपस्याबुधिमनधार॥ बहुतपुन्यहमकोंतवभयो॥ सांचवातहमतुमसोंकह्यो

२७॥दोहा॥प्रथमविभूतिजुपाइकै॥ज्ञानीत्याजैधीर॥हमजुकुवारैनिरधनी॥क्योंनविछो
डैवीर॥२८॥सोरठा॥जोरेकुवारहोइ॥विधिनमिलैजोव्याहकी॥स्त्रीजोसंयमसोइ॥कहैमनो
हरदासयों॥२९॥परणपाकरैकलाप॥कुंवरकुवारहीभला॥रातिदिवससंताप॥जैकोआ
वैकरकसा॥३०॥चौपई॥सुणिवोल्योविद्याधरनाद॥परमतषंडनवुद्धिआगाध॥दोषपराया
देषैलोइ॥आपनोदोषनजानैकोय॥३३॥दोहा॥रजनीमंडनकास्त्रीमा॥ताहिनदेषैलोई
३४॥सोरठा॥आपनाघरकीलाइ॥ताहिनदेषैमुगधनर॥परघरदीपवलाइ॥ताकोदेषैदुष्ट
वुद्धि॥३५॥तुमपुराणमेंवात॥ऐसीजोहोइमाहणा॥तोतुममानोभ्रात॥मछरतजिहमसों।
कहे॥३६॥हमपुराणमेवीर॥जोऐसोअनर्थहै॥तोअसत्तकेपीर॥कहोछारिसंकसकल

३७। दोहा॥ जिनवाक्यादिक ध्यौतबुद्धि॥ खगपति नंदसुजाण॥ वोल्योवात पुराणकी॥ क
होसुनोदेकान॥३८॥ चोपई॥ रामचंदररवरदूषणआदि॥ मारिसुभटकीयेसववादि॥ रण
संग्रामविषेतसुवीर॥ कोइनतिष्ठ्योसाहसधीर ३९॥ सवयाइकतीसा॥ गहिकरिवारिध
सेरामचंदरनिचटचटअरिकाटैहैचटाकदे॥ मुंडकेगिरतधरधीरजनधरैकोऊपटप
टमहिमारेहैपटाकदे॥ लोहूनकेपानचरेयोगिनीसकलमिलिगटगटताहिपीवत
गटाकदे॥ कहेकविराजतहांसीसदेखिआयोशिवझटझटधरैजोरमेझटाकदै॥४०॥
चोपई॥ इसप्रकाररघसकुलदल्यो॥ मूढमोरिकैठाढोरल्यो॥ एकाकीसीताकोंजानि॥ रा
वनकुमतिनपाईआनि॥४१॥ हेममयइकमृगलोकीयोरामचंदकुंदेषनदियो॥ देखिराम

तापाछैगयो॥ उनपाषंडीपाषंडठयो॥४२॥सीताहरीझूठकछुनांहि॥तेरणषीपापीघरमां
हि॥रामआइकरिसीताथान॥नहीसीयतहांगुणकीखांनि॥४३॥पश्चातापकरैवहुभाइ॥बू
डोलोभवसिमनवचकाय॥ऐसोज्ञानलोभपरिहरे॥सत्तवडोजगमनमेधरे॥४४॥छ
पयछंद॥लोभवंध्योगजराजलोभफुनिकेशरियकस्यो॥लोभभ्रमरदुःखसहेलोभझष
धीवरजकस्यो॥लोभरामदुखसह्योकनकमृगपाछेधायो॥लोभविटंव्योकान्हपतिव
त्रज्ञाचनआयो॥बोलोभराबरणगये॥लोभदज्ञाननपंडियो॥मतिकरेलोभमनोहर
कहे॥लोभसकलजगडंडियो॥४५॥चौपई॥होइसचेतरामचंद्रवीर॥सकलवोलायोसाहस
धीर॥सुग्रीवादिअरूपवनूकुमार॥सीताहरणकलोव्योहार॥४६॥हनवतताससगवेषनगयो

रावणा घरिसो धो सोभयो॥ आइकहीरघुपतिसोंवात॥रावणाथा नकिसीतामात॥ध्रु॥रघु
पतिवचनकहेगरवाइ॥वोधोसागरछिनमेंजाइ॥रघुपतिकेवचसीसचढाइ॥चल्योका
लसमकपिकुलराइ॥ध्रु॥हनवंतवोल्योवचनरसाल॥दूराकरोंलंकषयकाल॥रघु
पतिकीसीतालेआई॥रावणनामनिकंधोजाय॥४९॥सवयाइकतीसा॥आज्ञादूतीनाथ
जूकीदशशिरकाटि॥२दशमुखमेंछि२वोरन्योगटकतो॥सकलनृपतिजीतिदोहिकोरि
लेकासवसायउलंघिमोहिकोजनआटकतो॥अंगदसुग्रीवरामचंदलक्षमणजोरता
कोसन्नादेतमेरेमननाअटकतो॥हाथहूनलावूंताहिलेकाकंतिहारीसो॥लांगूरसोंल
पेटिकेसुरमेरसोंपटकतो५०॥चौपई॥हनूमानकोसुनिभुमसाद॥एमचंदपायोआह।

स्वाद॥ अज्ञादीनी सुनिवरवीर॥ सायरवांधो साहसधीर ५१॥ दोहा॥ एक एक वानर मिले
लेले पंच पहार॥ लीलामय वांध्यो उदधि॥ षेदन भयो खगार॥५२॥ सोरठा॥ रघुपति तणो
पुराण॥ वात कहत हम सुणीहे॥ वाल्मीक मुनि जानि॥ सत्तहे कजु असत्तहे॥५३॥ चौपई
ताको हमसों ओर कहो॥ मेरो मन को संसो दहो॥ वोले द्विज गुण सति यहु आइ॥ कोपै मि
तनि षेधी जाइ॥५४॥ दिनपति तेज पाण करिवीर॥ कहि को टांक साहसधीर॥ रक्तपटी।
वोल्यो गुण माल॥ मिथ्या मति जु हती षण साल॥५५॥ दोहा॥ एक २ वंदर पंच नग॥ लेचाले
पुछकाय॥ मोजी दर धुरथूल वपु॥ थलिटे रैन उठाइ॥५६॥ सोरठा॥ असंभाव्य तुम वात॥ ताकों
तो सांची करो॥ मेरी पर सिद्ध वात॥ ताकों तुम झूठी कहो॥५७॥ दिढाधर मपुराण॥ मिथ्यारस

स्योरमिरह्यो॥ तिनसों कहा कहांन॥ पैडोपकरणआपणो॥५८॥ झूठोमांहेवास एकपलक
रहणोनही॥ कहैमनोहरदास॥ जोसुखचाहोजुगमभव॥५९॥ दोहा॥ क्योंकरिछूटैप्रीत।
मा॥ मिथ्यातीकोसाथ॥ हस्तवैहस्तवैकाठिजै॥ जिह्वातनैतेहाथ॥६०॥ चौपई॥ चल्योवेट
तिनमुखदेषह॥ जयविटताकरिभूषितदेह॥ रक्तवसनछांडिकहांकरै॥ सेनांवरकों।
वाणांधरैं॥६१॥ मनोवेगवोल्योसुणिवीर॥ पवनवेगतोसाहसधीर॥ सुणोमित्रमिथ्या
तपुराण॥ सर्वझूठमयजिनवरआण॥६२॥ सोरठा॥ अहोजगतकेषेल॥ सबझूठेमिथ्यान
ही॥ मिकतापीलततेल॥ निकस्योसुण्योनप्रीतमा॥६३॥ चौपई॥ वैरणसवत्सवंतप्रवीण
वानरतिरयंचवलकरिहीन॥ वानरराक्षससकैनमारि॥ मनमेदेषोमित्रविचार॥६४॥

जिरपर चंड्व डेम्रतिभार॥ क्यों करि वो ऊरत्यो सिर धार॥ क्यों करि नदधि मांहि वे तिरया
उतरि गमरावण को भिर ६५॥ सोरठा॥ ताके कोटि तेतीस॥ सुरवंदी घां नैपरै॥ त्रैसो
रावण ईस॥ क्यों करि मास्यो राम नै॥ ६६॥ चौपई॥ सववेदी हर जानो वीर॥ क्यों रावण व।
रदीयो धीर॥ तातै देवदिए वंदि म्रानि॥ लोक उपद्रव की नों जान॥ ६७॥ सोरठा॥ जत्व
मां हैघत हो॥ कोऊ इक कारण पाइके॥ सति गुरण न ही त्यो इ॥ मिथ्याती कत्व पत।
जिके॥ ६८॥ सो षामृग न ही होइ॥ हनूमान सुग्रीव त्यों॥ रघस ना ही प्रीत मा॥ ६९॥ विचार
तन मंडार॥ जैन धरम रतन जही॥ पात्रै कुत्र म्राचार॥ जैसो जिन को योग्य है॥ ७०॥ दोहा
सा षामृग विद्या संजुत॥ ध्वजा चिह्न कपी जानि॥ तातैं वांदर कहत है॥ हनू म्रा गुरण।

षांनि॥७१॥ए षसचिहनधजाविषै॥ए षसि विद्यातास॥ साधी ए षसतासुनै॥कहै मनो
हरदास॥७२॥चौपई॥गोतमस्वामी इहविधिकही॥श्रेणिकआगेमनवचसही॥वार
वारमित्रसमझाइ॥षष्टमशास्त्रायहुचोजाइ॥७३॥वहुरिनिशाणवजाएधाइ॥कणक
सिंघासनवैठोजाय॥सुणिभेरीदुजआएधने॥क्रोधपुंजकछुकहतनवने॥७४॥कोगु
रुकोंणवादनुमपढै॥कनकसिंहासनकिहिविधिचढै॥सुणिवोल्योविद्याधरवीर
नोहिहमारेगुरुफुनिधीर॥७५॥वादनामहमजानैनोहि॥कोंकरिवादकरैनुममों
हि॥सुनिभूमीसुरउत्तरदियो॥गुरुविनतपतुमकोंकरियो॥७६॥योवनवयनुम
पावनदेह कोंकरिछाड्योआपनोजेह॥सुणिसेतांवरवोल्योएव॥विनतीएकसुणोहो

देव ॥७॥ कर्मयोग इककारण भया ॥ गाइ चरावण दोनों गया ॥ गाइ मेल्हि दीनी वनमां
हि ॥ हम सूते इक तरु की छांहि ॥८॥ एक भाइ निद्रा वसि भया ॥ भूष लगे तिहुं जागयो
उठ्यो उहां सों आगे षडो ॥ कैथ रूष इक नजरे पडो ॥९॥ दुरगे हृदे ध्यान सुसांरि ॥
मन मां है मैं कसो विचार ॥ फल ऊचे त्यागे असमान ॥ भूषे मेरे निकसे प्राण ॥१०॥
तरु तल गयो भूष अति घणी ॥ कर्मयोग इक सुधि ऊपनी ॥ सिर आपणो ढेढ
करि धीर ॥ गहि रचल्यायो तरु पर वीर ॥११॥ जाइ कपिथ सिर त्याग्यो षान ॥ भई त्रि
पति मेरे दुख प्राण ॥ उदर सकल परि पूरण भयो ॥ मेरे मन को संसय गयो ॥१२॥ फु
नि सिर धड सों त्यागो बीर ॥ भयो निचिंत हुसाहस धीर ॥ उहां से ती हूं आयो जहां ॥

भाईतुम तिसमूतोतहां॥८३॥ जो वेगचुमसाहसधीर॥ गोधनकहां चरचुहैवीर॥
वोल्योभाईमनवचकाइ॥ अवहीइहां चरतहीगाई॥८४॥ गाईनपाईशंकाथई॥ अ
होविधाताकैसीभई॥ दोऊभ्राताभतोविचार॥ जहांसोनिकसेइरजरधार॥८५॥
दोनोभाईयोवनवेश॥ आइरपडेविराणेदेश॥ नीषमांगत्तेवहुतत्वज्ञाहि॥ काहू
सेतिपरचोनाहि॥८५॥ सोरठा॥ नीषनमांगीजाइ॥ विनाभेषइहिकारमै॥ तातैं
मनवचकाय॥ सेतांवरवाणेोधस्यो॥८५॥ चौपई॥ यहवाणेकोकारण जानि॥ थोरा
हीभेकस्योवषान॥ त्रमतत्रमतहमसगत्तामही॥ कमैयोगइहां आयेसही॥८७॥ अ
सेवचनसुणेभूदेव॥ षित्तषित्ताइकरिवोत्तेएव॥ नूंवृतधारीसुंदरधीर॥ इस्योझूठकौं

नाथोवीर॥८८॥सांचसांचजाणीमनमांहि॥नरकजातचुरएवैनांहि॥सुणिवोत्यौसे।
तावरसाध॥परमतजीतनवुद्धिअगाध॥८९॥सोरठा॥वाल्मीकजुपुराण॥इसीवा
तएगएगविषै॥होइमहागुणखांनि॥तौतुममानोसतकरि॥९०॥वाल्मीककृत दो०
पुराणमै॥इसीवातजोहोइ॥तोहममानहिमानतनि॥सुनिरेमूरखलोइ॥९१॥चौ
पई॥क्षितिदेवाकेवचनसुनइ॥सोतावरतिनउत्तरदेइ॥वीसभुजादशसुंदरसी
स॥रावणनामपहुमकोईस॥९२॥सोनितसिवकीसेवाकरै॥एकएकशिवहिरदैधरै
मनवांछितवरमांगेसही॥महादेवतावरदेनही॥९३॥रावणकरिकैअतिधी
र॥काटिचढाएनवशिरवीर॥नसाकाटिकरतांतिवनाइ॥हाथलाइकरिवी

नवजाइ॥९४॥गगछत्तीसवजाएवीर निरतिकरैअतिसाहसधीर॥ शिवरावण
परिवहुतरिझाय॥मनवंछितवरदीनोजाई॥९५॥दोहा॥परीश्रवनसीगीतध्व
नि॥लोचनदियेनघारि॥शिवधीरजतादेषिकरि॥दीयोसुवरसवीचार॥९६॥चौ
पई॥शिवसुखदाताआनंदभरे॥झमिझमिनवसिरधडपरधरे॥धरतासि।
रधरसोंत्यागियो॥गौरीपतिजवपरसनभयो॥९७॥ऐसीकथाहैकिनहीकहो॥
मेरेमनकोसंसैदहो॥वोलेवोभणमधुरीवाणि॥कथासांचियहनिश्चेजांनि॥९
८॥दोहा॥सुणिवचवोल्योषगपती॥समझैसकलविवेक॥रावणकेनवसिरल
गे॥सोशिरलगैनएक॥९९॥नषसिषलोंऊठीसकल॥कथासांचनिजसोइ॥नषसम

झूठीपार की॥ वातझूठसोखोइ॥७००॥ हरिमिरनवरावणातणे॥ जोडेकरिवहुधीर॥
निजलिंगछेद्योतापसी॥ कौनविजोडेवीर॥१॥ चौपई॥ वहुतवीर्यशिवकेजवभ।
यो॥तीनोलोकनपद्रवथयो॥ हरसवव्यापीमिथ्यानांहि॥ लिंगजगैसवकेभुवमां
हि॥२॥सवमुनिवरहोलेविलखांति॥ इंद्रियजगीपडैनहीशांति॥ तवसवमुनिवरक
रैविचार॥ हमशिववीरेकासीधार॥३॥ इंद्रीहमकोचैननदेइ॥ इहविधिपश्चातापक
रेइ॥ सवतपसीमिलिमतोजुपाइ॥ पकिरिलिंगजुमछेदोजाइ॥४॥ दोहा॥ मनमेंत्रै
सीजुपजी॥ सवसुखदीजैछारि॥ कैसेंकरितपकीजिये॥ इंद्रियमारैमारि॥५॥ चौपई॥
तपसीमनमेंमतोविचार॥ हरलिंगछेद्योधीरजधारि॥ सवकीइंद्रीढीलीपरी॥

मानोगिरसिरितानुतरी॥६॥ हरमुखनुपररत्नोनराग॥ जैसैमणिविनदीसैनाग
॥शिवकोलिंगतवतैंगत्तमांहि॥ वाधैफीरैझूठकछुनांहि॥७॥ निजआपदासकोनहि
टारि॥ सोननिवारैपरकीधारि॥ तासोनुमजुकहनहोदेव॥ फिरवाकीनुमकरिहोसे
व॥८॥सोरठा॥ समझिदेखिमनमांझ॥ वीरजतोलिंगसंगिगयो॥ रहीगौरजावांझ॥ त
वतैंपापीकरमसों॥९॥दोहा॥ परदुखकैसैदरि डै॥ निजदुषभरैअसेस॥ आपणवेटा
मांगणे॥ वारषडैदरवेश १०॥चौपई॥ एककिसाणवसैभुवमांहि॥ गांठिवहुतधनमि
थ्यानांहि॥ ताकैसंततिसिरहीभयो॥ मातपिताकोअचिरजभयो॥११॥सिरवोल्योजुपि
तातुमसुनो॥ मेरैसदनकहोनुमततनो॥ वोल्योपितातापरिकरिनेह॥ताघरघरि

णीता को गेह॥१२॥ दोहा॥ दानधरमयतनक्षिमाक्षित॥ महाशीलकीषांनि॥ जाघर
त्रैसीभामिनिसोर्गिरहीजानि॥१३॥ इनगुणसेतीरहितहोइ॥ महाक्रोधयतनारि॥
सोघरमनवचजाणिज्यों॥ वारहकोराजुजार॥१४॥ चौपई॥ पितावचनसुणिभयोअधी
र॥ नैनवहैज्यौंभादोनीर॥ मेरोवचनपितानरधारि॥ कुवारपणाकोदोषनिवारि॥१५॥
कहैपितावहुविनैकरेइ॥ अहोपुत्रकोकन्यादेह॥ जवलगसुतहमतनीवसाई॥तवल
गिकरिहंवहुतनपाइ॥१६॥करमयोगपइककारणभयो॥ धनकांचीएकनरतहांगयो
देईदामतिसकियोविवाह॥ भयोहरषअतिअंगनरमांहि॥१७॥ दोहा॥ जोकछुहोइसु
दामतैं॥ दामविनानहिकोहोइ॥ हाहाकियेनडोकरां॥ परणावैनहिकोई॥१८॥ चौपई॥

कितेइकदिनसुखसेतीगया ॥ करमयोगइककारणभया ॥ पिताकहौतुमघरतै
जाहु ॥ पुत्रकमाइआपनोषाहु ॥ १९ ॥ इसेपितावचकानधरेइ ॥ दधिमुखपछाता
पकरेई ॥ मातातातसुतभाईजोइ ॥ स्वारथआपकरैसवकोइ ॥ २० ॥ दोहा ॥ परदुषिदु
खीयाकोनही ॥ मनमेदषोजोई ॥ घानलगैजिहिआंगुली ॥ सोईदषइलोइ २१
चौपई ॥ दधिमुखकहैतरणिसोवात ॥ चलोजहांतहांश्रुनभ्रात ॥ पितादियो
हमकोआदेश ॥ अवैरहैतोहोईकलेश ॥ २२ ॥ सवैया २३ वाघनकेवनमेवसियेजल
मैकरबीठकोलीजै ॥ पीजिएघोलहलाहलहालदेसोपिनिकेमुखआगुरीदीजै
ऐसेएभूतेपरेतनकेसंग ॥ तौनविजीवमैदुषधरीजै ॥ ग्रंथविनासुनभाईकुटंवमैं

एकघडीनविजाईवसीजै॥२३॥ सवईयाइकतीसा॥ मित्रकीसगाईनसगाईजातिहूंकीनाहि
नसगाईकछुवहेनकेनामकी॥ सासूकीसगाईनसगाईवहूनेजूहूकीवहिनकसगाईनस
गाईएकजामकी॥ मामाकीसगाईनसगाईकछुभाणेजकीसगेसगाईनसगाईएकगामकी
कोऊनसगाईविनास्वारथजगतमांहिरहीहेसगाईकलिमांहिएकदामकी॥२४॥ चौपई॥
श्रवकामिनीयहमानोशीष॥ सेदेशिचोरीपरदेशभीष॥ वचनरमणकोसिरपरिलियो
सुरसरेगेहकोपाणीदियो॥२५॥ सरपरएकऊंडलौलेइ॥ दधिमुखथाप्योजतनकरेइ॥ द
धिमुखकोंसिरऊपरधरै॥ घरघरवहुविधिभिष्याकरै॥२६॥ देषितमासोपुरवरनारि॥ श्रा
पणपौनिंदेसंसारि॥ सीलवंतत्रियदेषिएव॥ करैविकलनरकीवहुसेव॥२७॥ यासमकामिनी

की

कोजुनही॥तीनलोकजोटूटैसही॥पतिभगतीपतिसेवाकरै॥और पुरुषकोजुनचितध
रै॥२८॥सोरठा॥यासमयाकीनारि॥स्वारथपूज्योहीसगी॥मनमैदेखिविचारि।यासतयग
कीकामिनी॥२९॥दोहा॥ पतिवरतावरदुवस्त्री॥कारीकुचितकुरूप॥ पतिवरताकेनप।
रै॥वारोकोटिसरूप॥३०॥चौपई॥पतिवरतापरगटभूमोहि॥एमायएयहुमिथ्यानाहि॥भ
मतभ्रमतसवधरणीपाइ॥नगरजैनीपचेआइ॥३१॥सोरठा॥दधिमुखवनमेंराषि।आ
पणपुरमोहिगई॥परमेश्वरकीसाष॥इतनैइककारणभया॥३२॥चौपई॥आएजुवारीजस
वनमोहि॥जूवाषेलनमिथ्यानोहि॥कियोलोभपरस्परतिहां॥भईलडाईअद्भुतजहां॥३३॥
एकलेइकरिएककोसीस॥काट्योअसिकरिविस्वावीस॥करमेयोगइककारणभयो॥दधि

मुखशिरवहधडत्यगगयो।३४। भयोपुरुषअतिसुंदरदेह॥ताऊपरिअतिकरैसनेह॥पुन्य।
योगआयोघरएह॥जाणिकदूधैवूठामेह।३५। दोहा॥ सतवंती कोसतफल्यो॥मनमेदेषि
विचार॥विकलपुरुषसवदेषतां॥भयोकाममनुहारि।३६। वातवनीदिनपाधरे॥वरनसकै
कोइजोर॥घरघोडीवेटाजणे॥लाडुमारैचोर ३७। चौपई वातसांच कैझूठीकहो॥मेरेमनको
संसोदहो॥दुजवोल्यायहसांचीआहि॥कायैमिननिषेधीजाहि।३८। अनधडसेनीअनशिर दो०
लग्यो॥संधिविनाअद्भुतहोईपग्यो॥सोतोसांचकहोनुमन्नात॥मेरेसीरकीझूठीवात।३९। उर
तकद्यौअरुचुरतही॥त्यागोनिजधडआइ॥सोझूठीयहसांचहै॥अहोत्यगीतुमवाइ।४०। चौ०
॥रावणमार्योअंगदराइ॥करैदोइदलमनेवचकोय॥हनूमानजोद्यौतिहिवार॥वहुरित्यद्यौ
सुरनासिरिसार।४१। दानवइंदकरीशिवसेव॥पुत्रजाचियोतजिआहमेव॥जमयापतिपर

सनमयो ताहि॥ दियो मन्त्र समर्पि इ मन वच जा हि॥ ५२॥ ता दानव कै दोइ त्रिय थाइ॥ पंडी वो॥
टि दई घरि आई॥ दोन्यो जोग रह्यो अधान॥ दोन्यो जनेषंड पर धान॥ ५३॥ ता हि देषि अ
द्भुत दुख भया॥ दो नों घर वाहर डारिया॥ वह समय वि द्वि आगम थया॥ दो ऊषंड जोडि करि
गया॥ ५४॥ नांव जरासिंध ता को दियो॥ पूरव पुन्य उदै तसु भयो॥ तीन षंड भोगी भूपाल॥ सज्जन
सेवक दुर्जन शाल॥ ५५॥ इन के षंड जुडे दोउ धीर॥ मो सिर क्यों न जुडै सुग्रीव॥ मैं तो वात सों
च तुम कही॥ तुम हू झूठ करि मानी सही॥ ५६॥ दोहा॥ अपनी झूठी वात॥ ता को तुम सांची॥
कहो॥ पर की सांची न्यात॥ वात ताही झूठी कहो॥ ५७॥ सवईया ३१॥ सव जग टोहि देष्यो को
ऊ न बुझावै आग दौडि दौडि मूठ डारै वे लती मी फूल सा॥ अपनो अंधारो ताहि वालि कै न जा

रेकरैपरजजयारेकरकुंच्योलाइमूलसा॥ आपणेसदनछारित्रिएकाजिपापपुंजदुष्ट
नकीएजिसोसैतिरयचघोसत्ता॥परछिद्रदेणासमदेषैमूढनानाभांतिनिजछिद्रांके।
दोहा दीठतामैमावैमूसत्ता ४८ स्वामीकार्त्तिगमूंडठह॥जोडेवहुविधिसार॥सोदेवनिसिरदेवहै
जानैसवषुनकार।४९।सतवाततेरीसकत्त॥अरेसेतपटधीर॥मूर्खषातैफलजदर।कौंपू
रणमयोवीर।५०॥ छंदजाती॥सेतावरधारीवचनविचारीवाक्योतिनसोमनुहारी॥भ्रात।
तातदादापडदादीवालवहाएकरिठारी।तिननावनगावनठौहरभूत्रिगपतिनभुइसा।
री॥कागतिकोंभोजनकियेंत्रिपतैंकहेमूढजामतकारी।५१।दोहा॥ वांभणकोभोजन
दियेपित्रतहैरसताहि॥त्रैसीसुनिहिरदेधरै।तेमूरखसिरआहि।५२॥मूवत्रिपतैहोतहै।भो

जनदियातोहि॥वुज्योदीपफुनितेलसो॥वत्यैसतिकहैमोहि।५३॥चौपई।षटरसभोजन
भुजैआप॥वैठ्योटकटकदेषेवाप॥वाकोउदरनैकनहीभरै॥यदपिविधानुपरिक
रै।५४॥जीवतिसिरठोकैपैजार॥षरचनमित्यैदामसगार॥फाटीधातीटुटीषाट।पड्यो
पोलिविचवारहवाट।५५॥वासोकूस्योभोजनषाइ॥सुनषासिरमेदेदेजाई॥जीवतऐसी।
सुखभोगवे॥मूवेकहातेतनयोषवे।५६॥दोहा॥जैसेवूढीभैसिकीवातनपूछेकोई॥तैसें
जरटामाणसो॥आदरनकरैकोइ।५७॥जीवतमातपितानहीमानै॥तिहकोधर्मअतिषै
॥मूवापाछेमुंडमुडावै॥गदहेडीकेलेषै।५८॥सोरठा॥मूवोविमाणवणाई॥मूडनुघाडेस।
कलजन॥जीवतसारनकाई॥धाइधाइमारैसकल।५९॥चौपई॥एकसरावगकसोसर

ध॥ न्योतिजिमाएवांभणावाध॥ टकादोइदक्षणाकादिया॥ मनुषजनमकालाहासि।
या।६०। फुणिवणिवरइकमतोविचार॥ मलिनवदनवैठोदरवार॥ फुनितिनवांभण
लियोवुलाय॥ तिनसोंवातकहीसमझाय।६१। आजपितामोहिसुपनोदियो॥ वांभ
णज्याइत्रिपतितेंकियो॥ धनिधनिमेरेसाहसधीर॥ तुवांभणभुगतावैवीर।६२। आ
वगधर्मपापकीषानि॥ वालिनकरैधूतकछुआनि मुसलमानसमझाणीऐह॥ या
मेकछुनमनसंदेह।६३। तोप्रसादमेरादुखगयो॥ तुकुलमंडनवालकभयो॥ अनरए
कमोकलोकराइ॥ सत्यकहतहोमनवचकाय।६४॥ दोहा॥ आइलगीज्वालाविषेवूडीहिर
दामोहि॥ सोमुऊसात्रैसुतवहुत॥ यामैधोषैनाहि।६५॥ सोरठा॥ वांभणहिरदेमाहि॥ दशद

रागुल्लवालकै॥ यामैमिथ्यानांहि॥तोमेरीपीडाभजै।६६॥ चौपई॥ तातैदशादशागुल्लदुजा।
राइ॥षांइयैवलिजाऊंमनवचकाय॥ऋसैवचननिकेसुणे॥जानुकिभयेवज्रकेहनें
६७॥फिरनवीकोनुज्वावकराइ॥वांभणारहैसकलसिरनाइ॥तववणिवरतिनआदरकि
यो॥नुमनज्वावफिरिकोनुकियो॥६८॥सोरठा॥कैगुल्लदशादशाहु॥कैसराधऊढैकहो॥कै
मोपुरसोंजाहु॥दंडदेइराजातणो॥६९॥ज्यायाकियेतेंकरम॥वेइनधरेनरकते॥जनको
कियोधर्म॥जायकहांकहिमाहणा॥७०॥चौपई॥सुनोश्राद्धकीनुतपतिकहूं॥तवतैश्राद्ध
करतहैसहू॥वायसहंसमित्रताभई॥कर्मयोग्यविधिनानिरमई॥७१॥हंसकेघरवायसनि।
तजाई॥भोजननानाभांतिकराई॥वायसजिहपुरमेघरकसो॥सोपुरदुष्टमनुषस्योंभ

स्लो।७२। हंसवायससोंकहिवहुभाय॥हमकोंअपणोगेहदिषाइ॥हमकोंअपणोगेहदि
षाइ॥वाइसफिरिहंसासोंकहै॥मेरेघरपैकाघोंचहै।७३।वायसहंसनिग्रहदेषियो॥भावम
गतिकरिघरित्यागयो॥नानाभांतिकेफलवहुत्याइ॥महडाआगैमेल्होआइ।७४।फुनिति
हनगरपरिक्षाकाज॥एकतमासोकीनोगज॥ऐसेकामकरैनविकोइ।सुनतेवडोअ
चंभोहोइ।७५॥ दोहा चल्लताहंससोकागपति॥वात्योविनैकरेइ॥यहहंसनिमेरीभ
या॥मेरीमोकुदेइ।७६। चौपई॥ऐसीवातकागकीसुनि॥हाइहाइकरिमूडीधुनी॥नी
चपुरुषसोंकरिसीसंग॥तिहकोजासीअरथअभंग।७७॥अरेकागसवपूछतदुनी॥
हंसनीकागघरिकवहूंनसुनी॥चल्योपंचपैहंससोंकही॥ताहिदेहिताहीकीसही।७८॥

कागपंचपैपहित्वैगयो॥ विनाभगतिकरिसोवोत्तियो॥ झूठहमारैत्तियोभ्रात॥ वोत्तोजो चाहोकुशलात॥७९॥ वडेचुलारेसगलेआज॥ जाइदिषाकैमनवचराज॥ कोत्तत्तेइहंसा पैगयो॥ झगडतिझगडतिपुरमझिठयो॥८०॥ वातकहीपंचनिसोंजाइ॥ हमरेझगडोटे हुचुकाय॥ पंचनमनमैत्तोभनुपाय॥ हंसीकागकुंदीनीदाय॥८१॥ हंसविचारेविलषो भयो॥ पंचन्यायकुनिजुतदेषियो॥ कागकहैहंसासोवात॥ न्यायनगरकोदेष्योभ्रात ८२॥ कागहंसीनीहंसकोदई॥ फुनीवानीवायसनैचई॥ अहोमित्रनुमदेष्योनाज॥ झूठी नगरीचरपटराज॥८३॥ सोरठा॥ जैचाहोकुशलात॥ फुनिनविआविज्योइसहिघरी॥ क नकमैजोगात॥ जैकोईतेरोकरै॥८४॥ चौपई॥ फिरिवायसआयोतहां॥ पंचनगरकेवै

ठेजहां॥ पात्योवचनकहौमैतोहि॥पित्रतुहारेदेषोजोहि। ८५। दोहा॥ पित्रदेषानुताहि
रे॥मनवचजानोसोई॥वोत्योनिरवाहेपुरुष॥जतमहोइजिकोई ८६। दक्षिणमेहनन
नवै॥ननवैतोजलभरेइ॥सापुरुसववचननजरै। जैनचरैतोकरेइ ८७। पंचचले
तेसाथजठ॥अतिनछाहमनमोहि पित्रदेषिकोमाहणा। यामैमिथ्यानोहि॥८८॥ चौपई
जहांनरककीडाकीराजि जाईदिषायेकरिवहुराजि। वडेतुहारेतिष्टेराहु॥अवतुमसेव
करेगोकेहु॥८९॥ दोहा॥एपंचतुहारेवडेहै यामैमिथ्यानोहि। झूठकथैयहुगतभई॥सम
झिदेषिमनमोहि॥९०॥ कहैमनोहरविमलमति॥सुणियोवालगोपाल॥झूठवचनजोवो
लसी॥ताकोयहैहवाल॥९१॥ सोरठा॥कहैमनोहरदास॥सुनोधरमयतमानवी॥यदपिप्रा

ण हुइ नास ॥ तो प्राणि झूठ न भाषिये ॥ ए २ ॥ चौपई ॥ वो ले पंच तो सुणि रे काग ॥ अब हम ऊपरि करि अनुराग ॥ कौसी भाँति इनको जुहार ॥ होइ काग तुम सब विधिसार ॥ ए ३ ॥ दोहा ॥ इनहि सवन को चोच भर ॥ ले मेलो सुर मोहि ॥ भोजन जो देहि मोहि कुल ॥ या मे मिथ्या नो हि ॥ ए ४ ॥ चौपई ॥ अस सुन मास त्याग तही जानि ॥ पनरै तिथि शुभ कही वषानि ॥ भोजन हम कुल को देहु वहु ॥ और वृक्षण दूतो सदृ ॥ ए ५ ॥ सकल वात ति न्हा रे करी ॥ वाइस निज जुठि आयो घरी ॥ वणिक भूदुत्त त्री वृक्षन वेस ॥ दे करि को लगए स विशेष ॥ ए ६ ॥ सोरठा ॥ तव तै भयो सराध ॥ मन वच जानो मोहना ॥ कथो वडो अपराध ॥ कन्या गतए आदि हे ॥ ए ७ ॥ चौपई ॥ वांभणवोले तजि अभिमान ॥ गुरु नवि सहे जाहि यज्ञ मांन ॥ गोठि हमारी दमडा नो हि ॥ नाज तुला

रोमांगिरषाइ।९८। अरुहमगुरुमोदाएवहु॥तातैंभुद्धिवुद्धिविसरीसहु॥हमजानीयहअव।
मनमांहि॥श्राद्धजूठहैमिथ्यानांहि।९९। दोहा॥जीवविचारैकरमवसि॥पहुचेमतिगतिलो
इ।गयेसोपकीत्तीकटी॥कांयोपीटतहोइ।८००॥सोरठा॥देशावैराटवषांनि॥गांवधनौरा
पुगटहै॥भयेसरावगजांनि॥वांभणतहांघरपांचसै।१। चौपई॥श्रावककाव्रतमनवच।
लिया॥सवमिथ्यातकोपाणीदिया॥देविदेविपिरथीपगधरै॥प्राणजाइतोक्रोधनकरै॥
२॥निरमलगातितिहिरदेमांहि॥ठाणिरपांणीनितप्रतिनांहि॥वितसारूनितदानकराहि॥श्रा
ठौचौदशश्रन्नननषांहि।३।देवपूजकरिभोजनकरै॥रागदोषनविमनमेंधरै॥मित्रशत्रुजा
नैऐकसार॥श्रापतिरैंपरतारणहार।४॥सोरठा॥श्रावकविनानलाष॥देइदामकोरोकगिए॥

उनके भावे षाष॥ कालदार अहिसम गिने।५। अैसो जोदुजराइ॥ जैकोई हुइजगतमें॥ ता
पूछे पाइ॥ कहै मनोहर जोरिकरि।६॥ चौपई रावण कुंभकरण इंद्रजीत॥ इनहि आदि दे
भवनवटीत॥ तेसवजिनपदसेवनहार॥ तिनको राषसकहै गवार॥७॥ पुनितिनकहैमो
समदलीन॥ व्यासादिकमतिबुद्धिमलीन॥ तिनकेग्रंथरचीकुछ और॥ मिथ्यामतकीझू
ठीदौर॥८॥ दोहा॥ काटिकर्मशिवको गए॥ कुंभकर्णइंद्रजीत॥ रावण चउथेकालमें॥
अरिहंतहौहै मीत॥९॥ वालिराजाकैलासपरि॥ करैतपस्याघोर॥ रावणताकों देषिकरि॥ की
नोंवहुविधिजोर॥१०॥ चौपई॥ जाईकैलाशनुपाडैजोइ॥ वालिमुनिदेष्योध्यानालोइ॥ वायेप
गकरिकैनगचांपियो॥ रावणसवशरीरकांपियो।११॥ रावणदुखपावतजानियो॥ दयाभाव

तिहिमनआणियो॥ पगनुरलोकियोसाहसधीर॥रावणपाइपस्योआइवीर॥१२॥जिन
वाणीमेंऐसीकही॥ कहेमनोहरमानोंसही॥ केवलपाइमुकतिकोगए॥ वालनृपतिमहिरू
षिपतिभए॥१३॥दोहा॥ मूढकहेकैलासगिर॥च्यारयोजिवपरचंड॥तिहितलरावणदावि
यो॥सक्योनकछूवलवंड॥१४॥मुनिसुव्रतवारेभयो॥रावणमनवचकाय॥महावीरवारैभ
यो॥महादेववहुभाई॥१५॥चौपई॥ वामणझूठोकहेकहान॥चूतडसेतीगांवैकान॥मोह॥
महामदपानकरई॥वहुजगवसिकीनोदुखराई॥१६॥करिहेमूढऔरहिसोंऔर॥स्वारथकरै
षलकोचोर॥देषावडोनुठायोफेन॥कोडीलेकरिछाडोरैन॥१७॥सोरठा॥जिनवचविनजो
बात॥सोईमिथ्याजानवी॥सोनाविनजोधात॥वहुमोलीतोभीनकछु॥१८॥इतिश्रीधर्मपरि

इति भाषा मनोहरदास षंडेलवाल कृत संधि सोलहमी समाप्तं ॥१६॥ चौपई ॥ चालेषगनीशाव।
जाई सवदुज पाछे लागे धाइ ॥ जाइत रुतखि वैठे वीर ॥ तहां केवली मुनिवर धीर ॥१७॥ पवनवे
गवो त्यो मुनि भ्रात ॥ कहो कथा पुनि की अवदात ॥ मनोवेग मन मे सुख पाई ॥ पूछ्यो मुनि शिर प
दय गनाई ॥१०॥ वो त्यो मुनिवर गणधर धीर ॥ वेद वात मुणियो वर वीर ॥ वेद विषे हिंसा वहु क
ही ॥ सो हिंसा दुर्गति की मही ॥२१॥ दोहा ॥ कहे अकृतम वेद को ॥ सो अक्षर जुत लोई ॥ अक्षरहए
पुरुष की ॥ मन मे देषे जोई ॥२२॥ हम जानी जु न मानकर ॥ अक्षर यत जो होइ ॥ सो तो अकृत्तम नही
मनवचजानो लोई ॥२३॥ व्यंजन सवतालादि ते उपजे हैं मुनि भ्रात ॥ ति नमे वेद अकृतम कैसे
तेनही डरत अघात ॥२४॥ चौपई वेद अथर्वण हिंसा कही ॥ जागि करम मे मिथ्या नही ॥ मूढ॰

विणसैहठकरिजीव॥क्रोधलोभमैमगनसदीव।२५॥सोरठा॥जज्ञविषैजोजीव॥मारैसुर।
पुरवहनुहै॥मारैकौंनसदीव।यज्ञविषैसारैकुटंव।२६॥दोहा॥यज्ञपाठीकेवचनजे॥
धारैहिरदैमांहि॥जेनरजानिषटीकसम॥यामैमिथ्यानांहि।२७॥चौपई॥जातिमात्रनुंधरम
नजानि॥धर्मदयायतकछोवषानी॥चतुरवरणकीमानिषजाति॥जुदीजुदीकरियातिस
मांति।२८।संयमनियमशीलतपदान॥क्षमादयासंतोषमहान॥एतेगुणजामैसवहोई॥सो
ईजातिवडीजगलोई।२९।गुणविनजातिवडाईकरै।सोनरवहुतभांतिदुखभरै।वचनद्वार
लोकैताकहै॥सोतोनरकसातमीलहै।३०॥दोहा॥गुणविनसोभानालहै॥काहेकरतडफोल
भूषणभूषतिदूधविन॥गौनहिपावैमोल।३१।सोचकहतस्नानतैं॥तेतोमूरखलोइ॥मन

All Rights Reserved © CC BY-NC
Oriental Library, Ara

शुद्धि विन मनोहर कहै॥ मन मेदे षो जोय॥३२॥ सवइया इकतीसा॥ जल के न्हाए जल जीव पं॰
चागनि ते लोहार मूंड के मुड़ाए नेउ सदृस तू मानजू॥ नगनर हैते पशु भस मलगाए घर जटा॰
केव ढाए वट मोंति न विश्वानजू॥ मौन के धरैते व कुवेद पाठी सुक हो इ यज्ञ के करा ये णर होत
है सिचानजू॥ कहत मनोहर जि नो क ति विना ज्ञान पहि रदै अशुद्धता को यह फल जान॰
जू॥३३॥ चौपई॥ सपत धात मय वधो सरीर॥ सो क्यों निरमल हो है नीर॥ अंतर पापकि॰
यो वहु भाय॥ सो कालिमा न जल सो जाई॥३४॥ दोहा॥ तिहि जल से तीरथ नो॥ मैल न मीव॰
हजाइ॥ तिहि जल सौं मन कालिमा॥ क्यों जैजैस मुझाय॥३५॥ भावे संग को छारिदै॥ भावे संगि रै
संग॥ मनसा नी की हो इतो॥ माऊ कठौती गंग ३६॥ चौपई॥ शुद्ध सकित विन मुकति न होई॥ म

नवचक्रमकरिजानोत्योइ॥ऐसोजानिभुद्धमनकरो॥पापकलंकनेक नविधरो।३७॥
सवइया ३१॥ चामकेवसनधारभीत्यमारै॥मृगनिकोंयोनहारीनागजीवघातनअघाएहै
मौनकेधरैयाव कुमीनकुलनाशकरैजलकेहईयामानोछोटेमछगएहै॥अधोमुख
रहेऊर्तिवागुप्तिसकलघोसरैनजीवघाइघाइनर्कोसिधाएहै।ऐसोजोतपसीहोइ।
ताहिमतिधीजोकोइकहतमनोहरपाषंडएवनाएहै३८॥चोपई केईमूढकहैइहिभाइ।पं।
चतत्वमिलिपुद्गलथाइ॥टुकटुककरिदेषोगात॥जीवकहूनविपायोभ्रात।३९।तातैंमन।
मैजानोंसही॥जीवदेहमधिमनवचनही॥यहैवातऊठीसतकहै।तासोमौनभलीचुपर
है।४०।पांचतत्वमिलिभयोमिलाप॥काहिपिणासैकाकोपाप॥ऐसीसुणिकरिहिरैधरै

जीववधथैनाहिनडरै॥४१॥वंधमोक्षकोकरैअभाव॥तेनरजानिनरककेराव॥पंडितम।
धिविचारैवात॥जीवदेहमधिमनवचभ्रात॥४२॥देहमध्यअैसोहैजीव॥दुग्धमांहिज्यौंजा
नौघीव॥विनाज्ञाननहिजान्योपरै॥जोपैकोटीवरसतपकरै॥४३॥जीवकरमवसिमनव।
चकाय॥च्यारोगतिमोहिभ्रमणकराई॥अपणीसकतिगयौंविसराई॥कहैमनोहरमनव
चकाय।४४॥सोरठा॥जलकीअैसीसकतिवुझावैतापकौं॥पस्योतमहंडीमाहिजरावैआप
कौ॥अैसोजीवप्रचंडकरमगणकोहनै॥फुनिहोकालवूतघरमांहिपड्यौकछुनावनै।४५॥॥
चौपई॥सदाशुद्धयहआतमआहि॥काहेक्योसवध्यानकराहि॥शुद्धहेमजोहोइसुजाणै॥सो
धनसारकौणविनाणै।४६॥अैसीकोईकहैगवार॥धिगजनमतिनिनरभवछार॥स्यादवाद

जिनवाणीकही॥ जुगतवातकरिमानोंसही॥४७॥सासनिरोधध्याननजेकहै॥तेतोराजन
रकोलहै॥सहजसाधहैज्ञानगंभीर॥यामैझूठनजानैवीर॥४८॥एकनपावकहौफुनि
देव॥जिनवरमनवचजानौएव॥जीववसतहैपुद्गलमांहि॥अगनिकाष्ठमधिज्योंअलि
नांही॥४९॥योगविनानविधामैतोइदेषिमनोहरमनमेंजोइ॥इसावचनआगममैं॥ ३
कहा॥भावश्रुतकरिभविजनलहा॥५०॥कवित॥जीवकरमअनादिएकठैदूरहै॥ताकी
संगतिजीववहुसंकटसहै॥दरसनज्ञानचरनविनाननपावकों॥पुनिहोनुदेजीवअरु॥
कर्मकरणाकोंभावकों॥५१॥चौपई॥दिक्षासेतीपापनजाइ॥इकराजनविसेणपलाइ॥के
ईमूरखअैसेकहे॥दीक्षाकरहमपापहिदहै॥५२॥अतिउतंगपर्वतलागैआहि॥पंगुलचाहै॥

All Rights Reserved © Shri D. K. Jain
Oriental Library, Ara

तोडै ताही ॥ जोग मिथ्यात अविरत कषाय ॥ इन करि बांधै करम अघाय । ५३ ॥ भाव शुद्ध वि
नकर्म नहणै ॥ तातैं भाव किया ही बणै ॥ व्रत विणदिष्या सो सिव कहै ॥ अकाश वेलनै सठफ
ल कहै ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ मनवच से तीजगति कों ॥ पापनाश जो होय ॥ वंध नोवतै नृपति कों
वैरी नासै कोइ ॥ ५५ ॥ दिक्षा करिके कुटंव को ॥ नेहनास जो होइ ॥ करम पुरातन मेषतै ॥ नास
न होइ है तो इ ॥ ५६ ॥ दिक्षा पूजा भाव स्यों ॥ विधि सहित जो होइ ॥ फल वांछा नां हीत हो
सम्यग्दर्शनि सोई ॥ ५७ ॥ पुजादिक करणी करै ॥ लोक लाज फल हेत ॥ विषै वासना ना हि त्यषै
ते जीव जानि अचेत ॥ ५८ ॥ सवईया २३ ॥ फाडि सुकनत न करि दुरवल योगी भेष जीवनुछ
छीना ॥ जगत जाइ मषै वन फल को करकै अगमौन दुखदीना ॥ चिपनरूप परे तप मंडी

गिरसिरीजाइकहाचुमत्तीना॥ अरेआयांणअनुभवरसवाहिरझूठरेझूठसवैतेकीना।५
एजापजप्योभावैतापतप्योभावैव्रतकरौजुलहोसवभेद॥नगनरहौतनधूपसहौभावै
तीर्थजाइकरैवहुषेद॥मौनकरौभावैध्यानधरौभावैशीतसहौरपटौनितवेद॥एतोकि
योतोकहाभयोशुद्धनुभावविनाएसवैफलछेद।६०।पाटपटेररटेजिनकेगुणजीवअजी
वकथासवचेती॥जापजपैथरपैकियाअरपीहरितीवसुधापरिजेती॥सेइदरीहरीधी
तिधरीवहुमौनधरीरकरीवहुएती ध्यानविनाजुपयारकोपीटवोजोनहीप्रीतिनिरंजन
सेती।६१॥सवईया ३१॥ परमपुनीतयोहीयोहीसुखसागरहैयोहीमतवानयोहीपरवा
नज्॥योहीधर्मवंतयोहीसंतसाधपूजयोहीगुणवंतयोहीदुखसेतीहीनज्॥योहीब्रह्म।

चारीयोहीज्ञानध्यानपरिपूरियोंहीव्रतधारीयोहीसुभटअदीनजू॥योहीधनिधनिवानया
कोचरेअहनिशिसोतोनरकोनजानआतमसोलीनजू।६२॥सोरठा॥दर्शनज्ञानविही
न॥कोटिवरषदिष्याधरै॥हरैनपापमलीन॥कहैमनोहरपूर्वकृत।६३॥करैजीवयहपाप॥
द्वैकषायवसुवापडो॥मूरषकरैकलाप॥दिष्याधरिषोयोचहै।६४॥कोटिवरषजोध्यान
धरैमुकतिपदलेनकोंसोतोजानअज्ञान॥अकषायलीयेरहै।६५॥दोहा॥जिनइं
द्रीजीतीनही॥जैकषायनहीचार॥तिनकोवचहिरदेधरैतेवूडैसंसार।६६॥ब्रह्मावाना
रसीविषै॥दुजसुतमनवचमांन॥नारायणवसुदेवसुत॥मुनिसुतहरभुमजान।६७।
दोहा॥तीनमूर्त्तिइकदेव॥तिनकोंमूरखकहतहै॥ब्रह्माकोसिरएव॥कैयांछेचोनमयार

मत्ति।६८।रागदोषकृतकामरत॥ब्रह्मरुद्रमुरारि॥इनकोंपरमेश्वरकहै॥क्योंजैहैभव।
पार।६९।चौपई देवयतीफुनिधर्मवषांनि॥तिनहिनसेवैमूढपिवांनि॥फुनिवैचाहै।
मुक्तिनिवास॥देष्योसुखपरिवहौत्ववास।७०।दोहा।देवरागयुतसंगमुनि॥धर्मदै
याकरिहीन॥इनकोंसेयेंशिवनही॥मनवचजानप्रवीन।७१।चौपई आवागमनरहि
तसोदेव॥गुरुनिग्रंथसोजानोएव॥धर्मदयायुतोआनूकूल॥एतीनोशिवपदकेमूल
७२।मद्यमांसगहिसेवैनारि॥तेफुनिजैहैस्वरगमंझारि॥षटीकजारकलात्रवषांनि॥
एसुरजैहैझूठनजानि।७३।क्रोधमोहभयममतालियें॥पुत्रदरवदारचितदियें॥पापध
र्मनविकरैविचार॥तेनरडुवेकालीधार।७४।दोइघरभजाकिरसाणकिजै॥कोगुरुकोयज।

माणभणिजै॥ मूरख लोग अजाण न बूझै॥ कदमैं एक किम सूझै॥७५॥ मनोवेगवोल्यो सु
निभ्रात॥ सुनो एक जिनमत की वात॥ केवलज्ञान कह्यो मुनि जैसे॥ तेसवजाणि सत्त करि
तैसे॥७६॥ दोहा॥ भरतक्षेत्रमैकालछह सदाप्रवर्तैवीर॥ सुषमसुषमसुषमसुख दुख दु
षमसुषमदुषहीर॥७७॥ चौपई दुषमदुषमपुनिछठो जानि॥ याविधिजिनवरकह्योवषान
तीनदोइइकगाजसही॥ तीनकालतिनकीगतिकही॥७८॥ वेरआवलेहरडेजानि॥
अनोकरमआहारवषानि॥ ऐसीजुगतितहांसुखरहै॥ तिनसुखकीमहिमाकोकहै॥७
९॥ दोहा॥ च्यारितीनपुनिदोइभणि॥ एककालथितिजानि॥ कोडाकोडीनुदधिकी॥ जिनवर
कह्योवषान॥८०॥ चौपई तीनकालकोसुनहुसुभाइ॥ दशासुखदेइकल्पतरुराइ॥ कोईनस

दनकिहिकैजाई॥कोइनकिसहीसनमधिथाइ।८१।वरतनसंयमधरमननेम॥होइक।
गत्तितिनहीवहुवेम॥एकघाटपंचाशवषान॥दिनमैप्रोढहोइसतिजोनि।८२।परस्पर
दोऊभोगकराहि॥कामदेवसममिथ्यानाहि।८३।तिनकीजपमादीजैकाहि॥सुरतैचन
सुखअधिकैआहि॥८४।नहीविजोगनहिकोईदास॥नहीमृतभयसुरगतिवास।नहिदु
गतिदुखजानैकोइ॥मरिकरिसवैसुरगसुखहोइ॥८५॥दोहा॥तृतीयकालकीपच्चेको
रहोअष्टमोभाग॥चौदहकुलकरऊपने॥धर्मविषैअनुराग।८५॥चौपई॥तिनमधिनाभि
भयोपरवांण॥अतिकुकरिवुद्धिनिधान॥मेरुदेवातसुघरणीजोनि॥सीलरूपगुण
कीषांनि॥८६॥करीकुवेरअयोध्यापुरी॥ताकीजोतिसुरपुरदुतिदुरी॥तहांनाभिनृपराजक

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain
Digitized by eGangotri Library Archive

ए इ॥ भोग भोग वै मनव चका इ॥ ८॥ भोग करत के ई दिन गए॥ रुषभदेव सुत ता के भए
कछन पति जि नदीनी व्या हि॥ नंद सुनंदा पुत्री आ हि॥ पुत्र निन्या णूं पुत्री दोइ॥ भए एक।
के मनव च लोई॥ वा हू वत्री काम आ वतार॥ हू वो एक के सव विधि सार॥ ८ एी का त्व ऐ को भयो ५
विना श॥ सव प्राणी चित भयो न दास॥ अ मि मसि खे ति व णिज आ पार॥ च्या रि व ता ई विधि जिन सा
र॥ एं०॥ अ डिल्ल॥ वरष ति यासी लाष पु वं गए गे ह मे॥ जि न त त पस्या लेइ मग न भए ने ह मे॥ सुर
पति मतौ वि चारि षंदा ई का मिनी॥ फु नि हार ही नु छत स आव जिसी हो इ दा मिनी॥ एं१॥ चौ
पई॥ न त करत षडहडकरि परी रुषभदेव त्व षि चिंता धरी॥ नि रष त व डो त मासो भयो॥ दे ष
त दे षत प्राणी गयो॥ एं१॥ दोहा॥ त न धन यौ वन कुटंव की॥ म ति को क रो प्रती ति॥ जो नु पज्यो

सोविनसि है॥यहे जगतकी रीत॥ए३॥ सवइया॥ केलिगर्भ्रमसार तिसो है संसार रे झूठे जान्यो।
नूंका हे वटै॥ जीवदेषिविचारिरे आपो संभारिरे कर्मनटावत तैसे नटै॥ धनपुत्रकलित्रजि
सो हरिचायरिता हिविछो हेनुवादिरटै॥ मतिकायरहोइ महामन नुंविधिनाजुलिष्योसुमि
टैनघटै॥ए४॥ सवइयाइकतीसा॥ गिरनदीवेगसमा यो वनसंयोगवंधकपंथमां है जैसो को
नुपंथीमिलैआइजू॥ मित्रकोमनेहजैसेतडितकोतावभावजीवनतो इंद्रचापछिनमेविहाइ
जू॥ हयगयसाजवाजिसुपनांसमानजांणिधनपायधूलिसममानोवचकायजू॥ कहतमनो
हरँश्रेसी भांतिवारंवार अवधिप्रमाणचितचिंत्योजिनराइजू॥ए५॥ जोपैकोऊकहैआहिमेरु
चूलिकाचलाईपछिमसूरजगाइघतदेष्योजलमै॥ सूरजकेउदयतमदयावंतदेष्योजमत

पताईमान चंदपास्ता आगिऊत्तमें॥ आकासके फूलसेतीसेहरेगुल्लोहे नीकोवांऊपुत्रव्या
हैहैकवत्तऊगैथत्तमें॥ एतीसवमानोंगिरहीनमानोंसुखीजिनदोहीभावैमेरीहासीहोइ
खत्तकमै॥९९॥चौपई॥ तिहिसेतीतजिदुखनिधिगेह॥ करैगौचरीसेतीनेह॥ जिसप्रसा।
दसवचिंताजाई॥ लोकवडाईसकलविलाई॥९७॥सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञान॥ अरसम्यक्चारि
त्रविनान॥ भवसमुद्जीवपडैतेवीर॥ एराषणकोसाहसधीर॥९८॥इसंसारमांहिकछुनांहि
इहिविधजिनराष्योचितमांहि॥ एतेलोकांतिकसुरआइ॥ लेइपालकीमेलीजाइ॥९९॥
काधेलेसुरनरचालियो॥ सिद्धभूमिथानकगमकियो॥ तहांजाइकीन्योसवत्याग॥ क्रोधलो
भमनछांडोराग॥१००॥दोहा॥ स्वामीदीक्षालेतहे॥ छांडिविविधिविधिराज॥ नीषभरोडा॥

डीवडा। करैन आप्या काज॥१॥ चौपई वटतरु तलै रुषभजिन जाइ॥ परजंक आसन बैठआई
नमस्कार सिद्धन को किया॥ पंचमुष्टि कच उपाडिया॥२॥ महाभूपती चारहजार॥ भये तप
श्चीजिनकीसार॥ तिनहु भेदकछु समझ्यो नांहि॥ रीसकरी तिन सबमनमांहि॥३॥ दोहा
महतपुरुष कारजकरै॥ ताहिकरैसबकोई॥ सकलभगति जगजानमै॥ मनवचजाणो त्यो
इ॥४॥ सोरठा जिनछमासआहार॥ त्यागिरत्यागेध्यानसो॥ छारिसकलविकार॥ मनत्या
योआतमविषै॥५॥ दोहा॥ भगनभयेछमासमै॥ भूपतिसकलवराक॥ सहीगैनछुधापुरवत्या
॥ त्यगेषाणफलसाक॥६॥ चौपई जेनरदेहविषैआधिन॥ सहैपरीसाकोकरिदीन॥ केहीकं
दहीमूलफलषांहि केईपछितावे घटमांहि॥७॥ दोहा॥ पहिलीआपादेषिकरी॥ जबलोंदि

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain
Digitized by eGangotri

ष्या मार॥ जे तादेषे र्नट ए॥ ते ता पाव पसारि। ८ ॥ छपयकवित्त॥ भूषवुरी संसारि॥ भूषम
वही गुण षोवै॥ भूषवुरी संसार। भूषसव कौ मुखजोवै॥ भूषवुरी संसारि॥ भूष आदर नहि।
पावै॥ भूष गवावै लाज॥ पति भूष णा षैकार मैं॥ मनरहसि मनोहरई मकहै॥ भूषवुरी संसार
मैं॥ ए॥ चौपई॥ इसो तमा सो देषि रदेव॥ मनवचनन स्योवो त्योए व॥ इसे वरत तैगति यनमो
ष॥ वाइत गीवो लैग हिदोष॥ ९॥ आपन मुनिजे लेइ आहार॥ तेमुनिडुवे काली धार॥ सम।
ज्यो समज्यो रमन मांहि॥ ऐसे करमन विनी चकरांहि ११॥ दोहा॥ पाणि पात्र पर घर विषे॥ प्रास।
ग परि करि साज॥ लेइ आहार महामुनि॥ धर्म वधावन काज॥१२॥ सवईया इकतीसा॥ पंचमहा
व्रत पालै पंच सुमति सं भालै पंच इंद्री जीति मयो मोगी चित चैन की॥ षडावश्यक किरियाद ढि

तभावितसाधेप्रासुकधरामेएकआसनहैसैनको॥ मंजननकरैकेशलुचैतनवसनमुंचैत्या
गदांतवनसुगंधसासवैनको॥ ठाऊेकरषैआहारलघुभुजीएकवारअठाईसमूलगुणधा॰
रीयतीजैनको॥१३॥ चौपई॥ ऐसेवचनदेवकेसुनै॥ जानुकिमएवज्रकेहणै॥ कोईकत्याज
छोरिघरगया कोईकाजविदेशीभया॥१४॥ इततटिनीजतसिंघसरोस॥ एककहैकादीजै
दोस॥ आहारविनावृतकैसेपरै॥ मरथराइहमकोंडरकरै॥१५॥ दोहा॥ जोहमप्रभुकोवन॰
विषै॥ छारिजाहिनिजगेह॥ तोहमपरिकोपेमरथ॥ मनवचजानोऐह॥१६॥ केईमनहिवि॰
चारएव॥ करणलगेप्रभूकीसेव॥ षांहिकंदमूलवनमांहि॥ सुखसोंतिष्ठैमिथ्यानांहि॥१७॥
कछमहाकछतपसीवेश॥ धारिकंदफलभषैअसेस॥ मरथपुत्रमारीचकुमार॥ सोषिकम

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

तितिनकियोविचार।१८॥दोहा॥पंडिताईमनगर्वकरि॥धरिधरिबुद्धिप्रचंड॥तवतैमनव
चतीनसै॥भएत्रेसठिपाषंड।१९॥क्रियाअक्रियाथापकरि॥भुक्तवस्पतिजीनि॥चारवीक
पाषंडकस्यो॥महापापकीषांनि।२०।इहिविधिएपाषंडभए॥नरकगमनकोबंध॥तिहिम
ताल्यागेवहुतजन॥च्यारोंस्तोचनअंध।२१।आदिनाथत्रिभुवनधणी॥तेनचत्रैआहार
योगनजुरेठमासत्यों देषोकरमविकार।२३।सोरठा॥प्रभुश्रेयांसकोजानि॥सुपनौदीनौदेव
ता॥जातीसुमरणजान॥भयोततक्षिणभूपको।२४।दोहा॥फिरिकरिचल्यैआहारकों।वरष
मांहिजिनदेव॥दीयोआहारश्रेयासनृप॥मनवचजानौएव।२५।सोरठा॥जिनवरलेईआहा
र॥फिरिवनहीकोगमनकीया॥समोसरणविसतार॥कियोकेवलज्ञानवलि।२६।चौपई॥

रथनृपतिमनमोहिविचार॥कीएवरणचत्वारिहकारि॥वरतयोगनृपवांभणकियो॥चत्रीक्षि
तिरघणनिरमयो।२८।वणिजकरणकोवणिवरजांनि॥कामकरणकोंशूद्रवषांनि॥च्यारवर्
णएच्यारेभाइ॥कामकरणकोंदियेलगाइ २९ दोहा॥पहिलेवांभणपूजियो॥भरथनृपति।
गुणजोइ॥तबतैंवाभणषत्तककों॥गिलैंतिणासमत्तोई।३०।चौपई पार्श्वनाथशिषमंगल
जान॥पापात्माकुवुधिकीषानि॥वीरनाथसेरोसकराइ।कियेवोधमतिमनवचकाय।३१॥
वीजरूपपाषंडएजांनि॥चौथेकालजिनकहेवषानि॥अवपरगटदीसेभुवमांहि॥कलीका
लमैमिथ्यानांही।३२॥दोहा॥शुद्धआचारयासैनही॥ब्राह्मणविकलविवेक॥अवएजिन
दोषीभए।छारिधर्मकीटेक।३३॥सवईयाइकतीसा॥धावरधोवीचंडालकाठीकसाई।

कलालगंढीढोराहोंहिकुनिहोइवटपारजू॥ताईतेत्रीतेरवानंवोत्रीतगातांतगरिभाटजाट
टाटमरचूहराचमारजू॥वंसकोरवोजागरषडीकमुसलमांनमांसभषीमदपानीधनिया
सुनारजू॥अजुवमद्दवसतीत्यागसौचषिमातपवाईसपरीसहेनाताभांतीधीरजू॥मातजा
तगागातवन्पोवासीसुषराशीसाधिआतमागवेषीज्ञानीगुणकोगहीरजू॥कहतमनोह
रजुऐसेगुरुसेवोसदासंसारदहनसमकरवेकोंनीरजू।३५॥चोपई॥समकितदरसन
ज्ञानचषांनि॥चारितपुनितपजुक्तिमजांनि।इनच्योरोंविनमुकतिनहोइ॥कहैमनोहर
मनवचत्रोइ॥३६॥भ्रमतभ्रमततवसागरमांहि॥मिलीसकलविधिमिथ्यानांहि॥च्या
रिरतनएपायेनही॥तातैंभववनमीयोसही।३७॥अडिल्ल॥चेत्रजातिकुलरूपएईद्रीमहो

रोगरहिततनजानिअवरसमकितअहो॥इतेजनममहिमूलवसैत्राजानियो॥फुनिहां।
सोजीवथोरे॥मोहिलहैसुखघांनिहो॥३८॥जेतेजगप्रभवचनजैनकेजाणिये॥कहैमनोह
रमित्रभातिनविआणियै॥तहांपंचपरकाररतनवहुपेषिए॥फुनिहांतिनकीनुतपतिमि
त्रनुदधिशुभदेषिए॥३९॥चौपई॥जिनवरवचनविनानवितोइ॥पापहरणकोंऔरनकोई
॥सूरजविनानतमवहुभांति॥हरणसकैग्रहगणकीपांति॥४०॥दोहा॥धरमवढावैजिनव
चन कहैमनोहरदास॥अनवचननासकधर्म॥ज्योंसत्रभासम्पनोस॥४१॥अडिल्ल॥
एकनांवजिननावकिहूजैत्रीजिये॥जनमजनमकोपापचिनौतिदीजिये॥रंचेकचिनगीआ
गी॥आनघरविचधरै॥फुनिहाकोटेभरीकपासनैकनहीकुवरै॥४२॥चौपई॥ऐसेवचनस

नेवरवीर॥ पवनवेग वोत्योधरधीर॥ मनोवेग परवतमिथ्यात॥ कोरनिकोनुवज्रनिभ्रात
४३। हाहामैनरभवहारियो॥ जिनवचरतननजरधारियो॥ तजेरतनजिनवचनमहान
गहेवचनअतिलोष्टसमान॥४४। तेरेवचननमानेमूल॥ मैमेछीशिरमिथ्याधूल॥ अवमें
मनमैजानीयही॥ कालअवधमोआईसही॥४५॥ तुमेसजननुमेंतात॥ तुंगुरुमित्रप्रियंकर
भ्रात॥ कूपअंधभवपरियोवीर॥ वचनराशिकरिकाटोधीर॥४६॥ अवमैजिनवचमनवच
काय॥ धारेनरमिथ्यातगवांइ॥ मिथ्यातमलोचनजेढया॥ जिनवचऊषधिनिर्मलभया
४७॥ अवमैजाणोपुंनरपाप॥ अवमैंजान्योधरमकलाप॥ ग्रहप्रियपुत्रतातभ्रतभ्रात॥ए
जसंपदापुरअवदात॥४८॥ पदविषैमिलैसवआई॥ तत्वविषैरुचिकवहूथाई॥ तोपुराणदअ

घमेरेगयो॥तोपूरणादजरनिर्मलभयो।४९।तोपूरणादमैजिनवरधर्म॥जाणेोशिवकार
णशुभमर्म॥तोपूरणादुखगयोजुभाजि॥भवसमुद्रमैंतिरियोआज॥५०।अवमोऊपरि
कीरपाकरै॥वरतरतनकरिभूषितधरै॥ऐसेवचनसुनेवरवीर॥मनोवेगवोल्योगुणधीर
५१।होस्वामीतुमजगतआधार॥कहियेवरतमहासुखसार॥मुनिकेव्रतजैआदरकरै॥वहुर
नभवसागरमेपरै॥५२॥वोलेमुनिवरदयानिधान॥सुनोवरतमनवचदेकान॥अनागारसा
गारव्रतदोइ॥तुमसागारलेहुव्रतसोइ॥५३॥दोहा॥देवआतमासाहुमी॥शास्वदेईव्रतलेहु॥
श्रावगकेसमकितसहित॥मनवचकाइकरेहु५४॥चौपईसाधिसहितजोव्रतहिलेइ॥सोअन्या
यपगमूलनदेइ॥मोहारमार्गजिनवचनकीजिये॥तातैसाधजुव्रतलीजिये॥५५॥समकित

सहितव्रत जोकरै॥ सो व्रतनिहचत्रतासोंधरै॥ जैसैंशुभमहीवीजवुवाई॥ मेघपरैअइुतनुप
जाई॥५६॥ समकितसहितव्रत जो धरै॥ सोतो व्रतसुफलताकरै॥ प्रथमनींवजोगहरीधरै
तापरिमहलसतषणाकरै॥५७॥ दोहा॥ जो नरनींठीनीवधरि॥ धरैमहलअसेस॥ महल
ढहैदमउलगे॥ वहुविधिहोइकलेश॥५८॥ जैसेव्रतसमकितविना॥ धरैमुगधअज्ञान॥ ता
कोंशिवसुखहैनही॥ अरिहंतजीकीआन॥५९॥ चौपई॥ जीवअजीवतत्वनुंजानि॥ तिन
कीसरधासमकितमांनि॥ संकाआदिदोषकरिहीन॥ संवेगादिगुणजुतअमलीन॥६०॥ अै
सोसमकितजोनुरधरै॥ सोनरमुकतिकामिनीवरै॥ पंचअणुव्रतगुणव्रतजानि॥ तीनिचा
रिशिष्यावृतमांनि॥६१॥ एवारहव्रतमनवचजानि॥ भिन्नभिन्नतेकहूंवषानि॥ मनवचका

इसुनो चुमवीर॥ अपणो चितराष्योधरधीर॥६२॥ दोहा॥ अहिंसा अनृत चौर्यता॥ ब्रह्मच
र्यसुखषांनि॥ परिग्रहमरजादाशुभग॥ पंचअणुव्रतजानि॥६३॥ प्रथम अहिंसाव्रतकहूं॥
सुनहूमविकदेकान॥ मनवचक्रमकरिपालसी॥ सोत्रहमीसुखषांनि॥६४॥ चौपई॥ ग्यारप्र
कारतरसनुजांनि॥ द्वेत्रियचतुःपंचेंद्रिमांनि॥ जिनकीरक्षामनवचकरै॥ वहुतमित्रआ
रंभपरिहरै॥६५॥ थावरजीवपंचथाए हु॥ विनाकाजहिंस्यानकरे हु॥ कहैमनोहरसाह॥
सधीर॥ जोसुखचाहैमनवचषीर॥६६॥ देवपित्रमेषजतिथिजांनि॥ मतिभविकरिहुजीवकी॥
हांनि॥ वंधछेदविधिताडनजानि॥ भारारोपनअधिकवषान॥ अन्नपानिनिरोधनकरै॥ सो
नरनीचीगतिकोधरै॥६७॥ सीषहमारीहिरदेधरो॥ एहिंसादूषणपरिहरो॥ पंचउदंवरतीन

मकार॥ठारेजैचाहोभवपार॥६८॥ कामक्रोधमदद्वेषविकार॥ लोभमोहनउपजैअहंकार॥
परपीडाकरिवचनकहो॥ जोतुमराजसुरगकोचहो॥६९॥ क्षेत्रगाममहिगैत्तामांहि॥पडीव
सतभविभीटोनांही॥ चोरीवस्तुनत्रीजैमोत्त॥ धरतीवस्तुनग्रहियेतोत्त॥७०॥दोहा॥धर्मपु
त्रभाईपिता कीर्त्तिकांतिमतिलेइ॥ एकदरवमुमियासकत्त॥ एमसियामनजोइ॥७१॥सोरठा
जीवमारैतेजोइ॥ एकजीवहीदुखसहै॥ दरवत्रियेतेसोइ॥ कुटंवमरैसारेभटक॥७२॥चौपई
परकामिनीत्यागोवरवीर॥ नरकभूमिएगहरगंभीर॥ परत्रियसंगतिजेनरकरै॥ नरकजाहिव
हुतेदुखभरै॥७३॥दोहा॥ इहभवअपजसविस्तरै॥ परभवनरकनिवास॥ एकपलकसुखका
रणो॥ मतिकोकुकरैविश्वास॥७४॥ परत्रियसेवैताहिको॥ कहाहलभगवान॥ गलीगलीई

टेपरै॥ज्यौपरघरकास्वान।७६॥जेपररमणीनररमै॥जिनैनरैनसवार॥तिनकाजीवन
हैइसा॥कंवलीठाढिआहार।७७॥कुंडलीया॥सुघरासीसजनसुनहु॥तजौविरणीनारि॥
सजनयाहीवारता॥विहवलबुद्धिनिवार॥विहवलबुद्धिनिवार॥जारमकरफजभाईवार
वारसिषतोहि॥छारिमूरषबरकाई॥हसिहसिदुर्जनलोग॥कालिपतिसगलीजासी॥प
रकामनिपरिहरो॥अहोसजनसुघरासी।७८।हाहाकरिविनतीकरें॥सीषकहैएकमूत्र॥जै
नरपररमणीरमै॥तिनकैमस्तकधूलि॥तिनकैमस्तकधूलिधिकतसुजानिजमारो॥माण
सजनमत्तहैरिकाएफोटकसुखहारो॥प्रगटभयेपतिजाइ वणजइहकौणसलाहा॥वार
वारसिषऊकरूं॥विनतीअरुहाहा॥७९॥षटपदकवित॥कुजसपरहतिनदियो॥देसदेसां

अभिमानी ॥ कालस्स लेअतिसघणसकुलमुखदीनीवाणी ॥ चरणनलोजनलिदियो ॥ सुगुणादा
वानलजालो ॥ सकलआपदासोधि ॥ वेलिकरिभरियामालो ॥ शिवपुरकपाटदृढदेइकरि ॥
पापविषैतिहिमतिधरो ॥ शीलरतनजिहिखोइयो ॥ तिहिनरएवातेंकरी ॥ एं० ॥ सुजसपट
हतिदियोदेशदेशांवृतधारी ॥ सुकुलपवितघरकलोसोधिमहिमालीसारी ॥ चारितजि
हिपालियोसुगुणगणकियाआपवसि ॥ जिनवरतिहिपूजियोसरसचंदनकेसरघसि ॥
शिवपुरकपाटकितिहिखोलिया ॥ धरमविषैतिहिवुधिधरी ॥ शीलरतनतिनिरखियो ॥ जि
हिनरएवातेकरी ॥ एं ॥ दोहा ॥ नानाविधिकिरियाकरै ॥ विविधिविविधिवृतधार ॥ शीलवि
नाशोभैनज्यो ॥ पतिविनभूषणानारि ॥ दानकरोपूजाकरो ॥ जपोजापपरभात ॥ शीलविना

ज्ञो भैन ज्यो॥ पति विनदीपकरात॥८२॥ ज्ञानध्यान चरचादया॥ जप तपसंजम लोइ॥ शी
ल विनाषिणएकमै॥ ममभावसवहोइ॥८४॥ चौपई॥ ऐसीमनिजानिरभविभाई॥ परतिय॰
छाडेमनवचकाई॥ गहिसंतोषकरीपरिमाण॥ परिग्रहको तजिलोभसुजान॥८५॥ धनध्या
नग्रहदासीदास॥ तेत्रचुःपदपुनिघरवास॥ इनकीपरमितिकीजेवीर॥ लघुपावैभवसा
यरतीर॥८६॥ दोहा॥ परिगहनिद्रादूतमद॥ कोइकलहभ्रहार॥ मेथनपररमणीरमण॥ से
येवठैभ्रपार॥८७॥ सवइया३१॥ भावैनूवरतकरिभावैनुपहुमोपरिभावैनुमसाण भूमिध्या
नधरिरहरे॥ भावैनुपहारपरिभ्रातापनायोगधरभावैनुतटिनितटनाशीतसहरे॥
भावैनुपवासकरिपाषमासभ्रादिलेकैभावैनुपरिसाकरनिजदेहदहरे॥ चेतनकहतएतो

दोहिजिनराजकहीएकहीसंतोषविनजानिजानित्वहरे॥८८॥दोहा॥लोभपवीसपुरुषदुष
देइ॥नानाविधिजोजतनकरेइ॥जोसुखचाहोयहेनपाइ॥मरदावैरहियेयेहिभाइ॥८९॥सोर॥ ठा
लोभपवीसनिवार॥मंत्रधारिसंतोषशुभ॥आतमसकतिसंभार॥मारोत्रिसनाराषसी॥९०॥सुर
पतिकिंकरहोइ॥सुरदुमचिंतारतनघर॥करिमनवचक्रमलोइ॥हिरदेमेसंतोषशुभ॥९१॥
दोहा॥चक्रवर्तिसमभूपति त्रिस्नामिटैनतास॥सोईभूपरिद्रत्वदुखी॥कहैमनोहरदास॥९२॥
सोरठा॥कहैमनोहरलोइ॥जिहित्रिस्नामारीप्रबल॥त्रयजगईसरसोइ॥यहविगांठिकोडीन
ही॥९३॥दोहा॥नासुखदेवसुवस्तुमै सुखसोमनमेलावत॥ज्योपतिसाहविथादुखी॥जोषसु॰
खीकंगाल॥९४॥चौपई॥कहेअणुव्रतपंचप्रमाण॥सुनोतीनगुणवरतसुजाण॥दिगदेशअ॰

नरथदंडजानि॥ घोऽहिमेकहोवषानि॥९५॥जिहिदिसकीमरजादाकरै॥तिहिदिशिआ
गेपावनविधरै॥यहपहिलोगुणव्रतहैसोइ॥जाइसुरगपात्रैजेकोइ॥९६॥ताहिदेशकीत्ती
नोनेम॥तापरकरैनमनवचपेम॥यहतोगुणव्रतदूजोजानि॥पात्रैसहैपरमसुखथान
॥९७॥जिहिवचनपजैपापअनंत॥सोनकहैवचहोइमतिवंत॥यहतीजोगुणव्रतहैसो
इ॥सहैदेवगतिधरैजोकोइ॥९८॥पंचभेदअनरथदंडजानि॥एकपृथमहूकहूवषा।
नि॥देकरिकानसुणेहोसोइ॥श्रावगजनमसफलहोइसोइ॥९९॥दोहा॥ मोरश्वानमं
जारभुक॥ढुलछूलचूतीजोनि॥जीवघातकेमूलअै॥महापापकीषांनि॥२०००॥इनहि
नपात्रैक्रियापर॥पुत्रमोहिवसहोइ॥सोश्रावगसुरपुरलहै॥भ्रांतिनआनैकोई॥१॥चौपई

All Rights Reserved Oriental Library, Alwar

पासि दंडविषशस्त्रवषान ॥ हलरजूहुताशनजांनि । हिसाकारीवस्तुजुहोइ ॥ मांगीदेइ
नश्रावगकोइ । २ । धाइलषमोसासनसूत ॥ नीलवडीसावुनअदभूत ॥ इनविटतामेंज
दरनभरै ॥ यद्यपिदशदशलंघणधरै ॥ ३ । कंदमूलसंधानवषानि ॥ साकपहुपवीध्योंअ
नजानि ॥ इनकोत्यागकरैसवकोइ ॥ उत्तमकुलश्रावगजवहोइ । ४ । कहेगुणव्रत
वुद्धिसमान ॥ अवशिष्यावृतसुणसुजान ॥ सामाइकपोसोभुमजांनि ॥ शिष्यावृत
नुपभोगवषान । ५ । करैअतिथमहासमभाग ॥ शिष्यावृतपालैअनुराग ॥ द्वारापेष
णाकरिदीजिये ॥ उत्तिममध्यमपात्रलीजीये ॥ ६ ॥ दोहा ॥ जीवितमरणसुखीदुखी यो
गवियोगसमान ॥ एकचित्तराषैजुसो ॥ सोसामायकघान ७ ॥ सोरठा ॥ सामायकत्रय

काल॥करैभावयतपंडिता॥होइकरिदीनदयाल॥घरकीचिंताछारिकरी॥८॥दोहा॥फु
निश्रावकपौसौकरै॥सोलहपहरप्रवान॥परवचतुष्टेभावयत॥इंदुपडीश्रमस्नान
ई॥सोरठा॥चारिप्रकारआहार॥स्वादपानलेपन॥असन॥त्यागैकरिरविचार॥धर्म
ध्यानचितविस्तरै॥१०॥चौपई॥वादिनवैरीमित्रसमान॥सोलेतिणावरणवरिजाण॥
सोलहपहरसंपूरणहोइ॥देइदानसमपातरजोइ॥पाछैआपणकरैआहार॥सोश्रा
गमाखैभवपार॥कहूंभोगउपभोगवषान॥थारेहीमेमनवचजान॥११॥दोहाएकवा
रजोभोगवै॥फिरनहिआवैकाम॥सोइभोगयतजानिज्यो॥तिनकोकरैविसराम॥१२॥
वारवारजेभोगिये॥सोउपभोगवषान॥तिनकीसंष्याकीजीये॥मनइंद्रीवसिज्ञान॥१४

सवईयातेईसा॥ भोजनसचितसनानवित्तेपनपहुपवाससुंछारुपेम॥ वाहनयानगान
रायनाशनरैणाश्रवसनकहिकरियेकेम॥ नितियानगमनवुलभूषणठारिठारिविष
तजियेएम॥ भषसमुदुतारणकोंभेत्राकरैमित्रनितसतरानेम॥१५॥ चौपई॥ श्रवनुम
संविभागविधिजान॥ थोरणहिमैकरुवष्यांन॥ दुइपहरदिनचढतप्रवीन॥ द्वारापेष
णाकरैकुलीन॥१६॥ पुनजोगकोनुमुनिवरआइ॥ मिलैआहारदेइशुभताइ॥ सर
धासकतिभगतिविज्ञान॥ विगतलोभनरसतप्रमान॥१७॥ एदातारसपतिगुणजोनि
॥इनसमदेइमहागुणषोनि॥ तीनपात्रकोंदेश्रवलोइ॥ उत्तममध्यमजघननविको
इ॥१८॥ इहिविधिदेइमनोहरकोइ॥ तातैभोगभूमीसुखलहै॥ उत्तिमपातरमुनिवरजान

मध्यिम अणो व्रीति नुमाण॥१९॥ जघनपात्र समदिष्टीवीर या विधि जाणो गुणगंभीर॥
समकितही नवहु क्रीया करइ॥ सो कुपात्र हे मनवचकाइ॥२०॥ क्रिया समकित दो
नुनही॥ सो अपात्र नुमजाणो सही॥ देइ कुपात्र दान जेको इ॥ जा प्रशाद पापी नृपहो
इ॥२१॥ दीया अपात्र दरवहो इहांनि॥ मरिकरित्ल हे नरक दुखषांनि॥ वहुत दरव को
गरवजु होइ॥ अंधकूप मैं रत्नो ज्योई॥२२॥ यहशिष्या मनवचकरित्ते हु॥ अपात्र दान
मतिभूलकरे हु॥ इनके दिये कछु फल नांहि॥ मेरो कहो भूलिमति जा हु॥२३॥ दोहा॥ दि
येदानसवन हिफलै॥ जैरअपात्र हे दीज॥ कहूंकैसे फलउपजै॥ उसरवो येबीज॥२४॥
दान अपात्रहि जोदियो॥ सोतो निःफलसहीज॥ जैसे सुतनहिउपजै॥ संगतिसूतैही

ज॥२५। चौपई॥ अंतकाल लीजैसंन्यास॥ज्ञानध्यानकीजैशुभभ्यास॥ त्यागिआहार
त्यागकीजिये॥मनुषजनमलाहोलीजीये॥२६॥ मायामिथ्यानिदानिवार॥ क्रोधमोह
मयमानविदार॥इहिविधिजोसंन्यासहिधरै॥क्रमक्रममुकतिकामिनीवरै॥२७। दोहा
ए तपकरतांजोवनगयो॥दर्वगयोमुनिदान॥प्रांगयेसन्यासलौं॥तीनोगएनजान॥२८। चौ०
एवारहव्रतमनवचजांन॥पालैलहैपरमसुषथांन॥सपूप्रकारमौनशुभभज्यौ॥हूंका
रभ्रंगुलीसमस्यातजो॥२९। दोहा॥छरदमूत्रपूजासुरत॥भोजनन्हातीवार॥जिनसुम
रणपटतांभविक॥सपूमौनकरिसार॥३०॥ मौनव्रतकोफलयहै॥मनवचजानोधीर
जाप्रसादभविकेवचन॥रीतेपरैनवीर॥३१॥ चौपई॥ रजनीभोजनतजदुसुजान॥जैनु

॥१६॥ मचाहो शिवपुरथान॥ जिहिनिशिप्राणीसंवरकरै॥ जिहिनिशिमुनिमगपावनधरै॥ सू
क्ष्मप्राणीदिष्टीनपरै॥ तिहिदयातकौंभोजनकरै॥ धर्मकर्मनिशिभोजनजाई॥ कहैम
नोहरमनवचकाइ॥३३॥ दोहा॥ निशिभोजनहैदोषकृत दोषविनापरभात॥ वैराणभो
त्रैमीडुकै॥ वांभणषायोरात॥३४॥ सवईयाइकतीसा॥ वावनपावनहोइदीरघवधिर
होइषंजसदुमूरखअपतसवत्तोगत्तोगमै॥ अंधरअभागीखोटीसंगतिकोअनुरागीदा
गिरहीदेहठोरठोरसेतीरोगमै॥ कुवरोकुबुद्धीमूकसुधीहूनकहैवातजानैनअजान
कछूजोगरअजोगमै॥ पूरवभव्योहैरैनताकेएचिहनजानोआठोहीपहरजाकेसंन
रहैसोगमै॥३६॥ चक्रवर्त्तिनारायणप्रतीर्थंकरकामदेवकोविद्कोमत्तवाणीसमगुणरागी

नू॥सज्जनशुभगत्यागीभोगीगुणपाथोनिधिधरमकोधोरीदयावंतजनसभोगीजू॥क्रोध
लोभमानमायारहितनरोगअंगपूरीआवंतमहाबुद्धिआतमसोपगीजू॥कहतमनोहर
जुयामेकछुफेरिनांहीऐसेनरहोहिरजनीआहारत्यागीजू॥३७॥चौपईजेनरयावैसुष
धानि॥रैनअसनत्यागीफलजांन॥रहैदोइघडीदिनजहां॥करैदयावंतभोजनतहां
॥३८॥दोइघडीतजिभोजनकरै॥दोउपवासमहीनेपरै॥च्यारिप्रकारदाननितकरै॥
आसरहितशुभहिरदेधरै॥३९॥ज्ञानऊषधीअभयआहार॥भवदुखमूलउपारणासार
इनमाहैवरदानआहार॥तिनदीजैपावैभवपार॥४०॥तातैंप्राणीरहैवरवीर॥अनदानदेहु
नितप्रतिधीर॥प्राणरहैशुभतपस्याकरै॥प्राणरहैनिजध्यानहिधरै॥४१॥प्राणरहैकेव

लनउपजाइ॥प्राणारहैउपदेशकराई॥सोप्राणीनअनरायेमांहि॥ताकीउपमादीजैकाहि
४२॥उषधिदीजैव्याधिप्रणास॥मुनिकोंकहैमनोहरदास॥तापूनिकामदेवतनहोइरो
गानउपजैमनवचुकोई॥४३॥शास्त्रदानदेहुमुनिवरजोग॥तिसतैपावैनवनवभोग
होइविवेकरमगणिहणै॥पुनिशिवजाइसुगुरुइमभणै॥४४॥शास्त्रदानभवियन
देकोइ॥तापुज्ञादवुधज्ञानीहोइ॥अभैदानदीजैसवकोइ॥मारतजीवछुडावोलोई
॥४५॥अभैदानदीजैजगमांहि॥मैनहोइकछुमिथ्यानांही॥दूतव्यसनछाडोदुखजोनि
॥सप्तव्यसनकोमूलवषांन॥४६॥दोहा॥जपतपसंयमशीलसत॥सोचधर्मकुलकानि
एतेजूवाकरमतै जाहिजिनेसुरआनि॥४७॥चौपई॥तजोमांसमदवेश्यासंग॥जोसुख

चाहै मित्र अभंग॥ वेश्या सम को दुष्ट नही॥ कहो मनोहर मानो सही॥ ४८ दोहा॥ कुल
वत्त यौवन धर्म यस॥ होइ पंच को नास॥ इह भव वेश्या गमन तैं॥ पर भव नरक निवास॥ ४
९॥ मनो गेह वेश्या तनो॥ अग्नि कुंड समान॥ काम होम वे मिल करि॥ तन धन यौवन लाज
५०॥ रज्जक शिला सम झूठ है वेश्या मदन भंडार॥ अहि निशि घात्ती कूटिये॥ यह रज्जनी रस
वार॥ ५१॥ सवईया इकतीसा॥ धन को विनास होइ सो द्यूत कर्म जानै चुंबन के दिये
मद मांस दोष लहिये॥ भग के करत नाना भांति सो इष्ट कर्म इन कैसमी पर हैं गुणग्रा॥
मद हिये घर की सुक चसोई चोरी को विसन जांनि निज नारि विना पर नारी दोष सहिये
ऐसी नगर नाइका को तजै कहा वैसा धइस को मित्रापी सो महापापी कहिये॥ ५२॥ दोहा

रायजुधिष्टरश्रषरवहु। जादोकुलश्रभिरास। कान्हिदासममभूमिनप॥रावणकीचकना
म॥५३॥ छप्पय॥ पृथमदूतपरिहरोमांसमदछाडिछीयाकरि॥वेश्यावित्तसमतजहुये
टवृतप्रीतमपरिहरि॥चोरवृतमतिकरौनारिपरजानमातसम। इहैसीषमनिश्रानि
करैसकलमनुषजनम। वमनकरिसकलदूरितम॥इहिजानिविसनवसिमतिपरो॥
इनहिभुन्नकोठनापरक॥विधिनासोवनिरमाथियो॥सातविसनमातोंनरक
५४। चौपई॥दर्शनवृतसामायिकजांनि॥पौसोसचितजुवसतवषांन॥रैनभसन
तजिवृह्मवृतधरौ॥फुनिपरिग्रहश्रारंभपरिहरौ।५५।श्रनुमतिदीजैनाहिनकोइ।क
रैश्राहारनदंडितसोइ॥ग्यारहप्रतिमाकोप्रतिपाल्य॥नुत्तमयहश्रावगसंभाल्य।५६। दोहा

पासि दंडविषशस्त्रवषान ॥ हलरजूहुताशनजांनि । हिसाकारीवस्तुजुहोइ ॥ मांगीदेइ
नश्रावगकोइ । २ । धाइलषमोसासनसूत ॥ नीलवडीसावुनअदभूत ॥ इनविटतामेंज
दरनभरै ॥ यद्यपिदशदशलंघणधरै ॥ ३ । कंदमूलसंधानवषानि ॥ साकपहुपवीध्योंअ
नजानि ॥ इनकोत्यागकरैसवकोइ ॥ उत्तमकुलश्रावगजवहोइ । ४ । कहेगुणव्रत
वुद्धिसमान ॥ अवशिष्यावृतसुणसुजान ॥ सामाइकपोसोभुमजांनि ॥ शिष्यावृत
नुपभोगवषान । ५ । करैअतिथमहासमभाग ॥ शिष्यावृतपालैअनुराग ॥ द्वारापेष
णाकरिदीजिये ॥ उत्तिममध्यमपात्रलीजीये ॥ ६ ॥ दोहा ॥ जीवितमरणसुखीदुखी यो
गवियोगसमान ॥ एकचित्तराषैजुसो ॥ सोसामायकघान ७ ॥ सोरठा ॥ सामायकत्रय

ऊपरि की सववाद।६३॥सोरठा घरषटुदुगणहजार। वांभणछारिमिथ्यातकों॥भयेस
रागसार॥मनवचकायाशुद्धकरि।६३॥दोहा॥ मनोवेगसोपुरुषशुभ॥दुर्द्धरइससंसार
तिहिमिथ्यातीदुज्जसुतनि॥पहुचायेभवपार॥६४॥चौपई॥मनबंछितसवहीकाभया॥
वांभणनिजनिजथानकगया॥मुनिपयत्यागिचत्तेगुणमात्य॥रचियोमहाविमाणरसा
ल॥६५।दोनमित्रएकवारमें॥अहनिशिगमे॥अंतकालत्तेइसन्यास॥पहुचास्वर्गसोत्तहे
वास॥६६॥उहांसोचईनपहोसीवीर॥तेईदीक्षासाहसधीर॥केवलपाइकरमगणजा
र॥वसिहैशिवपुरसिद्धमंझार॥६६।धर्मपरिक्षापूरीभई॥वुद्धिसासमनोहरनिरमई॥मुझ
ईदोसत्तावोमनिकोइ॥जैसीमतितैसीगतिहोई॥६८॥सोरठा मुनिअमितगतिजानि॥

सहसकृतपूरवकही॥यामेबुद्धिप्रमाण॥भाषाकीनी जोरिकै। ६ए॥ दोहा॥विक्रमराजा कुंभए। सातअधिकसहजार॥वरषतवैयहसंस्कृत॥भईकथाशुभसार।७०॥ चोपई॥देश दादुरेपरवततत्री॥ तहांधामपुरसोभभत्री॥चहुंदिशिशोभितवाडीवाग॥करैकोकिल्लापंचमराग।७१॥ कूपवावरीशुभसोपरी॥दीसैनिर्मलपाणीभरी॥मधिकमत्तीनकरैविलास॥मधकरआइलेहितिसुवास।७२।तहांवसैधनपतिबहुलोग॥पानफूलकोकी जैभोग॥तहांसरावगनीकेसुखी॥करमनदैकोईहोइदुखी।७३।वितसारशुभदानक रोहि॥जुगमवारजिनथानकजाहि॥तिनमधिआसूजेठोसाह॥घरचैदर्वलेहिधनलाह।७४।दुर्जनकोईधीरनधरै॥करणमतैसोईविधिकरै॥घणीवातकोकरैवढाई॥न।

गरसेठहै मनवचकाइ।७५॥दोहा जेठमस्त्रसुतविधीचंद॥दातादीनदयात्र॥सज्ञनम
गतागुणनदधि॥दुर्ज्जनठातीसात्र।७६।कुत्रधनयोवनरूपमद॥अवरकोंणि मदताहि
एतेमदिनविजोकरै॥वडातमासोआहि।७७॥सवईयाइकतीसा॥३१॥वणारसीसेठम।
तिसागरप्रथीप्रसिद्धकोटिनकोधणीताकोपापनदैआयोथो॥सदनसोंनिकसि अजो।
ध्याकोगमनकियोअयोध्याकेसेठवहुजधमकरायोथो॥आपणीवरावरिकोकरिनाना
भांतिसेतीदेकरिवडाईनिजथानकपठायोथो॥अेसेहमअभुसाहरायेनिजवाहदेकेक
हैमनोहरहमपुन्ययोगपायोथो॥७८॥दोहा॥सोतोपहुंचैशुभगति॥वाजैसुभगवजाइ॥
विधिचंदसुखभोगवै॥धर्मध्यानचितलाई।८०।हीरमणिनपदेशते। भयोशास्त्रशुभसार

All Rights Reserved © Shri D.K. Jain

दुष्टलोग कोमति हसो॥ हिरदै धरि विकार॥ट १॥ सवईया इकतीसा॥ रावत सात्रिवाह नग्रा
गरे को वुद्धिवंत हिरदै सरस्वति नज्ञान रस पीयो है॥ जगदत्त मिश्र गौड हिसार को वासी भुभ
विद्या वत्रि जगत मैं सार जस लीयो है॥ वे गरा ज्ञ पंडित वृन्दाग नगर मांहि जोतिग को पाठी
सरस्वती वर दीयो है॥ इतने सहाइ भए दोही जि नरा ज्ञ जू की तव मैं विचार करि भाषा वुद्धि
कियो है॥ट २॥ दोहा दयासमुद्र वृन्दादत्रिया॥ भयो दूसरो नाव॥ निरलोभी मन को सरल॥
दयाधरम भुभठांव॥ट ३॥ सो भी हम पैं रहभयो॥ दिन मैवारंवार॥ तवहम यह भाषा करी॥
लघुवुद्धि छारविकार॥ट ४॥ षटपद कवित्त॥ नगर धामपुर मांहि करी भाषा वुद्धिसारु
॥ धर्मपरी त्तामित्र ग्रर्थ विजन धरिवारु॥ नाक छु कीरति न कछु ग्रारत धनवंछन॥ य

॥१७५॥ थांसंकलिपंडितरचिपदपदरससंचन॥ पढैसुनैनपजैसुवृद्धिकृकल्याणशुभसुखध
रण॥ मनरसिमनोहरइमकहैसकलसंघमंगलकरण॥८५॥ इतिश्रीधर्मपरीक्षाभाषा
मनोहरदासकृतसंगानेरीषंडेलवालकृतसंपूर्ण॥ ग्रंथसंख्या ३३०० श्लोक॥

(ग) २४ श्री जैनसिद्धांत भवन

All Rights Reserved ©
Oriental Library, Ara

